आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 फरवरी, 2020
डाक प्रेषण तिथि 10 फरवरी, 2020

वर्ष : 78 अंक : 02
फाल्गुन, 2076 मूल्य : ₹ 10
पृष्ठ संख्या 100

डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2018-20
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2018-20
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

उपाध्याय मानचन्द्र स्मृति अङ्क

फरवरी, 2020

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

Website : www.jinwani.in

त्याग से पदार्थ छूटता है, वैराग्य में ममत्व टूटता है
और वीतरागता में आनन्द प्रस्फुटित होता है।

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :

Rajeev Nita Daga Foundation Houston

ISSN 2249 - 2011 हिन्दी-मासिक

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

卐 **संरक्षक**
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
प्लॉट नं. 2, नेहरुपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

卐 **संस्थापक**
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**
अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

卐 **प्रधान सम्पादक**
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

卐 **सह-सम्पादक**
नौरतनमल मेहता, जोधपुर
मनोज कुमार जैन, जयपुर

卐 **सम्पादकीय कार्यालय**
ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन : 0141-2705088
E-mail : editorjinvani@gmail.com

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2018-20
WPP Licence No. JaipurCity-WPP-04/2018-20
Posted at Jaipur RMS (PSO)

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

पंचिंदियकायमइगओ,
उक्कोसं जीवो उ संवसे।
सत्तट्ठभवग्गहणे,
समयं गोयम! मा पमायए।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 10.13

पञ्चेन्द्रिय भव में जा प्राणी,
उत्कृष्ट काल जीवन धर कर।
सात-आठ भव ग्रहण करे,
गौतम! प्रमाद क्षण का मत कर।।

फरवरी, 2020
वीर निर्वाण सम्वत्, 2546
फाल्गुन, 2076

वर्ष 78 अंक 2

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि "JINWANI" बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 **IFSC No. SBIN** 0031843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता **'जिनवाणी'**, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) फोन नं.0141-2575997, E-mail : sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	मानचन्द्रं गुरुं वन्दे	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
विचार-वारिधि-	मोह और अज्ञान	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	8
पुण्य-स्मरण-	पूज्य उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का परिचय	-संकलित	9
प्रवचन-	संघ विकास के तीन आधार : मोह सद्भावना और संगठन	-उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.	12
	उपाध्यायप्रवर की अमृत वाणी	-उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.	17
	उपाध्यायप्रवर के जीवन की झलकियाँ	-श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.	20
	टीचिंग और टचिंग में निपुण थे उपाध्यायप्रवर	-श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.	26
दीक्षा-शताब्दी-	आचार्य हस्ती में गुरु तत्त्व	-डॉ. मंजुला बम्ब	29
	सामायिक का स्वरूप	-श्री अरुण मेहता	33
संस्मरण-	प्रत्युपन्नमति, लघुता एवं सेवा की प्रतिमूर्ति थे उपाध्यायप्रवर	-श्री विमलचन्द डागा	37
	दया पालो! आनन्द है! शब्दों से मन को सुकून मिलता था	-श्री दिलीप कुमार जैन	39
	उत्कृष्ट संयम साधक श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर	-श्री मनीष मेहता	41
	उपाध्यायप्रवर : सेवा एवं साधना के पर्याय	-श्री नौरतनमल मेहता	42
तत्त्व चर्चा-	आओ मिलकर कर्मों को समझे (3)	-श्री धर्मचन्द जैन	44
जीवन-व्यवहार-	नैतिकता का आधार है संयम	-प्रो. सुमेरचन्द जैन	46
शोधालेख-	श्वेताम्बर और दिगम्बर परम्पराओं में अन्तर	-डॉ. सुदर्शनलाल जैन	50
गीत/कविता-	वो मान तो महान था	-श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	11
	अवसर है आज आया	-श्री गजेन्द्र चौपड़ा	28
	गुरु मान प्यारे हैं	-श्री धर्मचन्द जैन	32
	महिमा गुरु की अनन्त है	-वनिता कांकरिया	43
	भाषितुं नैव शक्यते	-उपाध्याय श्री रमेशमुनिजी शास्त्री	48
	श्रद्धाञ्जलि.... भावाञ्जलि....	-श्री नितेश नागोता	48
	अशुचि भावना	-श्रीमती अभिलाषा हीरावत	53
	हे मोक्षमार्ग के पथिक	-श्री धीरज डोसी	53
	मुश्किल मिलेगा वैसा मुनि पावन	-बहुश्रुत श्री जयमुनिजी	80
	नमन संयमी सन्त को	-महाश्रमण श्री जिनेन्द्रमुनि	80
विचार/चिन्तन-	आलोचना	-श्री रणवीरमल भण्डारी	40
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-श्री गौतमचन्द जैन	54
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	55
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	81
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	-विभिन्न लेखक	83

ISSN 2249-2011

सम्पादकीय

मानचन्द्रं गुरुं वन्दे

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

आत्मार्थी संयमी शान्तः, उपाध्यायपदस्थितः।
दीक्षाज्ञानवयोवृद्धः, संघे स्नेहप्रसारकः।।
श्रद्धास्पदः गुणिश्रेष्ठो, हीराचन्द्रसहायकः।
हस्तिशिष्यः मुनिर्मानो, नववर्षे दिवङ्गतः।।

❖

सेवाविनयसम्पन्नं, दृष्टिज्ञानक्रियानिधिम्।
मानचन्द्रमुपाध्यायं, वन्दे मुनिं दिवङ्गतम्।।
विवेकिनं दयावन्तं, सर्वभूतहिते रतम्।
निर्द्वन्द्वं निःस्पृहं साधुं, नौमि गुरुं हृदि स्थितम्।।
सन्तोषिणं क्षमावन्तं, मानमायाविवर्जितम्।
मानचन्द्रं गुरुं वन्दे, रत्नसंघप्रदीपकम्।।

02 जनवरी, 2020 पौष शुक्ला सप्तमी विक्रम सम्वत् 2076 को सायं 5.55 बजे रत्नसंघ के प्रथम उपाध्याय, अध्यात्मयोगी, युगमनीषी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के मुखारविन्द से जोधपुर में दीक्षित एवं अष्टम पट्टधर आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के शासन सहयोगी, शान्त-दान्त-गम्भीर, पण्डितरत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का चौविहार प्रत्याख्यान के साथ शक्तिनगर, जोधपुर में समाधिमरण हो गया।

विनय, सरलता, सेवा, साधना, विद्वत्ता एवं विवेकशीलता की प्रतिमूर्ति उपाध्यायप्रवर ने 84 वर्ष की वय में 56 वर्षों से अधिक संयमपर्याय का पालन एवं 28 वर्ष से अधिक उपाध्यायपद का निर्वहन करने के साथ देह त्याग किया। आप मितभाषी, सन्तोषी एवं प्रत्युत्पन्नमति के धनी साधक थे। आपने पूज्य गुरुदेव आचार्य हस्ती, श्रद्धेय पण्डित श्री लक्ष्मीचन्दजी म.सा. एवं लघु लक्ष्मीचन्दजी म.सा. की सन्निधि में रहकर साधुता के परिपालन में परिपक्वता प्राप्त की। निरतिचार संयम पालन में आप सदैव सजग रहे।

एक श्रमण साधु में जो 27 गुण होने चाहिए वे सभी उपाध्याय भगवन्त में थे। साथ ही आप उपाध्याय के 25 गुणों से भी सम्पन्न थे। 27 गुणों के अन्तर्गत पाँच महाव्रतों का पालन आपश्री पूर्ण निष्ठा से कर रहे थे। पाँचों इन्द्रियों के विजेता थे। क्रोध, मान, माया एवं लोभ इन चारों कषायों पर विजय प्राप्ति में संलग्न रहे। वे समता एवं शान्ति की प्रतिमूर्ति थे। भावों के सच्चे थे, करण से सच्चे थे तथा मन, वचन और काया के स्तर विसंवाद रहित थे। क्षमा के जीवन्त रूप थे तथा दूसरों के लिए भी क्षमाभाव के प्रेरणा स्रोत थे। उनके चित्त में विषयों से वैराग्य था। आहार में भी जो मिल जाता उसी में सन्तुष्ट रहते थे। मन में समाधि थी। वचनों में सिद्धि थी। काया में असमाधि होते हुए भी सदैव समाधि का अनुभव करते थे। वे ज्ञान-सम्पन्न थे, दर्शन-सम्पन्न थे और चारित्र में उनकी अगाध निष्ठा थी। उनका जीवन सहज साधनामय था। तेले आदि की तपस्या भी सहजता से सम्पन्न कर लेते थे। उनका मरण भी सहज हुआ। शरीर भारी होने एवं चलने में अशक्त होने के कारण अन्तिम छह चातुर्मास जोधपुर में किए। जोधपुर के विभिन्न उपनगरों में विराजकर सभी क्षेत्रों को लाभान्वित किया। उनकी सन्निधि में मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. का भरपूर सहयोग मिला। आगन्तुक श्रद्धालुओं, प्रवचन और गोचरी आदि के कार्यों में श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी के साथ मुनिश्री लोकचन्द्रजी (अब गृहस्थ साधक), श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी, श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा. आदि ने तत्परतापूर्वक उपाध्यायप्रवर की अहर्निश सेवा कर पुण्यार्जन किया है। सेवा वह तत्त्व है, जिसके माध्यम से आत्मा का विकास होता है, अहंकार गलता है, विनयभाव का विकास होता है, विनय से ज्ञान की प्राप्ति होती है एवं चारित्र उज्ज्वल बनता है।

जोधपुर के श्रावकों ने अपनी प्राचीन परम्परा का निर्वाह करते हुए उपाध्यायप्रवर पण्डितरत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. की सेवा-भक्ति का विशेष लाभ लिया है। उपाध्यायप्रवर ने जहाँ भी चातुर्मास किया वहाँ उनकी विशिष्ट छवि बनी। चाहे वह कंवलियास हो चाहे होलनांथा हो, चाहे गोटन हो या फिर सवाईमाधोपुर हो, कोसाणा हो या भीलवाड़ा हो, सर्वत्र श्रावक-श्राविकाओं के हृदय में उनके प्रति असीम आस्था का स्वरूप देखने को मिलता है। वे अल्प शब्दों में मुस्कान के साथ जो प्रेरणा एवं तप-त्याग कराते रहे उससे अनेक लोगों ने ऊर्जा का अनुभव किया। कइयों को उनकी मांगलिक सुनकर नीरोगता का अनुभव होता था। साधना के वे सिरमौर सन्त थे। गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. से उन्होंने संकेतों में शिक्षा ग्रहण की और इसी प्रकार वे संकेतों में अपने सन्देशों को दूसरों तक पहुँचाने में सक्षम रहे।

आप आगमों के मर्मज्ञ थे। कोई भी उनसे ज्ञान चर्चा करता तो वे उसे अल्प शब्दों में ही रहस्य समझा देते थे।

आपकी प्रवचन शैली अत्यन्त सहज, किन्तु हृदयस्पर्शी थी। विषय-वस्तु का प्रतिपादन शनैः शनै करते हुए वे उसका गहराई से विश्लेषण करने में निपुण थे। उनकी प्रेरणा करने की विधि बड़ी सहज थी, यथा- ''चातुर्मास का मंगलमय समय आत्म-जागृति का सन्देश लेकर सामने उपस्थित है। इस चातुर्मास में ऐसी साधना करें जिससे कि विकारों पर विजय प्राप्त की जा सके। व्याख्यान सुन लेना, शास्त्र सुन लेना, दोपहर में चौपाई सुन लेना, शाम को प्रतिक्रमण कर लेना तभी सार्थक है जब जीवन में बदलाव आए। जीवन जैसा पहले था वैसा ही आज है तो कहना चाहिए कि यह रीति-रिवाज के नाम पर की गई क्रिया है।'' वे थोड़े शब्दों में प्रेरित कर गए कि हमारी धार्मिक क्रियाएँ मात्र क्रियाएँ होकर न रह जाएँ, हमें उनसे जीवन में परिवर्तन का अनुभव होना चाहिए।

आपने बाबाजी श्री जयन्तीमुनिजी म.सा., बड़े लक्ष्मीचन्दजी म.सा. की सेवा का अप्रतिम लाभ लेकर सेवाभावी सन्त के रूप में ख्याति अर्जित की।

उपाध्यायप्रवर पण्डितरत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. में गुरु-भक्ति भी अनुपम थी। जब पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. का सन् 1991 में महाप्रयाण हुआ तो उसके पश्चात् उस वर्ष प्रत्येक शुक्ला अष्टमी को नवीन विचारों और प्रसंगों के साथ उनका गुणानुवाद करते रहे। बालकों और युवकों को भी स्नेह देने एवं उन्हें धर्म से जोड़ने में तत्पर रहते थे। स्वास्थ्य के समाचार पूछने पर सदैव फरमाते-'आनन्द है।' उपाध्यायप्रवर ने वस्तुतः प्रव्रज्या को सुख की शय्या बनाया। उन्हें शत-शत वन्दन-नमन।

आचार्य हस्ती दीक्षा शताब्दी का शुभारम्भ

अध्यात्मयोगी, युगमनीषी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. की दीक्षा-शताब्दी का शुभारम्भ माघ शुक्ला षष्ठी 26 जनवरी, 2020 से हो गया है। देश के विभिन्न स्थानों पर सामायिक, स्वाध्याय, उपवास, एकाशन, आयम्बिल तप आदि के साथ यह दिवस 'सामायिक दिवस' के रूप में मनाया गया। पूज्य आचार्यप्रवर हस्ती के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला गया।

जयपुर एवं जलगाँव में दीक्षाएँ

जयपुर के प्रतापनगर में मुमुक्षु दीपिकाजी मुणोत, भोपालगढ़-जोधपुर ने तथा जलगाँव में मुमुक्षु निमिषाजी लुणावत, नरसिंहपुरा (म.प्र.) ने 29 जनवरी, 2020 को जैन भागवती दीक्षा अंगीकार की है। दीक्षा के पूर्व इन मुमुक्षु बहनों का श्रद्धालु संघों द्वारा अपने-अपने नगरों में भावभीना अभिनन्दन किया गया। जोधपुर, मानसरोवर जयपुर, चेन्नई आदि विभिन्न ग्राम-नगरों में शोभा यात्राएँ अत्यन्त उत्साह के साथ आयोजित हुई।

ISSN 2249-2011

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द जैन

विरागं रूवेहिं गच्छेज्जा, महया खुड्डएहिं वा।

-आचारांगसूत्र (सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल), प्रथम श्रुतस्कन्ध, तृतीय अध्ययन, तृतीय उद्देशक, सूत्र 30

अर्थ-अतिमोहक या सामान्य रूपों में विरक्त रहे।

विवेचन-आचारांग का यह सूत्र साधक को सन्देश दे रहा है कि उसे बड़े या छोटे, महान् या क्षुद्र अथवा अधिक या अल्प सभी प्रकार के विषयों से वैराग्य करना चाहिये। इस सूत्र में जो 'रूवेहि' शब्द आया है वह रूपी पदार्थों का द्योतक है। रूपी पदार्थ वे हैं जिनमें रूप, रस, गन्ध और स्पर्श रहते हैं। इसके साथ ही शब्द भी यहाँ इन्द्रियों का विषय होने से एवं पुद्गल होने से रूपी ही है।

प्राय: साधक बड़े-बड़े रूपादि पदार्थों का त्याग कर देता है। किन्तु क्षुद्र पदार्थों के राग में उलझ जाता है। एक साधु भी संसार के विषयभोगों को एवं धन-सम्पदा को ठुकराने के पश्चात् छोटे से वस्त्र, पात्र, खाद्य पदार्थ, गीत-संगीत अथवा रूप लावण्य के प्रति आकर्षित हो जाता है। ऐसे साधकों को इस सूत्र के माध्यम से सावधान किया गया है।

आवश्यकता राग को जीतने की है। उसे कम या अधिक करने से उसका समापन नहीं होता। जब राग को त्याज्य समझा जाता है तभी उस पर विजय प्राप्त करना सम्भव है। यह समझ चेतना के स्तर पर व्याप्त होने की आवश्यकता है कि राग त्याज्य है। जिस दिन राग की त्याज्यता अन्त:करण से एवं चेतना के हर प्रदेश से अंगीकृत हो जायेगी उस दिन राग से विरक्त होने का प्रयत्न स्वत: ही तीव्रता ग्रहण कर लेगा। राग के साथ द्वेष जुड़ा हुआ है। अपने को अनिष्ट लगने वाली या अपने सुख में बाधक लगने वाली वस्तुओं एवं व्यक्तियों से द्वेष उत्पन्न होता है। यह द्वेष भी साधक को सन्मार्ग से च्युत कर देता है। भक्तों के प्रति राग एवं जो भक्ति नहीं करता उसके प्रति द्वेष की धारा बहती है तो सब कुछ छोड़कर भी राग-द्वेष की विजय साधना अधूरी रहती है।

राग-द्वेष के पोषक रति-अरति हैं। अनुकूल के प्रति रुचि का होना रति तथा प्रतिकूल के प्रति अरुचि का होना अरति है। जब भी कोई पाँच इन्द्रियों के विषय हमारे समक्ष होते हैं तो इन्द्रियों के द्वारा गृहीत होने पर या तो उनके प्रति रति होती है या फिर उनके प्रति अरति होती है। यह रति ही राग का रूप धारण कर लेती है तथा अरति द्वेष का रूप धारण कर लेती है।

वैराग्य का तात्पर्य विषयभोगों से दूर होना मात्र नहीं है या उनकी निन्दा करना मात्र नहीं है। अपितु उनसे सुख भोगने की अभिलाषा का पूर्णत: त्याग वैराग्य है। कई बार वैराग्य के नाम पर संसार से घृणा के बीज बो दिये जाते हैं। किन्तु संसार से घृणा वैराग्य नहीं है, यह दूषित एवं काल्पनिक वैराग्य है। विरक्त व्यक्ति को संसार के लोगों के प्रति अनुकम्पा का भाव तो होता है, किन्तु घृणा का भाव नहीं। संसार को स्वार्थी, माता-पिता को स्वार्थी मानने से वैराग्य नहीं द्वेष उत्पन्न होने का अवसर रहता है। संसार को बुरा मानना, संसार के प्रति वैराग्य नहीं है। विषयों के प्रति मन का न जाना इन्द्रिय पर नियन्त्रण हो जाना वैराग्य है। इसलिये आचारांग में कहा है कि यह मत सोचिये कि मैंने बड़े-बड़े विषयभोगों का त्याग कर दिया है। खूब धन-सम्पति को छोड़ दिया, माता-पिता एवं परिवारजनों का त्याग कर दिया है, बल्कि यह सोचिये कि मेरा अभी भी किन छोटे-छोटे विषयों के प्रति राग विद्यमान है। जरा-सा अनुकूल न होने पर मैं अपने साथियों से द्वेष करने लगता हूँ, मन के अनुकूल वस्तु न मिलने पर उसकी प्राप्ति के लिए बेचैन हो जाता हूँ, भक्तों के आदर न देने पर उन्हें बुरा समझने लगता हूँ, श्रद्धालुओं के प्रति भेद-भाव करता हूँ तो समझना चाहिये अभी मुझे वैराग्य नहीं हुआ है। विरक्त होने पर मान और अपमान का, लाभ और हानि का प्रभाव अंकित नहीं होता।

ISSN 2249-2011

विचार-वारिधि

मोह और अज्ञान

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

- श्रावक का कर्त्तव्य है कि वह साधु की संयम-साधना में सहायक बने। राग के वशीभूत होकर ऐसा कोई कार्य न करे या ऐसी कोई वस्तु देने का प्रयत्न न करे, जिससे साधु का संयम खतरे में पड़ता हो।
- पैर में चुभे काँटे और फोड़े में पैदा हुए मवाद के बाहर निकलने पर जैसे शान्ति प्राप्त होती है उसी प्रकार सच्चा साधक अपने दोष का आलोचन और प्रतिक्रमण करके ही शान्ति का अनुभव करता है। इसके विपरीत जो प्रायश्चित्त के भय से अथवा लोकापवाद के भय से अपने दुष्कृत को दबाने का प्रयत्न करता है, वह जिनागम का साधक नहीं विराधक है।
- मनुष्य अर्थनीति में जितना समय लगाता है, उसका आधा समय भी धर्मनीति में लगावे, तो उसका उद्धार हो सकता है।
- हम जिस वस्तु के लिए संघर्षरत होते हैं, न तो उसका स्थायित्व है और न वह अपनी ही है।
- धन, जन पर यदि तीव्र आसक्ति नहीं रहेगी, तो आर्त्त नहीं होगा।
- जहाँ अपध्यान रहेगा, वहाँ शुभध्यान नहीं होगा और जब शुभ भाव नहीं आयेंगे तो बुरे भाव बढ़ेंगे।
- स्वाध्याय को नित्य आवश्यक कर्म मान लिया जाए, तो सहज ही प्रमाद घट सकेगा। आवश्यकता है स्वाध्याय को दैनिक आवश्यक सूची में नियमित स्थान देने की।
- संसार में दु:ख के दो कारण हैं-मोह और अज्ञान। सामायिक मोह को घटाने और स्वाध्याय अज्ञान को दूर करने का अमोघ उपाय है।
- भोग सब रोगों का कारण है। शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध ये सुख के साधन नहीं हैं, वरन् दु:ख की सामग्रियाँ हैं। इन्हीं के द्वारा इन्द्रियाँ मनुष्य को दु:ख पहुँचाती हैं तथा मन को अशान्त बनाती हैं।
- यदि चारित्र की आराधना करेंगे तो पाप का भार, कर्म का भार घटेगा, क्षीण होगा। पाप का भार घटने से आत्मा हल्की होगी।
- सद्गुरु मन, वाणी और कर्म से एक समान होते हैं।
- संसार में साधन-सम्पन्न एवं धनी-मानी युवक धर्म-मार्ग की ओर अग्रसर होकर दूसरों को इस ओर लाने का प्रयत्न करें तो उसका विशेष प्रभाव होता है।
- जिस समाज को अपने इतिहास का ज्ञान नहीं, वह कभी भी सही दिशा में आगे नहीं बढ़ सकता। वर्तमान को समुन्नत और भविष्य को उज्ज्वल एवं कल्याणकारी बनाने के लिए अतीत का ज्ञान और उसकी प्रेरणा आवश्यक है।
- जो लोग अज्ञानता या वासना की दासता से अपना लक्ष्य स्थिर नहीं कर पाते, साधना करके भी वे शान्ति प्राप्त नहीं करते। जिनका लक्ष्य स्थिर हो गया है वे धीरे-धीरे चलकर भी मञ्जिल तक पहुँच जाते हैं।
- अनुभूति प्राप्त ज्ञानियों ने कहा है कि मानव! तेरा अमूल्य जीवन भोग के लिए नहीं है। तुझे करणी करना है, ऐसी करणी कि तेरे अनन्तकाल के बन्धन कट जाएँ। तेरा चरम और परम लक्ष्य मुक्ति है, इसको मत भूल।
- मनुष्य-जीवन पूर्ण अभ्युदय का आधार है, उसे व्यर्थ में गँवाना बुद्धिमानी का कार्य नहीं।

-अमृत-वाक् से साभार

ISSN 2249-2011

पुण्य-स्मरण

पूज्य उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का परिचय

पौष शुक्ला सप्तमी, विक्रम सम्वत् 2076 दिनांक 2 जनवरी, 2020 को जोधपुर में शक्तिनगर स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में चौविहार प्रत्याख्यान के साथ दिवङ्गत पूज्य उपाध्यायप्रवर का संक्षिप्त-परिचय।

-सम्पादक

जन्म : माघ कृष्णा 4 विक्रम सम्वत् 1991 दिनांक 23 जनवरी, 1935

जन्म स्थान : सूर्यनगरी जोधपुर (राज.)

पिता : वीर पिता श्री अचलचन्दजी नागसेठिया (मूल निवासी-भावी)

माता : वीर माता श्रीमती छोटीबाईजी नागसेठिया

भ्राता : आपश्री सहित 7 भाई

बहिनें : तीन

शिक्षा अध्ययन : सरदार स्कूल में

अध्यापन : श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़ में

वैराग्य का कारण : विक्रम सम्वत् 2010 में छह महारथियों का सिंहपोल जोधपुर में संयुक्त चातुर्मास (1) आचार्यश्री आनन्दऋषिजी म.सा. (2) उपाचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा. (3) आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. (4) बहुश्रुत पण्डित रत्न श्री समर्थमलजी म.सा. (5) उपाध्याय कविरत्न श्री अमरमुनिजी म.सा. (6) व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलालजी म.सा. आदि महापुरुषों की सेवा में रहकर प्रतिक्रमण इस चौमासे में सीखा एवं दृढ़ वैरागी बने।

अध्ययन तथा वैराग्य काल : व्रिकम सम्वत् 2017 से 2019 तक आचार्य श्री हस्ती के चरणों में रहकर निरन्तर अध्ययन किया। विक्रम सम्वत् 2010 में आपने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार किया।

दीक्षा की आज्ञा : विक्रम सम्वत् 2019 के आचार्य श्री हस्ती के सैलाना (मध्यप्रदेश) के चातुर्मास में वरिष्ठ सुश्रावक श्री प्यारचन्दजी रांका के समक्ष। श्री अचलचन्दजी सेठिया सैलाना आए और लिखित में आज्ञा पत्र दिया।
आपके बड़े भ्राता श्री भोपालचन्दजी सेठिया ने शर्त रखी कि दीक्षा जोधपुर में हो तो ही आज्ञा। आचार्य श्री हस्ती मुस्कुराए और कहा कि यहाँ भी तुमने मुंशीगिरी बता दी भोपाल।

दीक्षा : शुभ मिति वैशाख सुदी 13 विक्रम सम्वत् 2020 दिनांक 06 मई, 1963 को जोधपुर के सरदार स्कूल में; मगनमुनिजी की भी दीक्षा साथ। सुपुत्र-श्री

सोहनलालजी मोहनोत एवं भ्राता श्री पुखराजजी मोहनोत उद्‌भट विद्वान्। दीक्षा समारोह के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री इन्दरनाथजी मोदी और तत्कालीन संघमन्त्री श्री माधोमलजी लोढ़ा थे।

बड़ी दीक्षा : मूथाजी के मन्दिर नागौरी गेट जोधपुर में (1) श्री मगनमुनिजी को पूज्य श्री भोजराजजी म.सा. की निश्रा में (2) श्री मानमुनिजी को बड़े लक्ष्मीचन्दजी म.सा. की निश्रा में रखा गया।

उपाध्याय पद : दिनांक 22 अप्रैल, 1991 वैशाख सुदी 9 को निमाज में आचार्य श्री हस्ती के पत्र द्वारा घोषित।

28 वर्ष की वय में दीक्षा के 28 वर्ष बाद उपाध्याय पद एवं उपाध्याय पद के 28-29 वर्ष बाद जोधपुर में दिनांक 02 जनवरी, 2020 को देवलोकगमन।

विशेषताएँ : चौथे आरे की बानगी, निरन्तर छह चातुर्मास जोधपुर में बड़े श्री लक्ष्मीचन्दजी म.सा. और बाबाजी श्री जयन्तीलालजी म.सा. की सेवा में। स्वभाव-हलुकर्मी, बुलन्द ओजस्वी आवाज, प्रखर प्रवचनकार, सरलमना, गजब की पुण्यवानी, सेवा भावी सन्त रत्न आपने सन्तों की खूब सेवा की। आचार्य श्री हस्ती की दो भुजाएँ (स्वयं आचार्य श्री हस्ती कहते थे)- आचार्य श्री हीराचन्द्रजी और उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म.सा.।

उपाध्यायप्रवर के चातुर्मास

क्र.सं.	वि.सम्वत्	सन्	चातुर्मास स्थल	क्र.सं.	वि.सम्वत्	सन्	चातुर्मास स्थल
1.	2020	1963	पीपाड़	2.	2021	1964	मेड़ता
3.	2022	1965	कोसाना	4.	2023	1966	अहमदाबाद
5.	2024	1967	जयपुर	6.	2025	1968	भोपालगढ़
7.	2026	1969	जोधपुर	8.	2027	1970	थाँवला
9.	2028	1971	जोधपुर	10.	2029	1972	पाली
11.	2030	1973	जयपुर	12.	2031	1974	बिजयनगर
13.	2032	1975	हरसोलाव	14.	2033	1976	गोटन
15.	2034	1977	जोधपुर	16.	2035	1978	जोधपुर
17.	2036	1979	जोधपुर	18.	2037	1980	जोधपुर
19.	2038	1981	जोधपुर	20.	2039	1982	जोधपुर
21.	2040	1983	जयपुर	22.	2041	1984	अहमदाबाद
23.	2042	1985	पाली	24.	2043	1986	बिजयनगर
25.	2044	1987	जयपुर	26.	2045	1988	दिल्ली
27.	2046	1989	ब्यावर	28.	2047	1990	पाली

29.	2048	1991	जोधपुर	30.	2049	1992	भीलवाड़ा
31.	2050	1993	कोटा	32.	2051	1994	कंवलियास
33.	2052	1995	पाली	34.	2053	1996	कोसाना
35.	2054	1997	जयपुर	36.	2055	1998	मदनगंज-किशनगढ़
37.	2056	1999	सवाईमाधोपुर	38.	2057	2000	जलगाँव
39.	2058	2001	धुलिया	40.	2059	2002	होलनांथा
41.	2060	2003	जोधपुर	42.	2061	2004	जयपुर
43.	2062	2005	बालोतरा	44.	2063	2006	पीपाड़ शहर
45.	2064	2007	भोपालगढ़	46.	2065	2008	गढ़ सिवाना
47.	2066	2009	ब्यावर	48.	2067	2010	गोटन
49.	2068	2011	नागौर	50.	2069	2012	मेड़तासिटी
51.	2070	2013	कोसाना	52.	2071	2014	शक्तिनगर, जोधपुर
53.	2072	2015	नेहरू पार्क, जोधपुर	54.	2073	2016	दिग्विजय नगर, जोधपुर
55.	2074	2017	महामन्दिर, जोधपुर	56.	2075	2018	शक्तिनगर, जोधपुर
57.	2076	2019	शक्तिनगर, जोधपुर				

विक्रम सम्वत् 2020 के (सन् 1963) प्रथम चातुर्मास में आचार्य श्री हस्ती के साथ पीपाड़ में रहे। आपने विक्रम सम्वत् 2023 (सन् 1966) का चातुर्मास अहमदाबाद में, विक्रम सम्वत् 2024 (सन् 1967) का चातुर्मास जयपुर में, विक्रम सम्वत् 2028 (सन् 1971) का चातुर्मास जोधपुर में, विक्रम सम्वत् 2030 (सन् 1973) का चातुर्मास जयपुर में, विक्रम सम्वत् 2040 (सन् 1983) का चातुर्मास जयपुर में, विक्रम सम्वत् 2047 (सन् 1990) का चातुर्मास पाली में उपर्युक्त सभी चातुर्मास आचार्य श्री हस्ती के सान्निध्य में किए।

विक्रम सम्वत् 2048 का जोधपुर में, विक्रम सम्वत् 2055 का मदनगंज-किशनगढ़ में, विक्रम सम्वत् 2057 का जलगाँव में तथा विक्रम सम्वत् 2058 का धुलिया में आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के साथ संयुक्त रूप से हुआ।

वो मान तो महान था

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

महावीर के मानसरोवर में मिला
मनस्वी राजहंस अब उड़ चला...
महाविदेह की यात्रा पर विदेह बन
महानता का जो सम्मान था,वह मान तो महान था
महाशिष्य था महानतम हस्ती का
मनभावन महामहिम हीरा का....
महाहिमवान सा संयम में अविचल
मनमन्दिर का स्वाभिमान था,
वह मान तो महान था
महाव्रतों की मिसाल उज्ज्वल
महामुनि उपाध्याय सरल....
मर्यादापुरुषोत्तम महासागर सा
महातीर्थ की पहचान था, वह मान तो महान था

-"JINSHASAN", B-102, Veetrag City, Jaisalmer bypass Road, Jodhpur-342008

ISSN 2249-2011

प्रवचन

संघ विकास के तीन आधार : स्नेह, सद्भावना और संगठन

श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के सुशिष्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के शासन सहयोगी उपाध्यायप्रवर पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. ने संघ विकास पर 13 सितम्बर, 2003 को घोड़ों का चौक, जोधपुर में प्रवचन फरमाया था, जिसका का संकलन यहाँ सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित पुस्तक 'मान व्याख्यान माला' से किया गया है। आशा है यह प्रवचन उपाध्यायप्रवर के द्वारा प्रदत्त संघ-ऐक्य के सन्देश से उनकी पावन-स्मृति को सजीव रखेगा।

-सम्पादक

धर्म जिज्ञासु बन्धुओं!

प्रभु महावीर स्वामी का शासन सदा जयवन्त है। प्रभु महावीर तीस वर्ष तक गृहस्थाश्रम में रहे, फिर संयम अंगीकार किया। बारह वर्ष और तेरह पक्ष तक छद्मस्थ अवस्था में अनेक उपसर्ग और परीषह सहन करते हुए साधना के मार्ग में बढ़ते रहे। धीरे-धीरे साधना करते हुए प्रभु ने घाती कर्मों का क्षयकर केवलज्ञान-केवलदर्शन प्राप्त किया। तीर्थङ्कर नाम कर्म के कारण से चतुर्विध संघ की स्थापना की। आज वही संघ अक्षुण्ण रूप से निरन्तर चला आ रहा है।

संघ की बहुत बड़ी महिमा है। नन्दीसूत्र में संघ को आठ उपमाओं से उपमित कर वन्दन किया गया है। साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं का मिला-जुला संघ गुणों के कारण वन्दनीय है। गुण ही वन्दन के योग्य होता है।

नगर-रह चक्क-पउमे, चंदे सूरे समुद्द-मेरुम्मि
जो उवमिज्जइ सययं तं संघं गुणायरं वंदे।।

संघ को नगर की उपमा दी, रथ की, पद्म की, चन्द्र की, सूर्य की उपमा दी। इस संघ को समुद्र और मेरु की उपमा से उपमित किया। किस तरह से यह संघ निरन्तर शासन-सेवा में अपने आपको अग्रसर करता हुआ महावीर प्रभु के शासन की जाहोजलाली कर रहा है। संघ का एक अंश रत्नसंघ है। रत्नसंघ के साथ रत्न जुड़ा है। रत्न की बड़ी महिमा है। हाथियों में जो श्रेष्ठ होता है उसको हस्तीरत्न या गजरत्न कहते हैं। घोड़ों में श्रेष्ठ होता है उसे अश्वरत्न कहते हैं। चक्रवर्ती के चौदह रत्नों की बात आपने सुन रखी है। जिस जाति की वस्तु श्रेष्ठ होती है वह रत्न की उपमा से उपमित होती है।

यह रत्नसंघ लम्बे समय से अपने आचार के कारण से, ज्ञान के कारण से, चारित्र के कारण से, तप के कारण से, वीर्य, पराक्रम एवं पुरुषार्थ के कारण से प्रसिद्ध रहा है। अभी मुनिश्री (श्री गौतममुनिजी म.सा.) ने आचार की बात कही। पाँच प्रकार का आचार होता है- ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार। आचार का अर्थ है आचरण करना।जीवन के अन्दर आचरण किया जाय उसको आचार कहते हैं। ज्ञान का आचरण किया जाय वह ज्ञानाचार, दर्शन का आचरण किया जाय वह दर्शनाचार। संयम और चारित्र में पुरुषार्थ किया जाय वह चारित्राचार। तप में पुरुषार्थ तपाचार और इन सबमें पुरुषार्थ लगाना है वीर्याचार।

आचार की प्रधानता वाला रत्नसंघ अपनी परम्परा का पालन करते हुए आज भी अपनी विशेषता लेकर चल रहा है। यह संघ भले ही छोटे रूप में रहा, लम्बा-चौड़ा क्षेत्र नहीं, सन्तों की संख्या भी कई परम्पराओं से न्यून है, सतियों की संख्या भी उतनी नहीं, फिर भी यह संघ अपने गौरव को लेकर स्वत: प्रसिद्ध है। जहाँ भी आचार्य भगवन्त के सन्त पहुँच जाते हैं लोग सेवा करने में अपना गौरव समझते हैं। लोग यही समझते हैं कि ये आचार्य भगवन्त के सन्त-सती हैं।

आचार्य भगवन्त ने 2015 में दिल्ली चातुर्मास किया, तीस वर्ष बाद 2045 में चातुर्मास का हमें मौका मिला, फिर भी आचार्य भगवन्त की इतनी बड़ी छाप कि हमारे चातुमार्स को लेकर सबके मन में बड़ा प्रमोदभाव था। सन्तों के आचार-विचार देखकर दिल्लीवासियों की जिज्ञासा जगी कि जब ये सन्त ऐसे हैं तो इनके गुरुदेव कैसे होंगे? वे बसें लेकर सवाईमाधोपुर पहुँचे। गुरुदेव के दर्शन किए, वाणी सुनी और धन्य-धन्य हो गये। वापस आकर कहने लगे-हम तो भगवान के दर्शन करके आये हैं। हमने अरिहन्तों को नहीं देखा, गणधरों को नहीं देखा, पूर्वधरों को नहीं देखा। हमने आचार्य श्री हस्ती को देखा। आचार्य भगवन्त ने अपने सन्त-सतियों को एक ही शिक्षा दी-'ज्ञान, दर्शन और चारित्र में आगे बढ़ो।' आज भी वह संघ अपने आचार की सुगन्ध के साथ बराबर आगे से आगे बढ़ता चल रहा है।

रत्नसंघ का अधिवेशन है। अधिवेशन का अर्थ समझते हैं न आप? 'अधि' उपसर्ग है, 'विश्' धातु प्रवेश करने के अर्थ में है। अत: अधिवेशन का अर्थ हुआ-संघ के अन्दर प्रवेश करना। संघ के अन्दर प्रवेश करना भी सौभाग्य का विषय है। आप संघ के अधिवेशन के प्रसंग से उपस्थित हुए हैं तो आपको विचार करना है कि रत्नसंघ आचार-विचार को लेकर आगे बढ़ता जाय। आप निरन्तर भगवन्तों के बतलाये मार्ग पर चलकर संघ की महिमा-गरिमा दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ायें। आप अधिवेशन का मतलब समझें। अधिवेशन संघ को सम्भालने की पूर्ति करता है। चलते-चलते कभी कार को भी सम्भालना पड़ता है। मकान को भी सम्भालना पड़ता है। जहाँ कहीं भी मकान में टूट-फूट हो रही है तो उसकी मरम्मत की आवश्यकता होती है। आप मकान को सम्भालते हैं, इसी तरह समय-समय पर अधिवेशन भी संघ को सम्भालने का काम करता है।

संघ में श्रावक निरन्तर योगदान देते आ रहे हैं, फिर भी संघ को आगे बढ़ाने में समय-समय पर जागृति की आवश्यकता है। आपके अधिवेशन होते हैं, सम्मेलन होते हैं, उससे संघ में आई हुई शिथिलता दूर करनी होती है। शिथिलता बढ़ाने के लिए अधिवेशन की जरूरत नहीं होती। अधिवेशन तो ज्ञान, दर्शन, चारित्र की वृद्धि के लिए होता है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र में यदि शिथिलता आ गई तो उसको दूर करके जागरूकता उत्पन्न करने के लक्ष्य से सम्मेलन होता है।

किसी धर्म, सम्प्रदाय, समाज, राष्ट्र को चिरकाल तक अवस्थित रखना है तो उसके लिए मार्ग है स्नेह, सद्भावना और संगठन। परस्पर गुरुभ्राताओं में स्नेह बढ़े, वात्सल्य-भावना बढ़े। सम्मेलन का उपयोग जोड़ने में हो। आपका कोई भी गुरुभ्राता, चाहे वह देश में रहता हो या विदेश में, उसके प्रति वात्सल्य भाव हो।

अन्ने देसे जाया अन्ने देसे वड्ढिया।
जे जिणधम्मे, अनुरत्ता, ते सव्वे बांधवा भणिया।।

कोई अन्य देश में जन्मा हो, अन्य देश में बड़ा हुआ हो, परन्तु जो धर्म में अनुरक्त है वह भाई है। जो भी एक देव-गुरु को मानने वाला है वह हमारा भाई है और उसके प्रति वात्सल्य भावना रखना समकित के अन्दर शुमार है। समकित के आठ अंग बताये हैं-

णिस्संकिय-णिक्कंसिख-णिव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठि य।
उवगूह थिरीकरणे, वच्छल्ल पभावणे अट्ठ।।

जिनेन्द्र के वचनों में शंकारहित, पर-दर्शन की आकांक्षा से रहित, धर्म के फल में सन्देह रहित, अमूढ़ दृष्टि, गुणियों का गुण-वर्णन, समकित से गिरने वाले को स्थिर करना, सहधर्मी के प्रति वात्सल्य भावना तथा धर्म की प्रभावना ये समकित के आठ अंग हैं।

इनमें वात्सल्य-भावना का बड़ा महत्त्व है। पुराने समय में स्वामिवात्सल्य होते। उस समय की बात अलग थी, आज अलग है। स्वामिवात्सल्य का मतलब है एक स्वामी को मानने वालों के प्रति वात्सल्य-भावना रखना, उनके दु:ख-दर्द मिटाने की तरफ ध्यान देना। पहले एक-दूसरा एक-दूसरे को देखकर सहयोग की

भावना करता। आज तो खाने-पीने की बात रह गई है। आज लोगों का जीवन संकुचित हो रहा है। अपने भाइयों के प्रति जैसी भावना रहनी चाहिये वह नहीं है। आज तो मैं, मेरी बीबी और मेरा बच्चा बस इसकी ही चिन्ता है, दूसरों की नहीं। जहाँ स्वधर्मी भाइयों के प्रति वात्सल्य भावना रहनी चाहिये, एक-दूसरे के दुःख-दर्द में सहयोग होना चाहिये वह बात कम ही देखने में आ रही है। आज तो परिवारजनों के लिए भी वैसी भावना नहीं रही। होना तो यह चाहिये कि जो भी हमारे स्वधर्मी भाई हैं, एक देव-गुरु को मानने वाले हैं उन सबके प्रति सद्भावना हो।

एक गाय का बछड़े के प्रति भी प्रेम होता है। गाय जंगल से चर कर आती है तो सबसे पहले बछड़े के पास आती है। बछड़ा अन्दर है, गाय बाहर है तो आवाज लगाकर मिलने का प्रयास करती है। जैसे गाय का बछड़े के साथ वात्सल्य है वैसी ही भावना अपने गुरुभ्राताओं के साथ रहनी चाहिये। गाय का बछड़े के प्रति स्नेह सम्बन्ध होता है वैसे ही स्वधर्मी भाइयों के साथ स्नेह का सम्बन्ध रहना चाहिये।

दूसरी बात है-सद्भावना। सबके प्रति सद्भावना हो। धर्म की दृष्टि से गुरुभ्राताओं में सद्भावना बढ़े। कोई तरक्की कर रहा है, ऊँचे पद पर पहुँचा है तो यह सोचे कि वह संघ के लिए कभी काम आयेगा। उसके प्रति स्नेहभाव हो, ईर्ष्या का भाव नहीं। आज प्रमोद के भावों की जरूरत है। 'गुणिषु प्रमोदं', की अगर सद्भावना होगी तो सामने वाले की चाहे जितनी दुर्भावना है, आपकी सद्भावना देखकर वह बदलेगा ही। यही भावना आगे जाकर संगठन के रूप में बनती है।

संगठन एक भावना-एक विचार वालों का होता है। जहाँ एकता होती है उसी की कीमत है। बिन्दियाँ चाहे कितनी ही क्यों न हो, एका नहीं तो उसकी कोई कीमत नहीं और एका है तो बिन्दियों की कीमत है। स्वधर्मी भाइयों का संगठन बढ़े। मिलकर के जो काम होता है वह एक से नहीं हो सकता। एक-एक तिनका अलग-अलग है तो उसका महत्त्व नहीं है। तिनके जब तक अलग-अलग हैं तो उन्हें कोई भी तोड़ सकता है। वे ही तिनके संगठित हो जायें तो उन्हें तोड़ा नहीं जा सकता। एक धागा सहज टूट सकता है, पर धागों से बना रस्सा नहीं टूटता। हाथी की भी ताकत नहीं जो रस्से को आसानी से तोड़ सके। आप संगठित हैं तो कोई भी आपका बिगाड़ नहीं कर सकता।

आज संगठन की आवश्यकता है, विघटन की नहीं। आज कट्टरता की नहीं, दृढ़ता की जरूरत है। ऐसा नहीं कि गंगा गये गंगादास, यमुना गये यमुनादास। पानी तेरा रंग कैसा? जिसमें मिलाये वैसा। आपका आज दिन तक संगठन चला आ रहा है। एक आचार्य की नेश्राय में रत्नसंघ परम्परा चलती आ रही है। कोई निकल भी गया तो वह पनप नहीं पाया। यह परम्परा एक आचार्य की नेश्राय में निर्विघ्न चलती रही है, आगे भी चलती रहेगी। यह इस परम्परा की विशेषता रही है।

यह परम्परा दूसरी कई परम्पराओं से श्रेष्ठ है। आचार्य भगवन्त आचार के लिए बराबर कहा करते थे। आज भी आचार्य श्री (श्री हीराचन्द्रजी म.सा.) आचार के पूरे पक्षपाती हैं, ढिलाई की ओर कभी कदम नहीं रखा। कभी किसी ने उपचार के कारण से वाहन की छूट लेनी भी चाही तो आचार्य श्री ने कह दिया इतनी छोटी-छोटी बातों के लिए वाहन की बात न करें। आप विहार नहीं कर सकते तो वहीं विराजे, साता हो तब विहार करें। आचार्य श्री ढिलाई के पक्षधर नहीं हैं। आज भी मैं देख रहा हूँ आचार-पक्ष में कुछ चरण बढ़े हैं, पीछे हटने का काम नहीं है। आप भी आचार का पालन करते हुए संघ को और गौरवान्वित करें।

हाँ, छद्मस्थ होने के नाते कुछ कमियाँ रह सकती हैं। आज श्रावक संघ में भी कुछ कमी महसूस होती है। श्रावक संघ इन कमियों को बाहर उजागर नहीं करते हुए कमियों को मिटाकर संगठन को दृढ़ता प्रदान करें। ऐसा नहीं कि जिसको जिम्मेदारी दे दी वही सब करे। आचार्य भगवन्त चतुर्विध संघ की गाड़ी अकेले खींच गये।

ग्रीनपार्क, पाली में आचार्य भगवन्त का जन्म-दिवस मनाया जा रहा था, उस दिन भगवन्त ने कहा कि इस चतुर्विध संघ के रथ को मैं अकेला हाँकता रहा, अब चतुर्विध संघ से अपेक्षा है कि वह हिलमिल कर कंधे से कन्धा मिलाकर चतुर्विध संघ के रथ को बराबर चलाता रहे। भगवन्त स्वास्थ्य के कारण से सबको यह बात सुना नहीं सके, इसीलिए मैंने भगवन्त के शब्द उस समय सुनाये। चतुर्विध संघ आज पूर्णतया श्रद्धापूर्वक समर्पित है।

यह समर्पण रहना चाहिये। इस समर्पण की बहुत बड़ी जरूरत है। नेता सब नहीं बनते। नेता एक होता है, सहयोगी बहुत होते हैं। नेता अकेला कुछ कर भी नहीं सकता। किसी पदाधिकारी को कहा जाय कि वह भी थोड़ा समय निकाले। अपने आपको निवृत्त करके संघ के लिए समय का भोग देते हुए संघ को आगे बढ़ाने का प्रयत्न करे, किन्तु अकेला पदाधिकारी भी कुछ नहीं कर सकता, उसको भी सहयोगियों के सहयोग की आवश्यकता होती है। किन्तु सेवा के लिए समय निकाले तो पद को सफलता के साथ सम्भाला जा सकता है। तभी पद की शोभा भी है।

सेवा से सामने वाले का हृदय जीता जाता है। अगर पदाधिकारी कर्त्तव्य का पालन करते रहें तो सहयोगी भी उन्हें बराबर सहयोग देंगे। संघ का काम सबका है, केवल मंत्री जी सम्भाल लें यह नहीं हो सकता। यहाँ जो भी है उसकी भी वैसी ही ड्यूटी है। सभी मिलकर समस्या का समाधान निकाल सकते हैं, इसलिये सबको मिलने की जरूरत है। घर के अन्दर माताजी नहीं हो और दूसरा भी कोई परोसने वाला नहीं हो तो हाथ से लेकर खाते हैं या नहीं? मेहमान आ जाय तो? घर का हर सदस्य अपने-आपको एक इकाई समझकर बराबर योगदान दे तभी वह घर, घर बना रहता है। इसी तरह से संघ का प्रत्येक सदस्य संघ-सेवा में सहयोग करे तो ही संघ आगे बढ़ सकता है।

आज संगठन की बहुत बड़ी आवश्यकता है। अपने संघ को किस तरह से संचालित किया जाय, यह बात सबके सोचने की है। पुराने श्रावक चले गये। हम उनके गुणगान करते हैं। गुणगान करने के पीछे भी यही लक्ष्य है कि उनसे कुछ प्रेरणा ली जाए। आपके स्वाभिमान को जगाने के लिए पूर्वजों की बात कही जाती है। जो श्रावक चले गये वे वापस आकर सेवा करने से रहे। अब तो जो हैं उन्हीं को सेवा करनी है। आप उनके आदर्शों को याद करके सहारा लें, पर सेवा में कभी कोताही न करें। आप अपने पूर्वजों के नाम पर कब तक दुकानदारी चलाते रहेंगे? आखिर आपको संघ के प्रति सद्भावना रखते हुए समर्पण दृढ़ करना होगा।

आज के युग में जब अन्य-अन्य परम्पराएँ, सम्प्रदायें अपने-अपने व्यवहार को लेकर चल रही हैं ऐसे समय में आप दृढ़ता के साथ चरण नहीं बढ़ायेंगे तो अस्तित्व की रक्षा खतरे में पड़ सकती है। दूसरी-दूसरी सम्प्रदायें आज यहाँ तक उतर आई हैं कि हमारे क्षेत्र में प्रवेश न करें। ऐसी स्थिति में हमें सोचने की आवश्यकता है। आचार्य भगवन्त एक ऐसे ज्योतिर्धर प्रकाशपुंज सूर्य थे, जिनका सर्वत्र प्रकाश था। वे जहाँ भी जाते अपने प्रभाव के कारण सब लोग उनके हो जाते, पर आज वह भावना धीरे-धीरे कम होती जा रही है। भावना के अन्दर तेजी के साथ बदलाव आ रहा है। आचार्य भगवन्त के प्रति तो सबकी भावना थी, अगर कहीं भावना नहीं भी थी तो उनका पुण्य प्रताप इतना जबरदस्त था कि सब झुक जाते थे। हमें किसी के प्रति असद्भावना नहीं दिखानी है, पर अपने आपको दृढ़ रखना तो जरूरी है।

एक समय था पूज्यपाद आचार्य श्री शोभाचन्द जी महाराज, आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज की दीक्षा के बाद बीकानेर की तरफ पधारे। वहाँ गये तो वहाँ पर कट्टरता का रूप नज़र आया। उस समय युगप्रधान आचार्य श्री जवाहरलाल जी महाराज जो सातारा विराज रहे थे, के कानों में क्षेत्र की कट्टरता की बात पहुँची तो उन्होंने श्रावकों को संकेत कराया-मैं हूँ वैसे ही आचार्य श्री शोभाचन्द जी महाराज हैं, तुम उनकी सेवा-भक्ति

करो। थली में पानी गहरा होता है। पानी निकालते तो देर लगती है, पर निकालते हैं तो सीर चालू रहती है। पूज्य श्री शोभाचन्द जी महाराज 29 दिन तक वहाँ विराजे, श्रावकों ने भक्ति के साथ सेवा की। इस तरह पारस्परिक सद्भाव फलदायी होता है।

वर्तमान समय में संगठन के साथ दृढ़ता की जरूरत है, कट्टरता की नहीं। आचार्य भगवन्त कट्टरता को पसन्द नहीं करते। कट्टरता काटने का काम करती है, दृढ़ता जमाने का। कट्टरता में विवेक नहीं होता, दृढ़ता में विवेक होता है। दृढ़ता होनी चाहिये। हम कभी नहीं कहते उनको मत मानो या उनको आहार-पानी मत दो। हम तो यही कहते हैं कि आपको विवेक युक्त दृढ़ता रखनी चाहिये। संगठन के बिना काम नहीं चलता।

स्नेह, सद्भावना और संगठन ये तीन चीजें जहाँ होती हैं वह संघ चिरकाल तक अपना अस्तित्व लेकर सुचारू रूप से चलता है। यह संघ भी इसी भावना को लेकर आगे बढ़े। हमारा किसी के प्रति द्वेषभाव नहीं हो, सबके प्रति सद्भावना हो। सद्भावना होगी तो अगले की दुर्भावना भी सद्भावना में बदलेगी ही। आचार्य भगवन्त की उदारता थी इस कारण दूसरे सन्तों को रत्नसंघ के बाहुल्य वाले क्षेत्र में चातुर्मास का मौका देते। वर्षों तक भोपालगढ़ में ज्ञानगच्छ की सतियाँ रहीं, चातुर्मास किए। आचार्य भगवन्त भोलावन देते रहे कि आप इनकी अच्छी तरह सेवा करना। आचार्य भगवन्त तो अन्यान्य परम्पराओं के सन्तों को रत्नसंघीय क्षेत्र में चातुर्मास का संकेत करते रहते। यहाँ भी सन्त-कोठारी भवन में चातुर्मास के लिए आये थे। आचार्य भगवन्त ने उनसे कहा कि आप पावटा क्षेत्र भी खुला रखना। पावटा वालों ने जो सेवा की, सन्त आज भी उस सेवा को याद करते हैं।

आचार्य भगवन्त में उदारता थी तो श्रावकों में भी उदारता का भाव रहा है। 'गुरु एक : सेवा अनेक' आप इस बात को लेकर कभी इसका गलत उपयोग नहीं करें। 'गुरु एक सेवा अनेक' उसमें चाहिये विवेक। किनके साथ किस तरह का व्यवहार करना यह विवेक जागृत होता है तो संघ-संगठन ही नहीं सन्त-सती भी निर्दोष आचरण कर सकते हैं।

एक श्रावक की जागरूकता सन्त-सतियों के लिए चेतावनी होती है। आप जागरूक रहकर संघ को मजबूत करते रहेंगे तो आपका आचार्य के प्रति, सन्तों के प्रति, सतियों के प्रति श्रद्धा-समर्पण बना रहेगा। आपको जहाँ भी गलत लगे तो श्रावक चेताये। वह 'अम्मापियरो' का दायित्व निर्वहन करे। भगवान ने चतुर्विध संघ की स्थापना में आपको अधिकार दिया। अगर छद्मस्थता में मन की कचावट के कारण कोई शिथिलता की ओर जाता है तो आप श्रावकों का कर्त्तव्य है-हाथ जोड़ कर निवेदन कर सकते हैं। आप पूरा ध्यान रखें। आपकी सन्त-सतियों के प्रति सद्भावना है तो आप निवेदन करें, न कि दुर्भावना से बाजार भाव ढोल पीटें। शिथिलता का पोषण न हो, साथ ही किसी को हल्का बताने की भी जरूरत नहीं। कमी है तो उसे मिटाने का प्रयास करें। आप प्रयास करेंगे तो आज नहीं तो कल उन्हें रास्ते पर आना पड़ेगा। आप सद्भावना के साथ कमजोरी निकालने का प्रयास करें। आप स्नेह, सद्भावना और सहयोग का रूप पकड़ कर चलेंगे तो आपका संघ उन्नति करेगा और संघ की गरिमा बढ़ती जायेगी।

आप मिलजुल कर अपने भाइयों के साथ स्नेह संबंध प्रगाढ़ करें। घर के भाइयों की तो फिर भी पीढ़ियाँ पड़ जाती हैं। ये मेरे दादाजी के, ये मेरे पिताजी के भाई के लड़के हैं, इस प्रकार घर के भाइयों में पीढ़ियाँ पड़ सकती हैं, पर गुरुभ्राता में पीढ़ियों का काम नहीं। यह कई पीढ़ियों तक चलता रहेगा। गुरुभ्राता का सम्बन्ध हृदय से जुड़ा सम्बन्ध होता है। यह सम्बन्ध निरन्तर बढ़ते रहना चाहिए। आज भी गुरु कृपा से जहाँ कहीं सन्त-सतियों के चातुर्मास हैं सब तरफ चातुर्मास सफलतापूर्वक चल रहे हैं, ऐसे समाचार मिल रहे हैं। आचार्य भगवन्त की हमारे कार्यों में परोक्ष प्रेरणा मिल रही है। आप स्नेह, सद्भावना के साथ संगठन को आगे बढ़ायें, यही मंगल मनीषा है।

प्रवचन

उपाध्यायप्रवर की अमृत वाणी

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.

- श्रावक के लिए कहा जाता है कि पाँचवें गुणस्थानवर्ती श्रावक को कभी अपयश नामकर्म का उदय नहीं होता। क्यों? तो कहा-श्रावक कभी ऐसा काम नहीं करता, जिससे उसे अपयश मिले।
- सम्यग्दृष्टि जीव कभी पर-पदार्थों में फँसना नहीं चाहता। और जो पर-पदार्थों में फँसता है समझना चाहिये कि उसे अभी सम्यग्दर्शन हुआ ही नहीं। सम्यग्दृष्टि की सोच में और मिथ्यादृष्टि की सोच में रात-दिन का अन्तर रहता है।
- सम्यग्दर्शनी के सामने चक्रवर्ती की साहिबी कुछ नहीं है। उसको इन्द्र के भोग भी रोग लगते हैं। संसार-परिभ्रमण के जितने भी कारण हैं सम्यग्दृष्टि उनसे दूर ही रहता है। सम्यग्दृष्टि जड़ पदार्थों में और पुद्गलों में आसक्ति नहीं रखता।
- आयम्बिल साधना-आराधना शरीर के रोग मिटाने के लिए नहीं, अपितु भव-भ्रमण का रोग शान्त करने के लिए करनी चाहिए।
- सन्त के जीवन में ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप ये चार प्रधान गुण रहे हैं, इसीलिए अष्ट सिद्धि और नौ निधि सन्त-चरणों में चाकर कही जाती है।
- त्याग करने वाला शान्ति का अनुभव करता है। आप त्याग करके देखिये आपको भी सुख और शान्ति का अनुभव होगा।
- सामायिक का गुण है-समता। समता का भाव सामायिक में आना चाहिये। सामायिक करते हुए समता का भाव नहीं आया तो समझना चाहिये कि सामायिक में कोई कमी है।
- आज की जनता उपदेश सुनना नहीं चाहती, वह तो आचरण देखती है। स्थाई असर आचरण का होता है। उपदेश चाहे जितना अच्छा हो लेकिन आचरण नहीं है तो यहाँ से उठने के साथ कहने वाले यह कहते संकोच नहीं करते कि महाराज का व्याख्यान तो बहुत अच्छा है बाकी आप सब जानते हैं। जीवन में अगर सदाचार है क्षमा का गुण है, सत्यवादिता है तो उसकी खुशबू अपने आप फैल जायेगी। हाथ में कस्तूरी लेकर सौगन्ध खाने की जरूरत नहीं, कस्तूरी की महक स्वतः फैल जायेगी।
- स्वाध्यायी की स्वाध्याय में निरन्तरता बनी रहनी चाहिये। स्वाध्यायी डायरी में नौंद करता रहे कि उसने कितना कब याद किया है, साल भर में कितना ज्ञान मिलाया है? क्रोध-मान-माया-लोभ जैसी प्रवृत्तियाँ छोड़ने में वह कितना आगे बढ़ा है? गुण-वृद्धि पर उसका चिन्तन बराबर बना रहेगा तो वह आगे बढ़ेगा और उसका जीवन निखरेगा।
- दिनभर के क्रिया-कलापों का शाम को बैठकर आत्म-चिन्तन करें कि आज दिन-भर में कितनी बार क्रोध आया, मान का प्रसंग कब बना, माया कब की, लोभ तो नहीं किया? यों तो क्रोध-मान का जोड़ा है। ये दोनों द्वेष के अन्तर्गत माने हैं। माया-लोभ को राग के अन्तर्गत लिया गया है। चारों कषायों को एक शब्द में कहना हो तो वह है मोह। हर व्यक्ति अपने जीवन लेखा-जोखा करे। वह देखे क्रोध से क्या होता है और क्रोध नहीं करने से क्या होता है? स्वर्ग-नरक आगे की बात है पहले यहाँ शान्ति है या नहीं इसको देखने की जरूरत है। अगर साधना करते हुए शान्ति मिल रही है तो साधना बराबर है।
- तप के तीन हेतु बताये हैं-एक देह का ममत्व त्याग,

दूसरा इन्द्रियों पर विजय और तीसरा कषाय विजय। देह के ममत्व त्याग में जब तक देह की ममता नहीं छूटती तब तक तप नहीं होता। आज कई सोचते हैं-कहीं शरीर कमजोर न हो जाय। ऐसा सोचने वाले तप नहीं कर पाते। देह की ममता के त्याग से तप होता है।

- आध्यात्मिक विकास के तीन सोपान हैं-त्याग, वैराग्य और वीतरागता। त्याग में पदार्थ छूटता है। वैराग्य में ममत्व टूटता है। वीतरागता में आनन्द फूटता है।
- हमारे जीवन का सच्चा लक्ष्य तो वीतराग-भाव प्राप्त करना है। गुरु, सम्प्रदाय ये साधन हैं न कि साध्य। इनके जरिए साध्य की प्राप्ति करना है। अत: वीतरागता का ही लक्ष्य आवश्यक है।
- व्रत जीवन में आवश्यक है। अव्रत में रहने वाला व्यक्ति पाप नहीं करते हुए भी उससे उपरत नहीं है। आप करें या न करें, पाप का भार तो आप पर बढ़ ही रहा है।
- साधक के मन में संसार बस गया तो डूबने में देरी नहीं है। ज्ञानी के संसार में रहते हुए भी उसके मन में संसार नहीं रहता है।
- कभी भी जीवन के अन्दर संकट की घड़ी आ जाये तो आस्था कम नहीं करनी है, धर्म-ध्यान कम नहीं करना है। जितनी-जितनी धर्म के प्रति आस्था बढ़ेगी उतने-उतने कर्म घटकर या उन कर्मों का उदय होकर वापस सुख की घड़ी आ जायेगी।
- जीवन में धर्म-ध्यान के महत्त्व को समझते हुए यह समझना चाहिए कि ये सब दु:ख तो कर्मों के कारण होते हैं, धर्म के कारण तो शान्ति है, सुख है, आनन्द है, परमानन्द है।
- छूटे उससे पहले ही छोड़ देना, बुद्धिमत्ता है। छूटने में दु:ख और छोड़ने में सुख है। आप चाहते नहीं कि छूट जाय फिर भी छूट जाता है तो दु:ख होता है और उसके प्रति मोह हटाकर छोड़ दिया तो सुख होता है।
- सन्त-महात्मा देने के लिए तो सब कुछ देते हैं लेकिन हाथ में कुछ नहीं देते। सन्तों की महिमा इसीलिए है कि वे शीलव्रत का पालन करने वाले हैं। वे चाहे महलों में चले जायें, रजवाड़ों में चले जायें, जहाँ रनिवास होता है, अन्त:पुर होता है, वहाँ पर भी उन पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं है।
- समय आने पर समस्त भोग-वासना को छोड़ देना चाहिए। अगर सम्पूर्ण भोग-वासना नहीं छूटती है तो कम से कम कुछ न कुछ नियम जीवन में बनाना चाहिए ताकि इस जीवन को आगे बढ़ाया जा सके। इस तरह से कुछ न कुछ नियम धारण करें।
- ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने से जीवन में एक शक्ति का संचार होता है, इससे जीवन शक्ति बढ़ती है। ब्रह्मचर्यव्रती कोई वचन कह देता है तो वह सत्य हो जाता है। उसका कोई वचन खाली नहीं जाता है। उसे सिद्धि मिल जाती है।
- स्वयं अपने अनुशासन से अनुशासित रहता हुआ व्यक्ति किसी बन्धन में नहीं पड़कर अपने आप पर नियन्त्रण रखता है, अनुशास्ता बनकर अपनी आत्मा को अनुशासित बनाता है तो यह संयम है।
- दु:ख का मूल कारण-आस्रव है। संवर सुख का कारण है तो आस्रव दु:ख का कारण है। संवर मोक्ष का हेतु है। व्यक्ति आस्रव में रहता हुआ निरन्तर कर्मबन्धन कर रहा है। वह अपने-आपको दु:ख के गर्त में गिरा रहा है।
- राग तीन तरह के होते हैं-पहला व्यक्ति राग, दूसरा सम्प्रदाय राग और तीसरा धर्म राग। व्यक्ति-राग व्यक्ति रहता है तब तक रहता है। सम्प्रदाय राग जब तक सम्प्रदाय है तब तक रहेगा। धर्मराग हमेशा बना रहता है।
- त्याग में वस्तु छूटती है, वैराग्य में वस्तु के प्रति रहा ममत्व भाव भी छूटता है, जबकि वीतरागता में

आनन्द ही आनन्द है।

- किसी भी धर्म, सम्प्रदाय, समाज, राष्ट्र को चिरकाल तक अवस्थित रखना है तो उसके लिए आधार हैं-स्नेह, सद्भावना और संगठन।
- सनातन धर्म और जैनधर्म में अन्तर है। सनातन धर्म राग पर खड़ा है। उनके देव रागी हैं, जैनधर्म में देव वीतरागी हैं एवं गुरु त्यागी हैं।
- आज का नवयुवक कहने की अपेक्षा आचरण को देखकर समझता है। आचरण अनुकरणीय होता है, कहने में आचरण की बात आप कह तो जाते हैं, पर आपका जीवन कैसा है, यह नहीं देखते।
- बच्चों में प्रारम्भ से संस्कार देंगे तो उन्हें धर्मस्थान में आने में संकोच नहीं रहेगा। माता-पिता का प्रमुख कर्त्तव्य है कि वे अपनी सन्तानों में धार्मिक संस्कार जगाने का प्रयत्न करें और समय आने पर आत्मजागृत सन्तानों को जिनशासन-सेवा हेतु समर्पित करें।
- चित्त एकाग्र नहीं है, भटक रहा है तो वहाँ स्वाध्याय की भजना है, नियमा नहीं।
- आभ्यन्तर तपों में वैयावृत्त्य पहले है और स्वाध्याय को बाद में रखा गया है।
- स्वाध्याय से स्व का अध्ययन और स्व के अध्ययन से स्व का कल्याण होता है, परन्तु सेवा से स्व और पर दोनों का कल्याण होता है।
- माता-पिता एवं गुरुजनों के प्रति अविनय, उनका अनादर, उनके प्रति अकरणीय व्यवहार से व्यक्ति कर्त्तव्यच्युत ही नहीं, धर्मच्युत भी हो जाता है।
- सेवा करने वाला व्यक्ति, चाहे वह गृहस्थ हो या साधक, दो तरह से लाभान्वित होता है। वह अपने कर्मों की निर्जरा करता हुआ अन्य को साता पहुँचाता है।
- सच्चा शिष्य होता है वह गुरु हो या गुरुभ्राता, सभी को सही रास्ते पर सतत गतिमान रखने हेतु प्रयत्न करता रहता है। सच्चा शिष्य संयम में पूर्ण सहयोगी बनता है। वह गिरने वालों को सहारा देकर उन्हें सुस्थिर बनाता है।
- उपकारियों की सेवा-सुश्रूषा में तत्पर रहना तो कर्त्तव्य बनता ही है, किन्तु उन्हें केवली प्ररूपित धर्म में सुस्थित करने पर ही उनके ऋण से उऋण हुआ जा सकता है।
- अनन्त गुणों में से किसी एक गुण को प्रधान करके तथा अन्यान्य शेष गुण-धर्मों को गौण करके उनकी ओर उदासीन भाव रखकर पदार्थ को जानना नय है।
- प्रमाण अनन्त धर्मात्मक पदार्थ को समग्र रूप से ग्रहण करता है, जबकि नय उनमें से किसी एक गुण-धर्म को विशिष्ट रूप से ग्रहण करता है।
- भूत सपना है, भविष्य कल्पना है तो वर्तमान अपना है। आप वर्तमान को सुधार लीजिये भविष्य अपने-आप सुधर जायेगा।
- संघ का नायक चतुर्विध संघ की सारणा-वारणा-धारणा करता है, वह सबको निभाने की कला कर्त्तव्य समझकर और संघहित को सर्वोपरि मानकर पूरी करता है तभी संघ में शान्ति बनी रहती है।
- आप निभने-निभाने की कला सीखें तो आपको जीवन में आनन्द प्राप्त होगा। बड़े वत्सलता का भाव रखें और छोटे श्रद्धा का भाव रखें तो शान्ति बनी रहेगी। जहाँ शान्ति है वहाँ समृद्धि है, सुख है, आनन्द है।
- व्रत भारी लगते हैं, किन्तु धारण कर लेंगे तो भारी नहीं लगेंगे।
- समय किसी का इन्तजार नहीं करता। जो भी समय का सदुपयोग करता है वह समय को सार्थक कर लेता है और जो समय का सदुपयोग नहीं करता उसका भी समय जाता ही है।
- बुद्धि की सार्थकता इसी में है कि व्यक्ति धर्म की आराधना करे, अन्यथा कर्म-बन्धन तो हो ही रहे हैं। जो बुद्धि कर्मों का बन्ध करे वह निरर्थक है।

■

ISSN 2249-2011

प्रवचन-संस्मरण

उपाध्यायप्रवर के जीवन की झलकियाँ

मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.

प्रस्तुत प्रवचन शान्त-दान्त-गम्भीर, आत्मार्थी, प्रबल पुरुषार्थी पण्डित रत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के निकटवर्ती, अन्तेवासी सन्तरत्न मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. के उपाध्यायप्रवर से सम्बन्धित प्रसंग दिवसों पर एवं गुणानुवाद सभा में फरमाए गए विभिन्न प्रवचनों एवं पीपाड़ शहर में जनवरी 2020 के प्रवास समय में मध्याह्न में सुनाए गए संस्मरणों के आधार पर नमन मेहता, पीपाड़ शहर द्वारा उन्हीं के शब्दों में संकलित किया गया है। -सम्पादक

आज हम ऐसे साधक की चर्चा कर रहे हैं जिनके गौरव में लघुता थी, विशेषताओं में सहजता थी, प्रभावशीलता में निस्पृहता थी, निर्लिप्तता में आत्मौपम्य के भाव थे, अकिञ्चनता में महानता थी, कोमल हृदय, किन्तु दृढ़ मनोबली थे, साधारण सी मानव देह में असाधारण सी क्षमता लिए विशाल व्यक्तित्व था, अभय थे, कोमल थे, पवित्र थे, सरस थे, जिनकी प्रवृत्ति में सजगता, निवृत्ति में सहजता, वृत्ति में समता थी, और क्या कहूँ-गुरु हस्ती की नज़रों में भी जिनका सम्मान था, ऐसे अनेकानेक गुणों से मण्डित उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. आज सदेह भले ही हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन अपनी विशेषताओं से हर दिल में छाए हुए हैं, बसे हुए हैं और सदैव स्मृतियों में सजीव हैं और रहेंगे।

गुरु हस्ती के बाद मुझे उनकी सन्निधि में दीर्घ समय तक रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, मुझे आज भी याद है कि आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आचार्य पद चादर महोत्सव के बाद जोधपुर के कोठारी भवन में दोनों महापुरुष विराज रहे थे, तब आचार्यश्री जी ने मुझे व्यवस्था देते हुए कहा-'आपको उपाध्यायश्री जी की सन्निधि में रहना है।' उन महापुरुष के सानिध्य में रहते हुए यह बराबर अनुभव पाया कि उनमें सहज सरलता, निस्पृहता, सादगी आदि गुण जो वीतरागता की याद दिलाते हैं-देखे गए। उपाध्यायश्री जी का विचरण भले ही सीमित रहा, लेकिन उनकी यशस्विता चतुर्दिक् थी।

यद्यपि हम थे तो परस्पर में गुरु भाई, पर मैंने उनमें गुरुता का गौरव पाया, एक विशिष्ट महापुरुष की झलक देखी और एक अच्छे और ऊँचे सन्त की परम्परा का प्रतिनिधित्व पाया। मुझे कभी याद नहीं आता कि उन्होंने कभी उपालम्भ भी दिया हो। उनका मौन जीवन भी मेरे लिए प्रेरक था।

उपाध्यायप्रवर अपने संयमी जीवन में जब तक पण्डित रत्न श्री बड़े लक्ष्मीचन्दजी म.सा. रहे तब तक प्राय: उन्हीं के सानिध्य में रहे, अपनी दीक्षा के प्रथम वर्ष में गुरु हस्ती से निवेदन किया कि-''पहला चातुर्मास आपकी सेवा में पण्डित रत्न श्री छोटे लक्ष्मीचन्दजी म.सा. के पास आचार धर्म का प्रशिक्षण पाने के लिए करने की भावना है।'' गुरु हस्ती ने उनकी भावनाओं का सम्मान करते हुए उनके लक्ष्य को ध्यान में रखकर पहला चातुर्मास अपनी सेवा में ही करवाया। यह थी उनकी आचार धर्म में निष्ठा की आन्तरिक प्रबल भावना। उपाध्याय भगवन्त ने जिस आचार धर्म को संयम के प्रारम्भ में सीखा उसे अन्तिम श्वास तक जीया। उपाध्यायप्रवर अपने अन्तिम समय तक साधना-आराधना के लिए हमेशा तत्पर रहते। स्वाध्याय, माला, समय-समय पर उपवास आदि साधना से हमेशा संयम में लीन रहे, लेकिन पिछली अवस्था में शारीरिक अक्षमता तथा स्मरण शक्ति की हल्की दुर्बलता के प्रभाव से उनको स्वाध्याय, तप आदि में सन्तों पर निर्भर रहना पड़ता। यही कारण है कि सन्तों ने उपवास करा दिया तो

उपवास कर लिया, आयम्बिल कर दिया तो आयम्बिल कर लिया, नींवी करा दी तो नींवी कर ली, इसी के फलस्वरूप चातुर्मास के अवसान काल में शारीरिक दुर्बलता का प्रभाव होते हुए भी 'भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक दिवस' पर तेले की आराधना की, चातुर्मास समापन पर चौमासी का बेला तप किया और उसके बाद भी अष्टमी-चतुर्दशी को उपवास करते, तिथि के दिनों में डेढ़ पोरसी करते थे।

उसी क्रम में 1 जनवरी, 2020 तदनुसार पौष शुक्ला षष्ठी के दिन नित्य के अनुसार ऊपर से ही नीचे हॉल में प्रवचन समाप्ति पर मंगलपाठ सुनाया। मध्याह्न में वाचनी आदि में भी वही क्रम था। आहार आदि में भी किसी प्रकार कोई अन्यथा बात नहीं दिखाई दी। पूरे दिवस का नित्यक्रम वैसा ही सामान्य बना हुआ था। लेकिन मध्यरात्रि के समय लगभग 11.45 बजे के आस-पास सेवा में पूर्णभावेन संलग्न एवं तत्पर श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. ने देखा कि उपाध्याय भगवन्त के श्वास का उठाव तेज सुनाई दे रहा है, उन्होंने तत्काल हम सन्तों को जगाया और हमने श्रावकों को सूचित किया। श्रावक भी पहुँचे, स्थिति देखकर डॉक्टर को बुलाने के लिए हमसे कहा। हम सन्तों ने कहा-''अब रात्रि में डॉक्टर आकर करेगा भी क्या? न तो जाँच कर सकते हैं, न उपचार ले सकते हैं।'' हम सन्तों ने ही पैरों की पगतली और हाथों की हथेली पर हाथ फेरना चालू किया, भगवन्त को थोड़ी राहत मिली और लगभग 2 बजे उन्हें नींद आ गई। लेकिन लगभग 4 बजे बाद फिर वही स्थिति, श्वास का उठाव और कफ का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। सूर्योदय होते ही डॉक्टर को दिखाया गया और जाँच के बाद यह पाया कि उपाध्यायश्री को निमोनिया है और उपचार भी तुरन्त प्रभाव से चालू कर दिया गया। यद्यपि डॉक्टर ने हॉस्पिटल ले चलने को कहा, पर सन्तों ने उचित नहीं समझा और उपाध्यायश्री जी ने भी जब अस्पताल जाने बाबत पूछा तो उन्होंने भी स्पष्ट रूप से मना कर दिया तो स्थानक में ही उपचार जारी रखा गया। डॉक्टर साहब एवं हम सभी को यह विश्वास था कि यथोचित उपचार में एक-दिन में ही यथास्थिति लौट आएगी। सायंकाल में डॉक्टर धारीवालजी पुनः उपस्थित हुए और उन्होंने फिर से दोहराया 'हॉस्पिटल ले जाना उचित रहेगा ताकि हमें मॉनिटरिंग की अनुकूलता रहेगी', हमने पूछा-''डॉक्टर साहब! उपाध्यायश्री जी को श्वास का इतना उठाव क्यों हो रहा है?'' डॉक्टर साहब ने कहा-''इनके फेफड़े में कफ जम गया है, इससे इनको श्वास लेने में परेशानी हो रही है।''

जारी उपचार से हम इस विश्वास में रहे कि उपचार से कफ आज तक ठीक होता आया है और अब भी पुनः ठीक हो जाएगा, उस समय हमने किञ्चित् कल्पना नहीं की थी कि आज का दिवस ही इनका अन्तिम दिवस है और 2 जनवरी, 2020 के दिन सायं लगभग 5.55 बजे जब सन्तों ने उपाध्यायश्री जी को कुछ दवाई देनी चाही तो उस समय मैंने देखा-'शारीरिक लक्षण में कुछ परिवर्तन स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं।' तुरन्त सारे औपचारिक उपकरण हटाकर तत्काल उन्हें चौविहार का प्रत्याख्यान करते हुए, भूतकाल में लगी हुई प्रतिसेवना का 'मिच्छामि दुक्कडं' स्मरण कराते हुए समस्त पापों को वोसिराते हुए, भविष्य के लिए चौविहार प्रत्याख्यान के साथ संकल्प कराया और उन्हें लिटाया। लेटते ही लगभग 3-4 मिनट के बाद ही उन्होंने अपनी अन्तिम श्वास भर ली।

यद्यपि विधिवत् संथारे का मौका नहीं मिल पाया, लेकिन हमारी नज़र में उनकी निर्दोषता, निरतिचार साधना और निश्चय भाव-उनकी आराधना के ही सूचक थे। याद आती है भगवान महावीर के समय की बात-भगवान महावीर के समवसरण में गोशालक ने तेजोलेश्या का प्रहार किया और दो मुनिजनों का प्राणान्त हो गया, वहाँ दोनों में से एक भी मुनिराज को संथारे का अवसर तक भी नहीं मिल पाया, फिर भी वे आराधक कहलाए। यद्यपि संथारा-संलेखना के अन्तिम

मनोरथ का मूल हमेशा रहेगा मगर 'संथारे का मूल्य भी नि:शल्य भाव से ही है' और हमने बराबर यह अनुभव किया कि उपाध्याय भगवन्त का संयम जीवन सरल, सजग एवं नि:शल्य था, इसलिए उनका अन्तिम समय निश्चित रूप से आराधना में ही बीता-यदि यह कह दिया जाए तो भी कोई अतिशयोक्ति नहीं।

इस तरह लगभग 5.55 बजे पर अन्तिम श्वास के साथ, सदा के लिए उस पुण्यशाली आत्मा ने अपने गन्तव्य की ओर प्रयाण कर दिया। पूज्य उपाध्याय भगवन्त संघ के प्राण थे, शक्ति थे, आधार थे, हजारों की श्रद्धा के केन्द्र थे।

सबसे बड़ी विशेषता उनके लिए यह रही कि सम्प्रदाय विशेष के सन्त होते हुए भी सबको अर्थात् प्रत्येक सम्प्रदाय वालों को सम्प्रदायातीत नज़र आते। यही कारण है कि अन्तिम कुछ वर्षों में जोधपुर में जब-जब भी वे जहाँ-जहाँ भी विराजे प्रत्येक स्थान समवसरण-सा हो गया और जिस स्थान पर विराजे वह तो मानो तीर्थ ही बन गया।

मुझे आज भी याद है गुरु हस्ती ने पाली चातुर्मास के पश्चात् सभा के अन्दर अपने दोनों बाजू बैठे हुए श्रद्धेय श्री हीरामुनिजी म.सा. एवं श्रद्धेय श्री मानमुनिजी म.सा. को अपना सम्बल बताया, दोनों को अपनी सशक्त भुजाएँ बताया और भविष्य में संघ के आधार का संकेत बताया। आप और हम सभी ने देखा और अनुभव किया ही है, किस तरह दोनों महापुरुष गुरु हस्ती के संकेतानुसार आगे चलकर इस रत्नसंघ के आधारभूत नायक बने। आज सम्पूर्ण स्थानकवासी परम्परा में हमारा यह संघ आदर्श संघ के रूप में प्रतिष्ठित है। दोनों महापुरुषों ने अपने चारण-आत्मानुशासन-सूझबूझ तथा शुद्ध समाचारी के साथ संघीय व्यवस्थाओं में जो अनुशासन की मिसाल पेश की है वह अपने आप में एक अनुपम आदर्श है, एक इतिहास है, एक प्रेरणाप्रसंग है। दोनों महापुरुष सदैव एक-दूसरे के पूरक रहे, लेकिन पूज्य उपाध्याय भगवन्त का आकस्मिक देहावसान हो गया। एक अलौकिक और दिव्य सन्तरत्न की संघ में अपूरणीय क्षति हो गई। हम अब यही अपेक्षा रखते हैं कि उनके गुण हमारे जीवन में जीवन्त बनें। आप और हम सभी अपने संयम-शुद्धाचरण में आगे बढ़ें और इन सबमें पूज्य उपाध्याय भगवन्त के जीवन की यशगाथा का महिमागान करते कतिपय प्रसंग हमें सदैव आगे बढ़ने हेतु प्रेरणा देते रहेंगे। कई सारे प्रसंगों का मैं गवाह रहा जिनकी चर्चा करना प्रासंगिक है तो प्रेरणास्पद भी-

(1) एक बार उपाध्याय भगवन्त के पास एक भाई आया तो भगवन्त ने उसको सामायिक करने की प्रेरणा की, भाई ने प्रत्युत्तर में कहा कि-"सामायिक में मन नहीं लगता फिर सामायिक करने का क्या मतलब?" तो प्रत्युत्पन्नमति से सम्पन्न उपाध्याय भगवन्त ने तुरन्त फरमाया कि-"अरे भाई! अगर मन लग जाता तो सामायिक करने की आवश्यकता ही क्या रहती।"

(2) उपाध्याय भगवन्त विराज रहे थे और एक भाई उनके समीप आया, दर्शन-वन्दन करके भगवन्त के पैरों को स्पर्श किया और स्पर्श करने के बाद भगवन्त से कहा-"भगवन्त आपका शरीर थोड़ा गर्म लग रहा है।" तो भगवन्त ने तुरन्त प्रतिक्रिया देते हुए फरमाया कि-"भाई गर्म है तभी यहाँ बैठे हैं, अगर ठण्डा होता तो आप लोग कभी का अन्तिम स्थान तक पहुँचा देते।"

(3) उपाध्याय भगवन्त किसी शहर में आवश्यक कार्य हेतु बाहरी भूमि की ओर पधार रहे थे तो चलते हुए रास्ते में एक भाई ने घर से बाहर आकर भगवन्त से निवेदन किया कि-"भगवन्त! घर पधारो।" तो भगवन्त ने तुरन्त प्रत्युत्तर दिया-"भाई! हम तो घर छोड़ने की बात करते हैं और तू घर पधारने की बात कह रहा है।"

(4) उपाध्याय भगवन्त के पास कभी कोई चातुर्मास हेतु विनति-पत्र लेकर प्रस्तुत होता तो भगवन्त विनति-पत्र हाथ में देखकर सहज भाव में यही पूछा करते थे कि-"क्या किसी का कोई आज्ञा-पत्र लेकर

आए हो?''

(5) एक भाई उपाध्याय भगवन्त के पास आया और स्वयं ही कहने लगा कि-''आज रविवार की छुट्टी आई तब कहीं बड़े दिनों के बाद आपके दर्शन, वन्दन का लाभ मिल पाया।'' तो भगवन्त तुरन्त बोले कि-''रविवार की छुट्टी तो आ गई, पर पाप की छुट्टी कब है? वह बताओ।''

(6) एक भाई की उपाध्याय भगवन्त के प्रति अगाध श्रद्धा थी और उस भाई के परिवार के प्रमुख सदस्य को हृदय सम्बन्धी कोई रोग हो गया और डॉक्टर ने भी हार्ट के ऑपरेशन की सलाह दी तो उस भाई ने तुरन्त पत्र के माध्यम से उपाध्याय भगवन्त से पृच्छा करवाई कि-''हम असमञ्जस की स्थिति में है, हार्ट का ऑपरेशन करवाएँ अथवा नहीं? भगवन्त जैसा फरमाएँगे उसी के अनुसार ही आगे कार्य किया जाएगा, भगवन्त उचित समाधान फरमाने की कृपा करावें।''

सन्त जीवन की अपनी मर्यादा होती है, संयम में वाणी का विशेष विवेक रखने की आवश्यकता होती है। भगवन्त ने अपनी संयम की मर्यादा में रहते हुए, निरवद्य भाषा का प्रयोग करते हुए केवल इतना ही कहा-''रोग बढ़ाने में सार नहीं है।'' वह भाई समझ गया। कैसा उन महापुरुष का संयम के प्रति सजग भाव और भाषा समिति का यतनापूर्वक, प्रज्ञा पूर्वक सदुपयोग।

(7) उपाध्याय भगवन्त कोसाना ग्राम में विराज रहे थे। वहाँ नाशिक का एक परिवार भगवन्त के दर्शन, वन्दन हेतु उपस्थित हुआ। सेवालाभ लेने के पश्चात् उसी परिवार के एक सदस्य ने डायरी और पेन आगे करते हुए उपाध्याय भगवन्त से कहा कि-''भगवन्त आपका ऑटोग्राफ चाहिए।''

भगवन्त ने उसे बड़े प्रेम से समझाया कि-''देखो यह डायरी है, यह गुम हो सकती है, पेपर फट सकता है, गल सकता है, स्याही मिट सकती है, इससे कई अधिक इच्छा है कि कोई व्रत-नियम स्वीकार करो तो तुम्हारे लिए सदैव की यादगार हो जाएगी।''

देखिए उन महापुरुष का संयमी जीवन को सुरक्षित रखते हुए (कारण कि सन्त-सती अपने हाथ से गृहस्थ की डायरी अथवा पेपर पर कुछ भी लिखकर नहीं देते) प्रेमपूर्वक और कर्म-निर्जरामय कैसा मार्मिक जवाब था यह।

(8) उपाध्याय भगवन्त का जोधपुर के उपनगर नेहरू पार्क में चातुर्मास हेतु प्रवेश हुआ और प्रवचन में मैंने चातुर्मास की रूपरेखा रखते हुए चातुर्मास को कैसे यादगार बनाना इस हेतु कुछ व्रत-नियम, त्याग-प्रत्याख्यान के विशेष बिन्दु रखते हुए बलवती प्रेरणा की; पश्चात् में उपाध्याय भगवन्त ने सागर को गागर से भरते हुए बड़े ही संक्षिप्त भाव में इतना सा फरमाया कि-''होमवर्क तो आपको मिल ही गया है, अब तो करने के दिन हैं।''

(9) उपाध्याय भगवन्त ने अपनी सेवा में रहने वाले विरक्त बन्धु को एक बार फरमाया-''भाई! देख कभी-कभी मेरी ड्यूटी मत बाँधना'' (जिससे कि गुरु अपनी साधना बिना किसी रुकावट में निर्बाध रूप से कर सके)। इस एक छोटे से वाक्य में भगवन्त ने उस शिष्य को 'आत्मानुशासित' होने की विशेष प्रेरणा दे दी।

(10) सन् 1988 के दिल्ली चातुर्मास हेतु जब पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा दिल्ली पधार रहे थे तो विहारक्रम के मध्य दिल्ली के श्रावक पण्डित रत्न श्री की सेवा में उपस्थित हुए और चातुर्मास हेतु कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए पूज्य श्री मानचन्द्रजी म.सा. से पूछा-''आपके चातुर्मास में किन-किन कार्यक्रमों के आयोजन करने हैं और किस आयोजन में किन-किन विशिष्ट व्यक्तियों को बुलाना है?'' तो पण्डित रत्न श्री ने बहुत ही सहजता और सादगीपूर्वक तुरन्त ही प्रत्युत्तर में फरमाया-''भाई! हमें चातुर्मास में धम्मचक (प्रदर्शन और शोर-शराबा) नहीं, तप-त्याग, ज्ञान-ध्यान रूपी 'धर्मचक्र' चाहिए।''

(11) उसी दिल्ली चातुर्मास में जब लोगों ने सन्तों के ज्ञान-ध्यान एवं संयम जीवन की सुन्दर चर्या

और सम्यक् आचरण को देखा तो सभी आपस में यही कहते-''ये सन्त इतने अच्छे और उच्च कोटि के हैं तो इनके गुरु कितने उच्च कोटि के होंगे?'' उस समय गुरु हस्ती सवाईमाधोपुर शहर में चातुमासार्थ विराज रहे थे, दिल्ली के उन लोगों ने जब सवाईमाधोपुर आकर गुरु हस्ती के दर्शन किए और वापस दिल्ली आए तो उनके मुख से बस एक ही बात निकली-''हम साक्षात् भगवान के दर्शन करके आए हैं।''

सच में कई बार कृति भी कलाकार के नाम को प्रसिद्ध कर देती है। धन्य हैं वे सन्त महापुरुष जिनकी चर्चा ने आगन्तुकों को उनके गुरु के दर्शन का लालायित बना दिया और उन पूज्य गुरुदेव के दर्शन पाकर गुरु पद की महिमा का इतना सुन्दर मण्डन हुआ।

(12) एक बार उपाध्याय भगवन्त पाटे पर विराज रहे थे और स्वाध्याय कर रहे थे। इतने में कोई भाई आया और पाटे पर अखबार रखकर चला गया, परन्तु उन पूज्य महापुरुष की इतनी सहजता और गहरा आत्मविश्वास था कि उन्होंने पाटे से उस अखबार को हटाया तक नहीं, क्योंकि कोई भी आने वाला व्यक्ति भी भले ही उस अखबार को देख लें तो भी यहीं समझता कि-''अन्य कोई भी अखबार पढ़ सकता है, परन्तु यह महापुरुष तो अखबार की तरफ देखने वाले तक भी नहीं है।'' उन महापुरुष की इतनी गहरी प्रतिष्ठा और असीम श्रद्धा जन-जन के मन में थी।

(13) सन् 2005 के बालोतरा चातुर्मास की बात है, पूज्य उपाध्याय भगवन्त प्रतिदिन दोपहर में गोचरी के पश्चात् लगभग घण्टे भर तक माला फेरा करते थे, इस बीच दर्शन हेतु आने वाले कुछ लोग वहीं बैठ जाते और यही विचार करते कि मांगलिक के पश्चात् ही प्रस्थान करेंगे, उपाध्याय भगवन्त माला पूर्ण होने के बाद मंगल पाठ फरमाते। पूज्य महापुरुष के अतिशय स्वरूप उस मांगलिक पाठ के प्रभाव से उन आने वाले लोगों को जीवन में साताकारी अनुभव प्राप्त हुआ और यह बात आग की तरह फैल गई कि 'इन महापुरुष की मांगलिक इतनी प्रभावशाली है' और देखते-देखते मांगलिक के समय स्थानक खचाखच भरने लगा, दिन-ब-दिन भीड़ और अधिक उमड़ने लगी, स्थिति ऐसी बन गई कि और अधिक भीड़ बढ़ती तो शायद टेण्ट लगाना पड़ता। लेकिन इस बीच सहजधर्मी उपाध्यायप्रवर ने सन्तों के सुझाव को ध्यान में रखते हुए यह अनुभव किया कि ऐसी मांगलिक की भीड़ संघीय व्यवस्था नहीं है और उसी क्षण मांगलिक पाठ के पश्चात् स्वयं उपाध्यायश्री ने घोषणा कि-''कल से इस तरह मांगलिक पाठ नहीं होगा।'' पश्चात् के दिनों में मंगल पाठ तो फरमाते, लेकिन भीड़तन्त्र हट गया। संघ की व्यवस्था में उपाध्यायश्री जी का यह आत्मानुशासन एक मिसाल और आने वाली पीढ़ी हेतु प्रेरणास्पद बन गया जहाँ एक ओर भीड़ बढ़ाने के लिए अनेक प्रयत्न किये जाते हैं, लेकिन उस निस्पृह साधक ने उमड़ती हुई भीड़ को बन्दकर निस्पृहता का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया। ऐसे थे वे सजग महापुरुष।

(14) कभी उपाध्याय भगवन्त के स्वयं के जन्मदिवस के अवसर पर श्रावकगण व्याख्यान में पधारने हेतु आग्रह भरा निवेदन करते तो उपाध्याय भगवन्त फरमाते-''भाई! क्यों मीठी सजा देते हो?'' और फिर बात को आगे बढ़ाते हुए कहते-''क्या जन्म दिन मनाना, अब तो जन्म मरण मिटाना है।'' कैसा सम्यक् जीवन और कैसे सम्यक् भाव उन महापुरुष के जो बात-बात में भी श्रेष्ठ आचरण की झलक दिखाते और प्रेरणा देते थे।

(15) सन् 2011 में पूज्य आचार्य भगवन्त की अनुज्ञापूर्वक आग्रह था कि उपाध्याय भगवन्त भी ब्यावर दीक्षा प्रसंग पर पधारें, उस समय ब्यावर दीक्षा पर लगभग 50 रत्नसंघीय सन्त-सतियों का समागम होना प्रतीत हो रहा था। इसी क्रम में विहार करते हुए उपाध्यायश्री ब्यावर पहुँचे और प्रवेश के दिन ही प्रवचन में फरमाया-''दीक्षा प्रसंग भी है और सहज में ही इतनी चारित्रात्माओं के दर्शन भी एक साथ हो जाएँगे, बस

इसीलिए आना हो गया।'' एक गौरवशाली संघ के उपाध्याय के श्रीमुख से ऐसी सौम्य-सरल-सादगी भरी बात सुनकर पाटे के सामने बैठे कई श्रावक भाव-विभोर हो यह सोचने लगे कि-''अहो! कितनी सरलता है? कितनी ऋजुता है? अपने आपको कितना लघु मान रहे हैं?'' और उनकी आँखों से बरबस ही उनके प्रति श्रद्धा-समर्पण और अहोभाव के आँसू निकल आए।

(16) उपाध्याय भगवन्त द्वारा कभी गुरु धारणा कराने का प्रसंग आता तो देव, गुरु, धर्म का विस्तृत स्वरूप बताने के बाद अन्त में उपाध्याय भगवन्त गुरु धारणा करने वालों से यह फरमाते-''तुमसे कोई पूछे तुम्हारे गुरु कौन हैं?'' और स्वयं समाधान देते हुए कहते-''तो कहना जो पंच महाव्रतधारी निर्ग्रन्थ साधु हैं, वह मेरे गुरु हैं, लेकिन देव, गुरु, धर्म का स्वरूप बताकर उपकार करने वाले गुरु आचार्य श्री हस्ती के पट्टधर आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. कह देना।'' इस घटना से आप सोचें कि स्वयं देव, गुरु और धर्म का स्वरूप बताकर उपकार करने वाले होते हुए भी अपने आपको नाम-प्रसिद्धि से दूर करते हुए उत्कट निस्पृहता का परिचय देते।

(17) आचार्य श्री हस्ती के पश्चात् आचार्य और उपाध्याय के रूप में दोनों महापुरुषों का जिनशासन की प्रभावना में प्रभावी विचरण विहार होता। हजारों लोगों की श्रद्धा के केन्द्र पूज्य उपाध्यायश्री जी के श्रद्धावान् व्यक्तियों का मन्तव्य अक्षय तृतीया का पारणा उपाध्याय भगवन्त की सेवा में करने का होता तब श्रद्धावान् श्रावक आकर उपाध्याय प्रवर से पूछते-''अक्षय तृतीया आप कहाँ करोगे?''

उपाध्याय भगवन्त उनके आशय को समझते हुए तुरन्त संघीय व्यवस्था का ध्यान दिलाते हुए स्पष्ट रूप से कहते-''हमारे यहाँ संघ में अक्षय तृतीया पर तपपूर्ति और तप का प्रारम्भ आचार्यश्री की नेश्राय में ही होता है।''

धन्य है उस महान् साधक को जिन्होंने प्रभावशाली और हजारों की श्रद्धा के केन्द्र होते हुए भी कभी संघीय व्यवस्था का उल्लंघन नहीं किया, अपितु पूर्ण रूप से अपना सहकार किया।

(18) पूज्य उपाध्यायश्री जी दीक्षा के प्रारम्भिक जीवन से आत्मानुशासित जीवन जीने का संकल्प लेकर अपनी साधनाचर्या में सजग रहे। यही कारण है कि अपने मुनि जीवन में किसी आगन्तुक दर्शनार्थी को किसी से यह पूछने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती कि 'स्थानक में श्रद्धेय श्री मानमुनिजी म.सा. कहाँ विराज रहे हैं?' लोगों को सहज विश्वास था कि-''श्रद्धेय श्री मानमुनिजी म.सा. तो पण्डितरत्न श्री बड़े लक्ष्मीचन्दजी म.सा. के पाट के पास बैठे हुए मिलेंगे।'' ऐसी पहचान आपने, अपने आत्मानुशासन के बल पर लोगों के दिलों में बनाई। सिर्फ़ मुनि पद पर रहते हुए ही नहीं, अपने उपाध्याय पद के जीवन में भी अपना जीवन खुली किताब की तरह बिताया, वे स्थानक में कभी किसी अलग स्थान विशेष पर नहीं बैठते, हमेशा खुले हॉल में ही विराजते। इस प्रसंग से हमको सहज प्रेरणा मिलती है कि साधक को लुकाव-छिपाव का कोई कार्य नहीं और यूँ भी 'साधकता वही जीवन्त है जिसका जीवन एक खुली किताब की तरह होता है।'

(19) पूज्य उपाध्याय भगवन्त पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के प्रति अन्तरात्मा से समर्पित और श्रद्धावान् थे। हर परिस्थिति में गुरु के प्रति विशेष आस्था का भाव था। गुरु के प्रेरणास्पद वचनों को वे सदैव स्मृति में रखते। अक्सर उपाध्याय भगवन्त गुरु हस्ती द्वारा कही हुई एक बात फरमाया करते थे (उन्हीं के शब्दों में)-''जब मैंने दीक्षा ली तो दीक्षा के तुरन्त बाद मुझे गुरु हस्ती ने साधना पक्ष की तेजस्विता के लिए सूत्र दिया वह मेरे जीवन के लिए हर पल आगम सूत्र से कम नहीं था।'' गुरु हस्ती का वह सूत्र था-''देखो! प्रमाद तो आएगा ही तुम अप्रमत्त रहकर के बताओ।'' उपाध्यायश्री फरमाते थे यह सूत्र जब-जब भी स्मृति में उभरता मुझे साधना में सजगता की बलवती प्रेरणा मिलती।

ISSN 2249-2011

श्रद्धाभिव्यक्ति

टीचिंग और टचिंग में निपुण थे उपाध्यायप्रवर

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने 4 जनवरी, 2020 को शक्ति नगर स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. की गुणानुवाद सभा में श्रद्धाभिव्यक्ति की, जिसका संकलन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया।

-सम्पादक

धर्मानुरागी बन्धुओं!

संसार में नित्य कोई-न-कोई जन्म लेता है और नित्य ही कोई-न-कोई मरण भी प्राप्त करता है। रोज हजारों-हजार जन्म लेते हैं और मरण भी प्राप्त करते हैं पर सबका न तो जन्म-दिवस मनाया जाता है और नही मरण का स्मरण किया जाता है। न जन्म का महत्त्व है, न मरण का। महत्त्व है तो जन्म और मरण के बीच जीवन का। किसने कैसा जीवन जीया, वही याद किया जाता है। जो जन्म और मरण के बीच करने योग्य काम को करना प्रारम्भ कर देता है, वही आगे चलकर महान् होता है।

आपसे पूछा जाय कि जीव का प्रथम उपकारी कौन तो आप क्या उत्तर देंगे? आप में से कई स्वाध्यायी हैं, उनको मालूम है कि जीव का पहला उपकारी है-सिद्ध। जब भी कोई जीव अव्यवहार-राशि से व्यवहार-राशि में आता है तो वह जीव आगे चलकर करणी करता करता हुआ सिद्ध, बुद्ध और मुक्त बन सकता है। इसलिए जीव का पहले-पहल कोई उपकारी है तो वे हैं सिद्ध भगवान।

फिर जीवन के उपकारी हैं-माता और पिता। आज हम उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के जन्म-दिवस के प्रसंग से उस महापुरुष का जीवन देखने का प्रयास कर रहे हैं। उपाध्यायप्रवर की मातुश्री का नाम था-छोटाबाईजी। व्यक्ति जो छोटा बनकर रहता है, वही आगे चलकर बड़ा बन जाता है। उपाध्यायप्रवर ने माता का नाम तो सार्थक किया ही, अपने पूज्य पिताश्री जिनका नाम था-अचलचन्दजी, उसे भी सार्थक किया।

गुणानुवाद-सभा में संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक मोफतराजजी मुणोत ने ठीक ही कहा-उपाध्यायप्रवर उपाधि को व्याधि मानते थे। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ने संघ व्यवस्था हेतु आचार्य और उपाध्याय पद दे दिए थे, गुरु हस्ती द्वारा प्रदत्त पद को दोनों महापुरुषों ने मान्य तो किया ही, निभाया भी और निभा भी रहे हैं, पर उपाध्यायप्रवर सदा छोटे बने रहे। कभी आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. चौमासा कहाँ करना है, पूछते तो उपाध्यायश्री मानचन्द्रजी म.सा. का उत्तर रहता कि आपश्री जहाँ उचित समझें, चौमासा खोल दें। मैं अपनी भावना कहूँगा तो फिर आपकी आज्ञा का पालन कैसे होगा? हमें तो संघनायक की आज्ञा की पालना करनी है। देखिए, उपाध्यायप्रवर के इस विचार से यह स्पष्ट आभास होता है कि वे छोटे बनकर तो रहते ही, अपने पिताश्री के नाम 'अचल' को पूरी दृढ़ता से-मजबूती से-स्थिरता से निभाते रहे। उस महापुरुष में छोटे बने रहने का भाव था तो अचलता भी थी। वे कभी विचलित नहीं हुए। केवल आज्ञा-अनुशासन में ही नहीं, व्रत-नियम में, समाचारी पालन में और संयम-साधना में भी वे अचल रहे।

आज दो बातें मेरे सामने दिखाई दे रही हैं, उनको कहने का मन है। देखिए, उपाध्यायप्रवर का काम होता है-पढ़ना और पढ़ाना। उन्होंने अपने जीवन में टीचिंग से शुरुआत की। वे भोपालगढ़ श्री जैन रत्न विद्यालय में पढ़ाते-पढ़ाते अनुभव का ज्ञान प्राप्त कर गये। शिक्षक

पढ़ाता है अक्षरों से और जीवन के अन्त तक उन्होंने अपने अनुभव से सबको पढ़ाने का ही काम किया।

दोस्ती प्राय: या तो अमीर से होती है या अनुभवी से। आपसे पूछा गया-दोस्ती किससे करना? अमीर से या अनुभवी से? अमीर से दोस्ती करने पर होटाल में खाना-पीना होगा, मौज-मजे होंगे और साधन-सुविधाओं का भोग-उपभोग भी हो सकेगा, लेकिन अनुभवी की दोस्ती से जीवन का वास्तविक ज्ञान हासिल होगा।

उपाध्यायप्रवर हाजिर-जवाबी थे। हम जब भी उनके अनुभवजन्य विचार सुनते, तो हमें स्वत: समाधान मिल जाता। उपाध्यायप्रवर कम बोलते-थोड़े शब्दों में समाधान दे देते थे।

मैंने कभी पढ़ा था कि एक व्यक्ति को कहीं बोलने के लिए निमन्त्रित किया गया। कितना बोलना है पूछने पर उसने बताया कि आपको घण्टे भर बोलना है। वक्ता ने कहा-ठीक है, आप जब कहेंगे, जहाँ कहेंगे, मैं घण्टे भर किसी भी विषय पर बोल दूँगा। उससे दूसरा प्रश्न किया गया-यदि आपको आधा घण्टा बोलना हो तो? जवाब में वक्ता ने कहा-आघा घण्टा बोलना है तो तैयारी के लिए मुझे पन्द्रह मिनट चाहिए। अगला प्रश्न हुआ-यदि आपको पाव घण्टा बोलना हो तो? वह बोला-पाव घण्टा बोलना हो तो तैयारी के लिए मुझे आधा घण्टा चाहिए। पूछते-पूछते पूछने वाले ने यहाँ तक पूछ लिया कि यदि आपको एक मिनट बोलना हो तो? वक्ता ने तुरन्त कहा-मुझे मिनट बोलना होगा तो तैयारी के लिए एक घण्टा चाहिए। यही बात है-उपाध्यायप्रवर का ज्ञान अनुभव का ज्ञान था और अनुभव के ज्ञान के कारण भले ही वे कम बोलते-थोड़ा बोलते और कभी-कभी तो संकेत-संकेत में काफी-कुछ कह जाते। इसीलिए तो वे युगों-युगों तक याद किए जाएँगे, गाए जाएँगे।

मैंने कहीं यह भी पढ़ा-'कम पढ़े-लिखे हो तो गाँव छोड़ दो और ज़्यादा पढ़े-लिखे हो तो देश छोड़ दो।' इसका क्या मतलब? कम पढ़े-लिखे गाँव छोड़कर शहरों में आकर रहने लगे हैं। उन्हें शहरों में काम-धन्धा मिल जाता है। जो ज़्यादा पढ़े-लिखे हैं उन्हें विदेशों में काम करने का अवसर मिल जाता है।

हाँ, तो मैं आपको बता रहा था कि टीचिंग का काम करते-करते उपाध्यायप्रवर ने जीवन की शुरुआत की। उनका अक्षर-ज्ञान आगे चलकर अनुभव का ज्ञान हो गया। एक ओर चीटिंग शब्द है तो दूसरी ओर टीचिंग शब्द को भी ध्यान में ले लें। टचिंग का मतलब होता है-स्पर्श। टचिंग का मलतब होता है-जुड़ाव। उपाध्यायप्रवर का ज्ञान टीचिंग का ज्ञान भी था तो टचिंग का ज्ञान होने से वे सबके साथ जुड़े हुए रहे। उनके पास जो भी दर्शन-वन्दन के लिए आता, वह उनका हो जाता। क्यों? तो वे हृदय से जोड़ने में माहिर थे।

आज आपमें से अधिकांश लोगों के हाथ में टच-मोबाइल है, पर हृदय से टच कितनों का है? उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य में जो भी आता, वे सबको अपने प्रेम से अपना बना लेते।

उपाध्याय का काम होता है-भ्रान्ति मिटाना और शान्ति लाना। भ्रान्ति मिटाने के लिए प्रेम देने की कला चाहिए। भ्रान्ति मिटेगी तो शान्ति स्वत: हो जाएगी। अशान्ति का कारण है-भ्रान्ति। उपाध्यायप्रवर के पास न जाने कहाँ-कहाँ के लोग अपनी समस्या का समाधान पूछते तो वे थोड़े शब्दों में अपनी मर्यादा में रहकर गूढ़ बात को सरल शब्दों में समझाकर आने वाले की समस्या का वाक् चातुर्य से समाधान कर देते।

उपाध्यायप्रवर संघ के मान थे, हम-सबके सम्मान थे। यहाँ, यह ध्यान रखें कि जहाँ मान नहीं होता, वहीं पर सम्मान होता है। आज क्या स्थिति है? आज कई लोग काम नहीं करते, पर नाम चाहते हैं। काम नहीं करने वालों की बात कोई सुनने को तैयार नहीं होता। और जो काम करते हैं उनका नाम तो होगा ही, लोग होकर उनका सम्मान भी करते हैं। उपाध्यायप्रवर के प्रति

हमारे मन में जो सम्मान है उसका कारण भी है कि वे मान से कोसों दूर रहते थे। आप गाते हैं, बोलते भी हैं-

मुनिवर मान महान् थे।
जिनशासन की शान थे।।

सचमुच, उपाध्यायप्रवर साधुता की पहिचान थे। क्यों? तो अक्षर-ज्ञान वालों में तो फिर भी अहंकार आ सकता है और जिसका अनुभव का ज्ञान है उनमें अहंकार का नामोनिशान नहीं रहता।

उपाध्यायप्रवर संघ की सारणा-वारणा-धारणा में आचार्यप्रवर को सहकार देते रहे। वे अनुशासन-प्रिय थे। अनुशासन में रहने वाला ही अनुशासन को आगे बढ़ाता है। आपने आर.एस.एस. जैसी संस्था का अनुशासन देखा होगा। वे जूते-चप्पल भी खोलेंगे तो लाइन में। अनुशासनहीनता व्यक्ति को बर्बाद तो करती है, संघ-समाज को भी नुकसान पहुँचाती है। आप-सब उपाध्यायप्रवर के जीवन से अनुशासन की सीख लें। व्यक्ति-व्यक्ति में अनुशासन होता तो घर-परिवार, संघ-समाज और देश में अमन-चैन आते देर नहीं लगेगी।

उपाध्यायप्रवर रत्नसंघ के पहले उपाध्याय रहे। उन्होंने पद को सुशोभित किया। आप-सबकी उपाध्यायप्रवर के प्रति गहरी श्रद्धा है, भक्ति है तो आप उनके अनेकानेक गुणों में से कोई एक गुण भी ग्रहण करेंगे तो आपका जन्म-दिवस मनाना सार्थक होगा। उपाध्यायप्रवर के जीवन के कई प्रसंग हैं, अनेक दृष्टान्त आप हम सबको ध्यान में हैं, लेकिन हम उनके जीवन से शिक्षा ग्रहण करेंगे तो हमारा जीवन उन्नत हो सकेगा। उपाध्यायप्रवर के सन्दर्भ में बहुत-कुछ कहा जा सकता है, लेकिन आपने-अपना समय जो निर्धारित किया है, वह हो गया है इसलिए मैं यह कहकर अपनी बात समाप्त करूँगा कि आप उपाध्यायप्रवर के अनुभव से सीखें और धर्म-साधना में आगे बढ़ें इन्हीं शुभ भावों के साथ....

अवसर है आया आज

श्री गजेन्द्र चौपड़ा

अवसर है आया आज गुरु गुणगान का,
जन-जन के पूज्यवर उपाध्याय श्री मान का।

वो शान्त सौम्य चेहरा हमेशा याद आएगा,
गुरुवर के गुणों की तो महिमा हर एक गाएगा।
नहीं था जवाब कोई, आपकी मुस्कान का,
गुण गाएँ हम सब उपाध्याय श्री मान का....।।

कर में रहती माला सदा आनन्द में रहते थे,
गुरुवर इसीलिए आप तो लाखों के चहेते थे।
यही था माध्यम उनकी विशिष्ट पहचान का,
गुण गाएँ हम सब उपाध्याय श्री मान का....।।

मांगलिक सुनने को आपकी हर कोई आतुर रहता,
सुन लेता मांगलिक तो खुद को धन्य-धन्य कहता,
दर्शन ही मांगलिक था रत्न संघ की शान का,
गुण गाएँ हम सब उपाध्याय श्री मान का....।।

सरलता थी जीवन में, नहीं कभी मान किया करते,
छोटे सन्तों का भी सदा सम्मान किया करते।
शासन दीपाया जिसने, गुरु हस्ती भगवान का,
गुण गाएँ हम सब उपाध्याय श्री मान का....।।

अन्तिम क्षणों में भी नहीं था एक पल का प्रमाद,
जो आया दर्शन को उन्हें मिल रहा था आशीर्वाद।
दृढ़ था मनोबल ऐसे महान् क्रियावान् का,
गुण गाएँ हम सब उपाध्याय श्री मान का....।।

धन्य हुई जोधाणा नगरी जहाँ पर आपने जन्म लिया,
दीक्षा भी यहाँ लेकर अन्तिम क्षण सफल किया।
बड़ा उपकार था जन-जन के भगवान का,
गुण गाएँ हम सब उपाध्याय श्री मान का....।।

कैसे गाऊँ महिमा, मेरी तो जुबान छोटी है,
गुण आपके उत्कृष्ट जैसे हिमालय की चोटी है।
छोटा-सा प्रयास किया है गजेन्द्र ने गुणगान का,
गुण गाएँ हम सब उपाध्याय श्री मान का....।।

-अध्यक्ष, श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर

ISSN 2249-2011

आचार्य हस्ती दीक्षा-शताब्दी

आचार्य हस्ती में गुरु-तत्त्व

डॉ. मंजुला बम्ब

जैनधर्म के तीन आराध्य तत्त्वों में देवतत्त्व के बाद दूसरा आराध्य गुरुतत्त्व है। भारतीय संस्कृति में गुरु की बहुत महिमा है। अरिहन्त या तीर्थङ्कर अथवा देव के बाद अगर कोई पूजनीय होता है तो गुरु ही होता है। अरिहन्त या तीर्थङ्कर प्रत्येक काल में प्रत्यक्ष विद्यमान नहीं होते। उनकी अनुपस्थिति में उनका प्रतिनिधित्व करने वाला गुरु ही होता है, देव की पहचान कराने वाला गुरु ही है।

अन्धकार में भटकते हुए, ठोकरें खाते हुए मनुष्य के लिए दीपक का जितना महत्त्व है, उससे भी बढ़कर महत्त्व है अज्ञान अन्धकार में भटकते हुए जिज्ञासु मानव के लिए गुरु का। जिज्ञासु और विनयशील मानव को गुरु ध्येय की पहचान कराता है। वीतरागता क्या है? और इस स्थिति पर पहुँचने के लिए क्या विधेय या आचरणीय है, इसे वे भली-भाँति समझाते और बतलाते हैं। ध्येय तक पहुँचने के लिए धर्म की सही राह गुरु बताते हैं, धर्म का स्वरूप समझाते हैं, धर्माचरण की प्रेरणा देते हैं; तथा धर्माचरण के दौरान जो विघ्न-बाधाएँ या कठिनाइयाँ आती हैं, उन्हें दूर करने के उपाय भी बताते हैं। कष्ट से घबराये हुए अनिष्ट संयोग और इष्ट वियोग से चिन्तित और शोक मग्न व्यक्ति को आश्वासन देते हैं, धैर्यपूर्वक उन्हें सहन करने की प्रेरणा भी देते हैं तथा निराश और निरुत्साह व्यक्ति का उत्साह बढ़ाते हैं उसमें साहस की बिजली भर देते हैं।

गुरु हस्ती धर्म और अध्यात्म के विषय में तथा समाज, संस्कृति और नीति के विषय में जिज्ञासु व्यक्तियों की शंकाओं के समाधान कर उन्हें धर्मानुप्राणित मार्गदर्शन देते थे। इस प्रकार वे स्व-पर कल्याण का, परोपकार का गुरुतर दायित्व निभाते थे। वे प्रत्येक विषय में प्रेरणा, निर्देश, उपदेश और मार्गदर्शन जो भी देते वह सब अहिंसा, सत्यादि शुद्ध एवं नीतियुक्त धर्म का पुट लिए हुए होता था।

गुरु हस्ती बुद्धिमान, शास्त्रज्ञ, लोकव्यवहार के ज्ञाता, निर्लोभी, प्रतिभावान, उपशमपरिणामी, आगे की बात को पहले ही जान लेने वाले, प्रश्नों से न घबराने वाले, पूर्व में उत्तर देने वाले सम्माननीय, जन-जन को आकर्षित करने वाले, पर निन्दा से रहित, गुण-निधान, मधुर शब्दों में धर्मकथा करने वाले, संशय रहित शास्त्रज्ञ शुद्ध आचरण वाले, धर्ममार्ग के प्रभावक, विद्वानों द्वारा प्रशंसित, लोकरीति मर्मज्ञ, मृदुस्वभावी, निःस्पृह तथा साधुप्रवरों के अन्य गुणों से युक्त अनेकानेक गुरुतत्त्वों से युक्त थे। वास्तव में ऐसे गुण सम्पन्न गुरु ही अनुभूत मार्ग पर स्वयं चलते हुए औरों को भी उस मार्ग पर चलाते थे। उनमें रागद्वेष, पक्षपात, ग्रन्थि या कामना नहीं थी, न ही साधना का अभिमान था। गुरुहस्ती ने 71 वर्ष के संयम-काल में आचार्य भगवन्त ने आचार्य, उपाध्याय तथा सन्तपदों का क्रियापूर्वक निर्वहन किया। 61 वर्ष तक आचार्य रहते हुए भी अपने को सदा 'संघ सेवक शोभा शिष्य हस्ती' ही लिखते थे। वे क्रोधादि कषाय विजेता एवं जितेन्द्रिय थे उनके जीवन में शान्ति के स्पष्ट दर्शन होते थे।

वे अनुशासनप्रिय थे, स्वयं गुरुचरणों के कठोर अनुशासन में रहकर उन्होंने शिक्षा और संस्कारों की विधि प्राप्त की थी। इसीलिए एक सैनिक की भाँति न केवल स्वयं अनुशासित जीवन जीते थे, किन्तु दूसरों को भी अनुशासन की प्रेरणा देते थे। वाणी से कम, व्यवहार से अधिक उनका जीवन अनुशासन की जीती जागती तस्वीर था।

'विज्जा-विणयसम्पन्ने' का शास्त्रीय आदर्श

उनके जीवन के कण-कण में मुखरित था। विद्या के साथ विनय, विनय के साथ विवेक, विवेक के साथ वाग्मिता, व्यवहार पटुता आदि अनेक दिव्य भव्य गुण गुरुदेव के रोम-रोम में थे। उनकी प्रतिभा बड़ी विलक्षण थी। भगवान महावीर आज होते तो अपने इस गुण-तत्त्वों से सम्पन्न शिष्य को आशुप्रज्ञ, दीर्घप्रज्ञ आदि कहकर सम्बोधित करते। अपने लक्ष्य की ओर चले-चलो, यही गुरु हस्ती के जीवन का मूलमन्त्र था।

गुरु का पद बहुत ही महत्त्वपूर्ण माना गया है। यह पद जितना बड़ा है उतनी ही इस पद की जिम्मेदारी बड़ी है। गुरुपद की महिमा का बखान करते हुए एक कवि ने कहा है-

अज्ञानतिमिरान्धानां, ज्ञानांजनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरुवे नमः।।

अर्थात् अज्ञान रूपी अन्धेरे के कारण अन्धे बने हुए लोगों की आँखें जिन्होंने ज्ञान रूपी अञ्जन आञ्जने की सलाई डालकर खोल दी, उन श्रीगुरु को मेरा नमस्कार हो।

'गुरु' शब्द का सामान्य अर्थ होता है भारी, अर्थात् जो अज्ञानान्धकार मिटाने की ज़िम्मेदारी के भार से युक्त हो अथवा सद्गुणों के भार के गौरव से युक्त हो। गुरु शब्द में दो अक्षर हैं 'गु' और 'रु' इन दोनों अक्षरों को भिन्न-भिन्न दो शब्द मानकर दोनों का समासयुक्त शब्द बनाया गया है गुरु। 'गु' शब्द का अर्थ है अन्धकार और 'रु' शब्द का अर्थ है निरोधक। दोनों शब्दों का मिला हुआ अर्थ हुआ अन्धकार का निरोधक। अर्थात् गुरु वह है जो शिष्य के अज्ञानान्धकार को मिटा दे।

प्रश्न यह है कि इस भावान्धकार को कौन मिटा सकता है? जो स्वयं यथार्थ ज्ञान से प्रकाशमान हो, वही दूसरों को प्रकाश देकर उनके अज्ञान तिमिर को मिटा सकता है। जिसमें ज्ञान का प्रकाश नहीं है, जो स्वयं काम, क्रोध, मद, मोह, मत्सर आदि दुर्गुणों का शिकार बना हुआ है, वह दूसरों के अज्ञान और मोह आदि को कैसे मिटा सकता है? जैसे प्रदीप स्व-पर-प्रकाशक होता है, इसी प्रकार गुरु भी स्व-पर प्रकाशक होता है। जिस प्रकार प्रदीप स्वयं ज्योतिर्मान होकर ही अन्य को ज्योति प्रदान करता है, अदृश्य या अव्यक्त पदार्थों को आलोकित करता है, इसी प्रकार गुरु हस्ती स्वयं ज्ञान और चारित्र से ज्योतिर्मान थे और अन्य को ज्ञान और चारित्र की ज्योति प्रदान करने के साथ-साथ हर समय हित शिक्षा देते ही रहते थे।

एक बार जयपुर में रामनिवास बाग से गुज़र रहे थे साथ में उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. थे। उस समय शेर गरज रहा था। आचार्य भगवन्त ने फरमाया- 'क्या बोलता है?' गुरुदेव से श्री मानचन्द्रजी म.सा. ने कहा कि- 'बाबजी! शेर गरज रहा है।' गुरुदेव बोले- 'मैं हूँ, मैं हूँ कहकर बता रहा है कि मैं पिञ्जरे में पड़ा हूँ। इसलिए मेरी शक्ति काम नहीं कर रही है। यह आत्मा भी शरीर रूपी पिञ्जरे में रही हुई है। आत्मा भी समय-समय पर हुंकारती है-मैं हूँ अर्थात् मैं अनन्त ज्ञान से सम्पन्न हूँ, मैं अनन्त दर्शन से सम्पन्न हूँ आदि-आदि।

इसी तरह एक बार भगवन्त सुबोध कॉलेज में खड़े थे। पास में पत्थर गढ़ने वाले व्यक्ति पत्थर गढ़ रहे थे। पत्थर गढ़ते वह कारीगर पानी छींट रहा था। गुरुदेव ने पूछा-'यह क्या कर रहा है?' पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. ने कहा कि-'काम कर रहा है।' गुरुदेव ने कहा कि-'पत्थर पर पानी डालकर नरम कर रहा है, पत्थर कोमल हो जायेगा तो गढ़ा जायेगा। वे हर समय जीवन-निर्माण की बात बताया करते थे। उनकी छोटी-छोटी बातों में भी कितनी बड़ी शिक्षाएँ होती थीं वे कुशल शिल्पाचारी थे।

आपश्री ने अपना सम्पूर्ण जीवन स्व-पर कल्याण में ही समर्पित किया। इसी के कारण आपश्री के सम्पर्क में आने वाला कोई भी व्यक्ति खाली नहीं लौटता था। सामायिक-स्वाध्याय, ध्यान, मौन, नैतिक उत्थान, कुव्यसन त्याग इत्यादि जीवन जीने की कला आपसे प्राप्त होती थी। आपश्री स्वयं भी ध्यान-मौन के साधक, अप्रमत्त जीवन यापन करने वाले, आकर्षक व्यक्तित्व

के धनी, असीम आत्मशक्ति के पुञ्ज, युगद्रष्टा, इतिहास मार्तण्ड, सामायिक-स्वाध्याय प्रणेता, चतुर्विध संघ पर सफल अनुशासक सिद्ध हुये थे। गुरु का उत्तरदायित्व मूलक लक्षण बताते हुए कहा गया है- **'गृणाति धर्मं शिष्यं प्रतीति गुरुः'** अर्थात् जो शिष्य को उसका धर्म बताता है, सिखाता है, वह गुरु है। कुमारप्रबन्ध में भी गुरु का उत्तरदायित्व मूलक अर्थ बताया गया है।

सत्त्वेभ्यः सर्वशास्त्रार्थदेशको गुरुरुच्यते। जो एकान्त हित बुद्धि से प्रेरित होकर जिज्ञासु जीवों को सभी शास्त्रों का सच्चा अर्थ समझाता है वही गुरु कहलाता है।

आचार्य श्री हस्ती चतुर्विध संघ के मुकुटमणि थे। वे व्यक्ति नहीं; संस्था नहीं; आचार्य नहीं; किन्तु युगपुरुष थे। उन्होंने युग की परिस्थितियों को देखा, समझा और पाटा। अपने गुरुत्व को बखूबी से निभाया। आप स्वयं बहुत विशिष्ट दर्जे के साहित्यकार थे और अपने शिष्य-शिष्याओं में भी यही गुण देखना चाहते थे। शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. से गुरुभगवन्त ने एक बार पूछा कि महासती मैनाजी, दिन को आप जो पढ़ती हैं, क्या रात्रि को सोते समय उसका स्मरण आपको होता है। उन्होंने कहा- 'हाँ भगवन्! मुझे दिन की पठित बातें रात को बहुत याद आती हैं।' गुरुदेव ने उनको प्रेरणा दी कि उसे सुबह उठते ही नित्यकर्म से निवृत्त होकर लिख लिया करना। और उन्होंने गुरु आज्ञा का अक्षरशः पालन किया। उन्होंने बतलाया कि- ''आज मैं जो कुछ हूँ चतुर्विध संघ के समक्ष हूँ, यह सब मेरी नहीं, उस घड़ने वाले महापुरुष की अनूठी कृपा दृष्टि का फल है।''

वास्तव में गुरु शिष्य का जन्मदाता नहीं, परन्तु माता-पिता से भी बढ़कर निर्माणकर्त्ता है। वह जीवन जीना सिखाता है यही कारण है कि माता-पिता की अपेक्षा भी गुरु के प्रति शिष्य विशेष ऋणी होता है। अलेक्जेण्डर मेसीडोन ने इसी बात का समर्थन करते हुए कहा कि- ''जीवन देने के लिए मैं अपने पिता का ऋणी हूँ, जिन्होंने मुझे अच्छी तरह जीवन जीना सिखाया।''

गुरु जीवन का महान् कलाकार होता है जैसे- भौंड़े, भद्दे, टेढ़े-मेढ़े खुरदरे पत्थर को लेकर मूर्तिकार अपनी छैनी एवं औजारों से काट-छीलकर सुन्दर मूर्ति बना देता है जो भविष्य में पूजनीय बन जाती है वैसे ही गुरु असंस्कृत, अनघड़, अप्रशिक्षित शिष्य को अपनी काया, वाणी और मन से घड़कर सुन्दर, स्वस्थ, सुसंस्कृत, प्रशिक्षित जीवन का रूप दे देता है। इसीलिए तिलोक काव्य संग्रह में गुरु को शिष्य के जीवन का सुधारक, निर्माणकर्त्ता एवं परम उपकारी बताया गया है।

जैसे कपड़ा को थान दर्जी बेतत आन
खण्ड-खण्ड करे जाण देत सो सुधारी है।
काष्ठ को ज्यों सूत्रधार, हेम को कसे सुनार,
माटी का ज्यों कुम्भकार पात्र करे त्यारी है।।
धरती के किरसान, लोह के लुहार जान,
शिलावट शिला आन, घाट घड़े भारी है।
कहत तिलोकरिख सुधारे ज्यों गुरु सीख,
गुरु उपकारी नित लीजे बलिहारी है।।

भावार्थ स्पष्ट है कि जैसे दर्जी कपड़े का थान लेकर पहले नाप लेता है फिर काटकर सींता है, इसी प्रकार कपड़े को सुधारता है, काष्ठ को काट-छीलकर, बढ़ई अच्छी वस्तुएँ बनाता है, सुनार सोने को काट-पीटकर गहने बनाता है, कुम्हार मिट्टी को सान-गूँदकर बर्तन बनाता है, किसान भूमि को समतल करता है, लुहार लोहे को तथा सिलावट शिला को काट-छीलकर अनेक रूप देता है, वैसे ही पितृ-हृदय लेकर उपकारी गुरु शिष्य को अनुशासन, प्रशिक्षण, भूल-सुधार आदि से घड़ता है, उसे तैयार करता है। उसी प्रकार गुरुदेव ने अपनी सन्त-सती सम्पदा के जीवन-निर्माण में कोई सर्वोत्कृष्ट-प्रशिक्षण देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। जोकि आज सब कुछ हमारे सम्मुख है।

गुरुदेव ने शिक्षा की अनिवार्यता को महत्त्व प्रदान करते हुए फरमाया कि जीवन में शिक्षा के अभाव में साधना अपूर्ण मानी गई है। शिक्षा का वही महत्त्व है जो

शरीर में प्राण, मन और आत्मा का है। जीवन में चमक-दमक, गति-प्रगति, व्यवहार-विचार सब शिक्षा से ही सुन्दर होते हैं। संसार की सब उपलब्धियों में शिक्षा सबसे बढ़कर है। दीक्षा के साथ भी शिक्षा अनिवार्य है। यही कारण है कि आज शिष्य-शिष्याओं एवं श्रावक-श्राविकाओं में स्वाध्याय-साधना रूपी शिक्षा का अनमोल खजाना मिला है।

विक्रम सम्वत् 2041 के जोधपुर चातुर्मास में क्षमापना के उपलक्ष्य में युवाचार्य महाप्रज्ञ रेनबो हाउस पधारे, तब उन्होंने कहा था कि लोग कहते हैं कि आप अल्पभाषी हैं, कम बोलते हैं, पर कहाँ हैं आप अल्प भाषी? आप बोलते हैं, बहुत बोलते हैं। आपका जीवन बोलता है, संयम बोलता है, आपमें निहित गुरुत्व बोलता है।

आप संघ में रहे तब भी एवं बाहर रहे तब भी सभी महापुरुषों का आपके प्रति समान आदर का भाव रहता था। आचार्य श्री आत्मारामजी म.सा. गुरु हस्ती के लिए 'पुरिसवरगन्धहत्थी' पद का प्रयोग करते थे। आचार्यश्री आनन्दऋषिजी म.सा. समय-समय पर समस्या का समाधान माँगते थे। आचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा. स्वयं को साहित्य के क्षेत्र में लगाने में आपका उपकार मानते थे। प्रवर्तक श्री पन्नालालजी म.सा. आपको विचारक एवं सहायक मानते थे और प्रत्येक स्थिति में साथ रहे। आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा. ने आपको सिद्धान्तवादी एवं परम्परावादी माना।

आप गुणप्रशंसक और गुणग्राहक रहे। आप प्रचार के पक्षधर थे, किन्तु आचार को गौण करके प्रचार के पक्ष में नहीं रहे। जिनके मन में गुरु बसते हैं वे शिष्य धन्य हैं, पर जो गुरु के मन में रहते हैं जिनकी प्रशंसा शोभा गुरु करते हैं, वे उनसे भी धन्य-धन्य हैं। आपने संघ के संगठन, संचालन, संरक्षण, संवर्धन, अनुशासन एवं सर्वतोमुखी विकास तथा अभ्युत्थान हेतु जीवन समर्पित कर दिया।

ऐसे लाखों-करोड़दिल के आसमान पर चमकने वाला अध्यात्म पुञ्ज आज भौतिक रूप से हमारे मध्य नहीं है, किन्तु अपनी शिक्षाओं, प्रेरणाओं और जीवन से जुड़ी स्मृतियों के रूप में वे आज भी हमारे जीवन को आलोकित किये हुए हैं।

सोने से जीवन में तेरे
शुभ तीन रत्न ये चमक उठे।
अनुगामी हो तुम वीतराग के
जैन जगत् में दमक उठे।।

जन-जन के चिन्तन चिराग गुरु हस्ती के 110वें जन्म दिवस पर मंजुला का शत-शत नमन अभिनन्दन।

हेम-मन्जुल, 567, छठी लेन, वाल्मीकि मार्ग,
राजापार्क, जयपुर-302004 (राजस्थान)

गुरु मान प्यारे हैं.....

(तर्ज :: क्या खूब लगती हो........)

श्री धर्मचन्द जैन

गुरु मान प्यारे हैं, जन-जन उजियारे हैं।
संसार सागर से, हमें तारण हारे हैं।।
गुण दर्शन-वर्णन-धारण, सिखलाने वाले हैंऽऽऽ...
गुरु मान प्यारे हैं..................
छोटा माता के नन्दन, हाँ नन्दन
पितु अचल के जो है, श्रेयस चन्दन
गुरु हस्ती से संयम ले, मुक्ति लक्ष्य लिया
ज्ञान, दर्श, चारित्र से, जीवन सफल कियाऽऽऽ
स्वाध्याय ध्यान सेवा, समता के नजारे हैं।
गुरु मान प्यारे हैं..................
जो शान्त दान्त गम्भीरा-गम्भीरा,
चौथे पद को सुरभित है कर दीना,
सहज, सरल, सन्तोशी, जीवन है जिनका
जोधाणा में सौरभ छाया है इनका, ऽऽऽ
साधकता फलती रहे, अरमान हमारे हैं।
गुरु मान प्यारे हैं..................

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

ISSN 2249-2011

आचार्य हस्ती दीक्षा शताब्दी

सामायिक का स्वरूप

श्री अरूण मेहता

सामायिक : समभाव की साधना

समभाव की साधना को सामायिक कहते हैं। समभाव क्या? अनुकूल और प्रतिकूल दोनों परिस्थितियों में समान रहना, शान्त रहना, प्रभावित नहीं होना, उद्वेलित नहीं होना, अच्छा-बुरा नहीं मानना, सम रहना।

आज चारों ओर विषमता का वातावरण है, जिसके कारण सभी व्यक्ति दुःखी हैं। दुःख का कारण आर्थिक विषमता नहीं है, मानसिक विषमता है। आर्थिक विषमता अगर दुःख का कारण होती तो सभी सम्पन्न व्यक्ति सुखी होते, जबकि वस्तु स्थिति इसके एकदम विपरीत है। अमेरिका जैसे सम्पन्न देश में दुःखी एवं तनावग्रस्त व्यक्ति ज़्यादा है। नींद की गोलियाँ सबसे ज्यादा वहीं बिकती हैं। यह मानसिक विषमता सामायिक की साधना से ही समभाव लाकर मिटायी जा सकती है।

मन की स्थिति को सम बनाने के लिए, 18 पापों का त्याग करने के लिए, सभी पापकारी प्रवृत्तियों का (सावद्य योगों का) त्याग करने के लिए मन को पवित्र बनाने के लिए, मोक्ष प्राप्त करने का अनुष्ठान है-सामायिक। यह वह साधना है, जिसे पूर्ण सम्पन्न कर आत्मा परमात्मा बन सकता है।

संयमी के जीवनकाल पर्यन्त सामायिक होती है। वे सन्त-मुनिराजजी, महासतीजी धन्य-धन्य हैं जो यावज्जीवन सामायिक में रहते हैं। यदि आजीवन सामायिक न बने तो दो घड़ी (48 मिनट) का साधुपन तो हम सबके जीवन में नित्य हो। गृहस्थ (श्रावक-श्राविका) विषय-कषाय में रहते हुए भी कुछ समय के लिए तो समभाव की उपलब्धि कर सकें, उपलब्धि का प्रयास कर सकें, राग-द्वेष को घटा सकें, इसलिए श्रावक-श्राविकाओं को सामायिक करने की प्रेरणा एवं शिक्षा गुरु हस्ती सहित सभी आचार्यों-गुरुओं द्वारा दी गई है, दी जा रही है।

कुछ लोग ऐसा सोचते-समझते हैं कि सामायिक में कोरा अकर्मण्य होकर बैठना है। किन्तु ऐसा सोचना सही नहीं है। सामायिक व्रत की आराधना में सावद्य (पापकारी) प्रवृत्ति के त्याग से आस्रव (पापों के आने का रास्ता) रुकता है तो इसमें स्वाध्याय, ध्यान, जप आदि निर्दोष प्रवृत्तियाँ करने से संवर-निर्जरा होती है। सामायिक-साधना निजघर में रहना है, आत्मघर में रहना है, जबकि सामायिक में नहीं रहना परघर में रहना है, बेघरबार रहना है।

सामायिक वह धार्मिक क्रिया है, जिसके साथ हम अन्य धार्मिक क्रियाओं को भी कर सकते हैं। जैसे स्वाध्याय, ध्यान, प्रतिक्रमण, माला जपना आदि-आदि। जैनधर्म की सामायिक की साधना में इतनी क्षमता है कि यदि 48 मिनट तक लगातार शुद्ध समभावपूर्वक सामायिक की जाए तो व्यक्ति मात्र 48 मिनट में अपने ज्ञानावरणीय आदि चारों घाती कर्मों को क्षय करके केवलज्ञान-केवलदर्शन प्राप्त कर सकता है, केवली बन सकता है। जिनवाणी का हमारे ऊपर उपकार है, जिससे हमें सामायिक का महत्त्व जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, तो क्यों न हम इसकी साधना में आगे कदम बढ़ा, नित्य प्रति सामायिक की साधना करें, अधिक से अधिक सामायिक की साधना करें।

प्रातः सन्ध्या सामायिक हो,
व्याख्यान में भी सामायिक हो।

कम से कम एक मुहूर्त्त का,
नियम सदा का धारण हो।।

द्रव्य सामायिक से भाव-सामायिक

परिपाटी के रूप में, बिना अन्तरंग उपयोग के, चञ्चल मन से, दोषयुक्त जो सामायिक की जाती है वह **द्रव्य सामायिक** है, जबकि शुद्ध मन से, समभावपूर्वक, अन्तरंग उपयोग सहित, जो निर्दोष सामायिक की जाती है वही **भाव सामायिक** होती है। भाव सामायिक से ही लक्ष्य की प्राप्ति सम्भव होती है। लेकिन हमें कभी भी ऐसा नहीं सोचना या कहना चाहिए कि द्रव्य सामायिक करने से तो सामायिक नहीं करना ही अच्छा है। द्रव्य सामायिक ही हमें धीरे-धीरे भाव सामायिक की ओर ले जाती है। द्रव्य सामायिक भाव सामायिक की सहायक है। द्रव्य सामायिक के बिना भाव सामायिक की प्राप्ति नहीं की जा सकती है। द्रव्य सामायिक वह ऊर्वरा भूमि है जिस पर भाव सामायिक की लहलहाती फसल प्राप्त की जा सकती है। हमारा प्रयास निरन्तर द्रव्य सामायिक से भाव सामायिक की ओर अग्रसर होते रहना होना चाहिए। दुर्लभ मानव जीवन का सदुपयोग सामायिक करने में है।

श्रावक त्रिकाल सामायिक करने वाला होता है-सुबह-दोपहर-शाम। सतत साधना एक दिन अवश्य ही शुद्ध सामायिक की प्राप्ति करायेगी, भले ही प्रारम्भ में चञ्चलता क्यों न बाधक बनती हो। सामायिक 32 दोषों (10 मन के, 10 वचन के, 12 काया के) से बचकर करना चाहिये। सामायिक छोटा-बड़ा घर का प्रत्येक सदस्य करे। हमारे माता-पिता और गुरुजनों ने हमें सामायिक के संस्कार दिये। अगर हम हमारे बच्चों को सामायिक के संस्कार नहीं देते हैं तो हम अपने कर्तव्य से विमुख हो रहे हैं। हमें कर्तव्य परायण बनना है। मात्र बच्चों का पालन-पोषण करके, अपनी इतिश्री नहीं समझनी है। उनमें सामायिक-स्वाध्याय के संस्कार भरकर अपने कर्तव्यों का पालन करना है। इसी से हम गुरु हस्ती-हीरा की शिक्षा को अपने जीवन में, अपने घर में आचरित कर सकेंगे।

सामायिक हमारा व्यक्तिगत धर्म बने।
सामायिक हमारा परिवार धर्म बने।
सामायिक हमारा समाज धर्म बने।
सामायिक हमारा गाँव/नगर धर्म बने।

सामायिक में हम 48 मिनट (एक मुहूर्त्त) के लिए 10 पापों का त्याग करते हैं, तो रोज 23 घण्टों (29 मुहूर्त्त) के लिए भी हमारे पाप घटने चाहिए। हमारा ऐसा प्रयास ही सामायिक का सच्चा स्वरूप है। नित्य सामायिक करने वाले का जीवन इतना सरल, इतना पापभीरू, इतना सजग होना चाहिए कि हम सामायिक के समय के अतिरिक्त समय में भी इन पापों से अधिक से अधिक बचते रह सकें। जैसे दवाई की 1 गोली 24 घण्टे तक असर करती है वैसे ही हमारी एक सामायिक का भी हम पर पूरे दिन असर रहना चाहिए। इस प्रकार हमारी सामायिक की साधना शुद्धतर होती जायेगी।

सामायिक की शुद्धि

सामायिक द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव की शुद्धि के साथ करनी चाहिए।

द्रव्य शुद्धि-जिन उपकरणों की सहायता से सामायिक की जा रही है, वे सादे, स्वच्छ एवं शुद्ध होने चाहिए। हमारे भावों को बढ़ाने में ये उपकरण सहायक होते हैं। सामायिक के उपकरण अधिक मूल्यवान एवं अधिक आकर्षित करने वाले नहीं होने चाहिए, क्योंकि ऐसे उपकरणों से हमारा तथा अन्य सामायिक साधकों का ध्यान बँटता है, विषम होता है तथा इनकी सुरक्षा की भी चिन्ता-फिक्र करनी पड़ती है। सामायिक साधना हेतु हमारा चित्त (मन) शान्त होना चाहिए। सामायिक विधिपूर्वक एवं वेशभूषा में करने तथा पारने से द्रव्य शुद्धि बनी रहती है।

क्षेत्र शुद्धि-समता की साधना करने के लिए

अगर विषमता भरे क्षेत्र में बैठेंगे तो समता कैसे प्राप्त की जा सकेगी। जैसे व्यापार करने का स्थान दुकान है, व्यवसाय करने का स्थान ऑफिस है, पढ़ाई करने का स्थान स्कूल-कॉलेज है उसी तरह से सामायिक की साधना करने का स्थान भी उचित और नियत होना चाहिए। स्थानक में अथवा घर में नियत स्थान में बैठकर सामायिक करना क्षेत्र की शुद्धि है।

काल शुद्धि-वैसे तो सामायिक कभी भी की जा सकती है, लेकिन जैसे शरीर की आवश्यक क्रियाओं का, दवाई लेने का, भोजन करने का समय लगभग नियत होता है उसी तरह से सामायिक भी नियत समय पर करना श्रेयस्कर है। समय नियत नहीं करेंगे तो सामायिक करना टलता चला जायेगा और सामायिक से वञ्चित भी रहना पड़ सकता है। घर में, परिवार के सदस्यों को अगर कोई सेवा की या सहायता की अपेक्षा है उस समय उसकी उपेक्षा करके सामायिक करना काल की शुद्धि नहीं कहलायेगा। विवेकपूर्वक उचित और नियत समय पर सामायिक साधना करना काल की शुद्धि है।

भाव शुद्धि-जिस प्रकार बुखार आने पर दवाई लेते हैं और देखते रहते हैं कि दवाई से बुखार कितना कम हुआ, दवाई से लाभ हो रहा है या नहीं, उसी तरह से सामायिक की साधना से भी समभाव की प्राप्ति का अवलोकन करते रहना चाहिए। हमारे विषम भाव कितने कम हुए तथा समभाव कितने आये, इसका निरन्तर चिन्तन करते रहना, ध्यान रखना भाव शुद्धि कहलाता है। समभावों को बढ़ाते रहना भाव शुद्धि है।

सामायिक में स्वाध्याय

सामायिक में अधिक से अधिक स्वाध्याय करना श्रेयस्कर है। इससे हमारी समता की साधना के साथ-साथ ज्ञान वृद्धि भी हो सकेगी। ऐसा करके ही हम गुरु हस्ती के **'सामायिक-स्वाध्याय महान्'** के नारे को सार्थक बना सकते हैं, अपने जीवन में चरितार्थ कर सकते हैं। (जीवन उन्नत करना चाहो तो, सामायिक साधन कर लो।)

सामायिक से लाभ

1. सामायिक में श्रावक साधु की तरह होता है।
2. सामायिक में विषय-कषाय का त्याग होता है।
3. सामायिक में निद्रा, प्रमाद, 4 विकथा एवं 4 संज्ञाओं का त्याग होता है।
4. सामायिक में सावद्य योगों से बचा जाता है।
5. सामायिक से समभाव की प्राप्ति होती है।
6. सामायिक समाज सुधार का साधन है।
7. सामायिक में आत्म-शक्ति का अनुभव होता है।
8. सामायिक से आत्म-शक्ति का विकास होता है।
9. सामायिक से चित्त निर्मल बनता है।
10. अनुकूल-प्रतिकूल को सहने का सामर्थ्य प्रकट होता है।
11. स्व-पर, नित्य-अनित्य की विवेक दृष्टि जाग्रत होती है।
12. सामायिक में ज्ञाता-द्रष्टा भाव जाग्रत होता है।

सामायिक के अतिचार या दूषण

सामायिक में दोष लगाना, विपरीत आचरण करना आदि सामायिक के अतिचार हैं, जो पाँच हैं-

1. **मन का अशुभ व्यापार**-सामायिक के समय मन में ऐसे विचार नहीं आने चाहिए जो सदोष या पापयुक्त हों। मन में गर्व, क्रोध, कामना, भय आदि को स्थान देना मानसिक दोष है जो सामायिक को मलिन बना देता है।
2. **वचन का अशुभ व्यापार**-सामायिक में संसार की, व्यापार-व्यवसाय की बातें करना, राग-द्वेष बढ़ाने वाली बातें करना, चार प्रकार की विकथाएँ करना, वचन का दुष्प्रणिधान है, जो

सामायिक को सदोष बनाता है।

3. **शरीर से अयतना का व्यवहार-** सामायिक में इधर-उधर घूमना, बिना देखे या पूंजे चलना, धम-धम कर जल्दी-जल्दी चलना, अनावश्यक हाथ-पैर फैलाना आदि काया के दुष्प्रणिधान हैं, जो सामायिक के दोष हैं।
4. सामायिक के काल में स्मृति न रहना कि मैं सामायिक की साधना में हूँ और उस दौरान कोई पापकारी प्रवृत्ति कर लेना भी सामायिक का दोष है।
5. सामायिक के काल में करने योग्य कार्य न करना, न करने योग्य कार्य को कर लेना, प्रमाद करना आदि भी सामायिक के दोष हैं जो सामायिक को सदोष बनाते हैं।

उपर्युक्त पाँचों अतिचारों से बचकर सामायिक करना श्रेयस्कर है इसका बराबर ध्यान रखकर निर्दोष सामायिक करने का लक्ष्य होना चाहिए।

जिन्दगी भर का कमाया, साथ में क्या जायेगा।
इस धरा का इस धरा पर सब धरा रह जायेगा।।
बीतने वाली घड़ी को कौन लौटा पायेगा।
यह सुअवसर खो दिया तो अन्त में पछतायेगा।।

सामायिक के प्रकार

सम्यक्त्व सामायिक-सम्यक्त्व प्राप्त होने पर अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ तथा मिथ्यात्व मोहनीय, मिश्र मोहनीय और सम्यक्त्व मोहनीय इन सात प्रकृतियों का क्षय, उपशम या क्षयोपशम हो जाता है। परिणामस्वरूप जीव को तीव्र राग-द्वेष आदि विषमभावों से मुक्ति मिल जाती है। अनन्त संसार का बन्ध रुक जाता है। सम्यक्त्व की स्थिति में साधक वस्तु-स्वरूप का ज्ञाता हो जाता है। वह राग-द्वेष आदि विकारों में ज्यादा नहीं उलझता है। अपने समभाव को बढ़ाने का प्रयास करता है। इस अपेक्षा से सम्यक्त्व को सामायिक का प्रथम प्रकार माना गया है। सम्यक्त्व धर्माचरण की नींव है। ज्ञान और क्रिया का भव्य महल इसी नींव पर खड़ा किया जा सकता है। सम्यक्त्व सामायिक सभी प्रकार की सामायिक का आधार स्तम्भ है। इसी पर श्रुत और चारित्र सामायिक का टिकना सम्भव है।

श्रुत सामायिक-श्रुत से ज्ञान-विज्ञान उत्पन्न होता है, जो मन की तथा आत्मा की विषमताओं को गला देता है, नष्ट कर देता है। इसलिए श्रुताराधन को सामायिक की संज्ञा दी गई है। श्रुत सामायिक से यानी श्रुत आराधन से जड़ चेतन का, स्व-पर का परिज्ञान होता है। श्रुत सामायिक में शास्त्रों का विधिपूर्वक, मर्यादापूर्वक, काल-अकाल देखकर अध्ययन करना, उनके मर्म को समझना तथा शास्त्रज्ञान से अपने आपको समृद्ध बनाते हुए अपने सम्पर्क में आने वालों को भी श्रुतज्ञान से लाभान्वित करना समाहित है।

चारित्र सामायिक-सम्यक्त्व सामायिक एवं श्रुत सामायिक से समृद्ध होकर जो साधक सावद्य योगों का (पापकारी प्रवृत्तियों का) त्याग करता है, उसे चारित्र सामायिक कहते है। अणगार और आगार की अपेक्षा से इसके दो भेद किये गये हैं।

-पूर्व महामन्त्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,
467-ए, 7 वीं 'ए' रोड़, सरदारपुरा,
जोधपुर-342003 (राज.)

जो व्रत अंगीकार कर नैतिकता और प्रामाणिकता को अपने जीवन में उतारकर जीवन व्यवहार करता है उसका जीवन बहुत अच्छी तरह से चलता है। कोई भी आ जाये, उसको किसी प्रकार का पाप और भय नहीं होता है।

-उपाध्याय श्री मान

ISSN 2249-2011

संस्मरण

प्रत्युत्पन्नमति, लघुता एवं सेवा की प्रतिमूर्ति थे उपाध्यायप्रवर

श्री विमलचन्द डागा

प्रभु महावीर की आदेय अनुपम वाणी उत्तराध्ययन सूत्र (5-18) में वर्णन आता है-

मरणं पि सपुण्णाणं, जहा मेयमणुस्सुयं।
विप्पसण्णमणाघायं, संजयाणं वुसीमओ।।

जैसा कि मैंने परम्परा से सुना है कि-इन्द्रियों को वश में करने वाले पुण्यशालियों का मरण एवं जीवन भी अति प्रसन्न एवं आघात रहित होता है।

उपाध्याय भगवन्त उपर्युक्त गाथा को चरितार्थ करते हुए, अपने संयमी जीवन में सहजता, तेजस्विता की रश्मियाँ बिखेरते हुये समाधिमरण को प्राप्त हो गये।

मानसरोवर का यह राजहंस वैमानिक देवों के स्थल की ओर उड़ गया और हमें शिक्षा दे गया कि तुम भी ऐसी ही सहजता से, सरलता से, निपुणता से संयम पालोगे तो, आराधना करोगे तो इसी तरह की उड़ान भर आगामी भद्रता को सुनिश्चित करोगे।

जोधपुर का शक्तिनगर स्थानक उनके प्रयास से तीर्थस्थली बना हुआ था। मात्र वहाँ ही नहीं, अपितु भारतवर्ष की भाविकजनों पर उनकी स्मृतियाँ सदैव अंकित रहेंगी।

पाँच समिति तीन गुप्ति का निर्मल पालन करने के साथ सेवा भावना उनकी ओजस्वी वाणी का मुख्य स्रोत था। यही कारण था कि उनके वचन सिद्ध थे, दर्शन विघ्न हारक थे, प्रवचन हृदय में सहजता से उतर जाते थे।

उपाध्याय भगवन्त का गुण हम प्रतिक्रमण में बोलते हैं कि 'मनुष्य या देवता जिनको छलने में समर्थ नहीं' वैसे ही उपाध्याय भगवन्त की संयम की पर्यायों को (पूँजी को) कोई हर नहीं सकता था। प्रत्युत्पन्नमति उपाध्याय भगवन्त उठने वाले विवादों को सहज सुलझा दिया करते थे।

आगरा रोड़ की ओर विहार करते हुये एक बार ऐसे स्थान पर ठहरना हुआ जहाँ दिगम्बर परम्परा के युवा सन्त थे। उनका ज्ञान अंगडाइयाँ लेने लगा और भगवन्त के पास आकर अनेक तर्क रखने लगे कि स्त्रीवेद से मोक्ष नहीं जाया जा सकता। भगवन्त बहुत देर तक उनकी बात सुनते रहे फिर बोले मुनिजी मोक्ष न तो स्त्रीवेदी को होता है न ही पुरुष वेदी को वह तो अवेदी को होता है। मुनि के पास कोई उत्तर नहीं था। वे ज्ञान की गहराई को एक झटके में समझ गये और वार्ता को समेट लिया।

ऐसे ही एक श्रावक आये बोले कि भगवन्! एकान्त में बात करनी है तो कहा भाई! मुझमें कोई कमी है तो एकान्त में क्यों, सबके सामने बताओ और इसके अलावा गृहस्थी एकान्त में बात करते हैं वैसी बातें मुझे करनी नहीं। कहने का तात्पर्य है कि वे चारित्र के पर्यवों को पूँजी को बड़े सहेज कर रखते थे।

उनका सबसे बड़ा गुण था लघुता का। बड़े थे पर सदैव लघु बनकर रहे, जिससे कि उनकी आत्मा भी कर्मों के बोझ से हल्की और हल्की होती जाए। प्रसंग वर्तमान आचार्य के चादर महोत्सव का था बड़ा ऊहापोह चल रहा था कि जय पहले किसकी बोली जाये रत्नाधिक की, उपाध्याय भगवन्त की या आचार्य भगवन्त की। ऊहापोह के बीच स्वयं उपाध्याय भगवन्त सम्पूर्ण सभा को सम्बोधित करते हुये बोले कि जय आचार्य भगवन्त की पहले बोली जायेगी। उन्हीं की जय में सभी सन्त भगवन्तों की जय का समावेश हो जायेगा। उनकी लघुता और आचार्य भगवन्त का उनके प्रति सम्मान का यह दृश्य वर्तमान परिवेश का विरल उदाहरण है और यही कारण रहा है कि इन दोनों महापुरुषों ने सूर्य चन्द्र सम जिनशासन को देदीप्यमान किया, शासन की की महती प्रभावना की।

ज्ञान, क्रिया, लघुता के साथ सेवा का अद्भुत गुण था उन महापुरुष में। उनकी सेवा को देख श्रद्धेय आचार्य श्री नानालालजी म.सा. के मुख से सहज निकला कि आपका नाम मानमुनि नहीं विनयमुनि होना चाहिये। श्रद्धेय श्री लक्ष्मीचन्दजी म.सा. ने बाबाजी की सेवा का उत्कृष्ट उदाहरण रखा जिसकी खुशबू सुन श्रद्धेय कड़कमिश्रीजी म.सा. लब्ध प्रतिष्ठ सेठ मोहनलालजी चोरड़िया चेन्नई को बोले चौथे आरे की बानगी देखनी हो तो घोड़ों के चौक स्थानक में जाकर श्री मानमुनिजी म.सा. के दर्शन करो।

वह महापुरुष कोई एक सम्प्रदाय के नहीं थे, अपितु सम्प्रदाय अतीत सम्पूर्ण जैन जगत् के थे। हर सम्प्रदाय के श्रावक उनके यहाँ ही खिंचे चले आते, दर्शन करते तो सहज ही मन श्रद्धा से सरोबार हो जाता। और श्रावक जितना-जितना उनके नज़दीक जाता उसकी शासन पर, सन्तों पर श्रद्धा उतनी-उतनी प्रगाढ़ हो जाती। मात्र श्रावक ही नहीं अन्यान्य सम्प्रदाय के मूर्धन्य आचार्य भी आपश्री के दर्शन करने पधारते थे। अभी निकट में श्रुतधर श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा., आचार्यप्रवर श्री रामलालजी म.सा. अपने मुनि मण्डल सहित दर्शनार्थ पधारे एवं उत्तर भारतीय बहुश्रुत श्री जयमुनिजी म.सा. आदि ठाणा दर्शनार्थ पधारे तथा अपनी अभिव्यक्ति देते हुए प्रवचन में फरमाया कि अन्य स्थानों पर तो फॉरमलिटी से गया हूँ पर यहाँ क्वालिटी से आया हूँ। अन्त समय में भी 7 मिनट के संथारे के साथ देहावसान हुआ।

बन्धुओं 7 लव में (यानी 4 मिनट लगभग में) 33 सागर जितने कर्म खपा सकते हैं। 7 मिनट की साधना के ये पल उनके साधक जीवन के शिखर पल थे। जहाँ उन्होंने बड़ी सहजता के साथ बिना कोई टंटा लगाये देह को त्याग दिया। यह प्रतिफल उनकी दीर्घ संयम-साधना का था।

एक बार उन्हें रात्रि को बहुत तेज बुखार हो गया। श्रावकों ने बहुत निवेदन किया कि सिर पर गीला वस्त्र लगा देवे जिससे बुखार कम हो जाएगा। उन्होंने स्पष्ट मना कर दिया और साथ ही यह भी कहा कि दीक्षा लेने के बाद कटि (नाभि के ऊपर) के हिस्से में कभी पानी लगाया नहीं क्यों यह दोष संयम में लगाऊँ। गुरु हस्ती ने उनसे जब शासन की आगे की व्यवस्था के लिए पुछवाया तो उन्होंने यही निवेदन किया कि मैं उपाधि में नहीं समाधि में जीना चाहता हूँ। उपाध्यायप्रवर फरमाते कि स्थानकवासी सन्तों के पास ज्ञान क्रिया का धन तो है ही पर साथ ही मांगलिक और दया पालो कहने का बहुत बड़ा आकर्षण है।

मुझ पर, परिवार पर, जयपुर श्री संघ पर उनकी असीम कृपा थी। पूछने लगे नवरत्नमल सा कोठारी उनके जीवन की समाधि के बारे में तो सहज ही कहा (पास खड़ा था मैं) कि इससे पूछ लेना मेरे जीवन के बारे में, इसे सब ध्यान है। यही हमारी पुण्यवाणी रही कि हमें महापुरुष की सेवा-दर्शन का अवसर प्राप्त हुआ। ऐसे महान् विभूति के देहावसान से दिव्य ज्योति हमारे सामने से ओझल भले ही हो गई है, परन्तु उनकी स्मृतियाँ सदैव हृदय पटल पर अंकित रहेंगी।

-1370, ताराचन्द नायब का रास्ता, होटल एल.एम.बी. के पीछे, जौहरी बाजार, जयपुर-302003 (राज.)

धोवन पानी हेतु निःशुल्क राख उपलब्ध

(धोवन पानी निर्दोष ज़िन्दग़ानी)

सम्पूर्ण भारत में कहीं भी धोवन पानी हेतु राख डाक/कोरियर द्वारा (2 पैकेट) निःशुल्क भिवायी जाती है। राख मँगवाने के लिए अपना नाम, पता, पिनकोड़ सहित लिखकर मोबाइल नम्बर 77427-31886 या 94797-05060 पर एस.एम.एस. करें। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-जैन धार्मिक पाठाशाला कार्यालय, जोधपुर (राज.) अक्षय जैन

ISSN 2249-2011

संस्मरण

दया पालो! आनन्द है! शब्दों से मन को सुकून मिलता था

श्री दिलीप कुमार जैन

विक्रम सम्वत् 2056 (सन् 1999) में हमारे नन्हे-नन्हे कदम सवाईमाधोपुर स्थित महावीर भवन की ओर दिन में चार-पाँच बार सहज ही चल पड़ते थे। सुबह उठे कि बस दिमाग में एक ही छवि, स्कूल से आये, बस वही उत्कट अभिलाषा, दोपहर की वाचनी का समय हो, सायंकालीन प्रतिक्रमण में मांगलिक और पच्चक्खाण के स्वर कानों में पड़ जाएँ, रात्रिकालीन ज्ञान चर्चा के पश्चात् हाथ मेरे सिर पर रख दे, ऐसे सोच-विचार उन समतामूर्ति महापुरुष, महासाधक के समक्ष रहते हुए आया करते थे।

जी हाँ! ये बात है, चौथे आरे की बानगी, शान्त, सौम्यता की प्रतिमूर्ति पूज्य उपाध्याय भगवन्त श्रद्धेय श्री मानचन्द्रजी म.सा. की।

कहते हैं कि उच्च साधना-आराधना से जीवन में उत्कृष्टता आती है। पूज्य उपाध्याय भगवन्त के विषय में सुनने को मिला कि सेवा-शूश्रुषा से पूज्य श्री ने संयम का वह तेज पाया, वह अलौकिक छटा पायी जिसको अपलक देखकर भी नज़र हटाने का मन ही नहीं करता। पूज्य उपाध्याय भगवन्त के दर्शन-वन्दन के साथ उनकी सन्निधि का लाभ मुझे बालोतरा, सिवाना, बाड़मेर, जोधपुर, भोपालगढ़, ब्यावर, मेड़ता, गोटन आदि स्थानों पर प्राप्त हुआ। एक-दो दिन ही नहीं सप्ताह से अधिक दिनों तक पूज्य भगवन्त एवं पूज्य चारित्रात्माओं की सन्निधि का लाभ मिलता रहा। इन स्थानों पर जब भी कोई दर्शनार्थी आते तो बस ऐसा लगता वे जैसे भगवन्त को देखने, उनके मुखारविन्द से 'दया पालो' शब्द श्रवण करने और भाई लोग सर पर हाथ रखने की प्रतीक्षा करते हुए नज़र आते थे, मानो ऐसा लगता कि उनके हाथ का सर पर स्पर्श नहीं मिला तो जैसे उनके दर्शन-वन्दन भी नहीं हुए हों.....

मेरी अल्पमति, अल्पबुद्धि से पूज्य भगवन्त को क्या उपमाएँ दूँ वे अपने आप में उपमाओं का भण्डार थे। वे सरलता की खान, असीम अप्रतिम तेज के धारक, वाणी की सरलता, विराट् व्यक्तित्व के धनी, तप साधक, दृढ़ क्रियापालक थे।

कल्पना के कौशल
प्रतिभा का प्रदर्शन
भावना की भव्यता
हृदय की स्निग्धता
लौकिक ज्ञान की गुरुता
नैतिकता की निराली छटा

आदि-आदि गुणों से, उपमाओं से विभूषित करें तो भी ये उपमाएँ सागर में बूँद के समान हैं।

पूज्य उपाध्यायश्री के जीवन-दर्पण से एक बात तो अवश्य ही सीखने को मिलती है कि जीवन में अच्छी योग्यता एवं गुणों को प्राप्त करने के लिए 'सेवा' शब्द अपने-आप में कितना महत्त्वपूर्ण पहलू होता है। अर्थात् सेवा-शूश्रुषा के जरिये भी जीवन को उत्कृष्ट आदर्श एवं संयमित बनाया जा सकता है।

पूज्य भगवन्त के देवलोकगमन से 6 दिन पूर्व भी मुझे उनके दर्शन-वन्दन एवं सन्निधि का लाभ शक्तिनगर स्थानक में मिला। उस समय सन्त-मुनिराजों ने बताया कि भगवन्त की त्याग-तपस्या अभी इन दिनों में, इस उम्र में भी चल रही है। बस मैं तो भगवन्त को अपलक निहार ही रहा था, सहज ही उन महापुरुष के मुँह से यह अमृत शब्द सुनने को मिल ही गया-दया पालो, आनन्द है! रोम-रोम पुलकित हो उठा, फिर भी मैं वहीं सामने बैठा रहा तो श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. ने पूज्य उपाध्यायप्रवर श्री को निवेदन किया-भगवन्त ये दिलीप जी हैं 'आशीर्वाद दिरा दो' बस फिर क्या था,

उन्होंने सिर पर हाथ रखा तो ऐसा लगा जैसे सिर का सारा भार हल्का हो गया हो, और महापुरुष की सारी कृपा मुझ पर ही बरस गयी हो। पूज्य उपाध्यायश्री की शुद्ध संयम आराधना, संयम रूपी तेजबल, समत्व साधना, उनका दृढ़ क्रियापालन इस आरे में चौथे आरे के समान संयमी आत्माओं से मिलता हुआ था।

शत-शत नमन है, शत-शत वन्दन है, ऐसे महापुरुष को जिनका नाम मान होते हुए भी सबको नमना सीखा गये।

-अधिष्ठाता, आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.)

आलोचना

श्री रणवीरमल भण्डारी

आलोचना जैनाचार का परम महत्त्वपूर्ण अङ्ग है। श्रमण-जैन परम्परा में आलोचना का क्षेत्र बहुत व्यापक एवं विस्तीर्ण है। श्रमण-साधु-मुनि ही नहीं, श्रावक-गृहस्थ भी इसकी परिधि में है। जैन परम्परा में आलोचना का अर्थ परनिन्दा, पर-दोष अवलोकन एवं छिन्द्रान्वेषण नहीं है।

जैन परम्परा में आलोचना से आशय है-स्वप्रेरणा से स्व-निरीक्षण और अपने दोषों एवं भूलों को दृष्टि-पथ पर रखना, अपनी भूलों पर स्वयं की निन्दा करते हुए पश्चात्ताप करना, अपनी भूलों को बालकोचित सरल भाव के साथ गुरुजनों एवं आचार्य के समक्ष प्रकट करना और उनके विधान को शिरोधार्य करना।

जैनेतर सन्त परम्परा में भी आलोचना की मान्यता है। इन बहुश्रुत पंक्तियों से सभी परिचित हैं-''निन्दक नियरे राखिये, आंगन कुटी छवाय। बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय।''

स्व-आलोचना वही कर सकता है, जो विनम्र हो, जिसका आचरण पवित्र और निर्मल हो, जो कर्मफल तथा पुनर्जन्म में विश्वास रखता हो और जो निष्कपट हो।

आलोचना करने से जीव, जन्म-मरण को बढ़ाने वाले तथा मोक्षमार्ग में विघ्न उत्पन्न करने वाले शल्यों को दूर कर देता है। स्व-आलोचना की दिव्याग्नि में परितप्त होकर मनुष्य अपने दोषों, भूलों से मुक्ति पाकर स्वरूप में स्थित हो जाता है। स्व-आलोचना यतनापूर्वक जीने की राह को सुगम कर देती है। स्व-आलोचक हर काम को यतनापूर्वक (सावधानी के साथ, प्रमाद रहित) सम्पन्न कर अपूर्व सुख का अनुभव करता है।

जब अपने आचरण में, सोच में, कोई स्खलना हो जाय तो स्वत: ही शुद्ध हृदय से अविलम्ब मिच्छा मि दुक्कडं बोल कर आलोचना कर लेनी चाहिए। यदि तुरन्त आलोचना सम्भव न हो तो सायंकालीन, प्रात:कालीन प्रतिक्रमण करते समय आलोचना कर लेनी चाहिए। अपने दोष का ज्ञान होने पर किसी भी समय पवित्र अन्त:करण से आलोचना करने का भी विधान है।

''आलोयणा णाम जहा अप्पणो जाणति तहा परस्स पागडं करेइ।''

आत्म-आलोचना एक ऐसा दिव्य कृत्य है जो मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त करता है। आत्म-आलोचना करने की भावना जागृत होने से ही व्यक्ति का मुक्ति-पथ निष्कंटक हो जाता है। जो साधक गुरुजनों के समक्ष कलुषित एवं अवाञ्छनीय भावों को निकाल कर आत्मनिन्दा करता है, उसकी आत्मा उसी प्रकार हल्की हो जाती है, जैसे सिर का भार उतार देने पर भारवाहक हल्कापन अनुभव करता है। आत्म-आलोचना अथवा आत्म-निन्दा आत्मोद्धार का राजमार्ग है, जिस पर चलकर मनुष्य परमपद का अधिकारी हो जाता है।

-जोधपुर (राज.)

ISSN 2249-2011

संस्मरण

उत्कृष्ट संयम साधक श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर

श्री मनीष मेहता

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के प्रति प्रत्येक श्रावक, श्रद्धालु के मन में जो अगाध श्रद्धा और भक्ति है वह असाधारण है। हम सभी इस तत्त्व को तो जानते एवं मानते हैं कि उनकी शान्त छवि, उनकी मृदुता हमें आकर्षित करती थी, परन्तु शायद हम उस चुम्बकीय शक्ति का कारण कभी समझ नहीं पाए। व्यक्ति अपने व्यक्तित्व से महान् होता है, जन्म मात्र से नहीं। मैं अपने उद्गार अपनी सीमित समझ और ज्ञान की सीमा तक ही प्रकट कर सकता हूँ, यद्यपि उनके विषय में लिखना मेरी लेखनी और ज्ञान से परे है और ज्ञानी ही उन्हें जान और समझ सकते हैं फिर भी अपना कर्त्तव्य समझकर उनके प्रति अपने श्रद्धासुमन इस तरह से समर्पित करना शायद उपयोगी होगा। अत: लिखने का साहस करता हूँ।

उपाध्यायप्रवर की समाधि अनुपम थी। समाधि, चित्त की एकाग्रता। जब साधक का अन्तर्मन इधर-उधर के विक्षेपों से हटकर अपनी स्वीकृत साधना के प्रति एक रूप हो जाए, किसी प्रकार की कामना-वासना का लेश भी न रहे, तब वह समाधि पथ पर पहुँचता है। पूज्य प्रवर की समाधि ने हम सभी को प्रेरणा दी है कि अपने-अपने अन्तर्मन को विक्षेपों से हटाकर स्वीकृत साधनों को एकाकार करें, फिर चाहे वे घड़ी-दो घड़ी के लिए ही क्यों न हों, हम भी उस शान्ति का आस्वादन कर पाएँगे।

पूज्य उपाध्यायप्रवर ने मन, वचन एवं शरीर तीनों योगों की दुष्प्रवृत्तियों के संयम का उत्कृष्ट तरीके से पालन किया। 'उन्होंने करेमि भंते' की सच्ची उत्कृष्ट साधना हमें करके सिखाई। उन्होंने मन में कभी दुष्ट चिन्तन नहीं किया, असत्य वचन या कटु वचन नहीं कहा और शरीर से भी हिंसा या दुष्ट कारण वृत्ति को नहीं किया। आत्मशुद्धि की शुद्ध आराधना एवं भूतकालों के पापों का प्रतिक्रमण, आलोचना एवं पश्चात्ताप करके पूर्ण सदाचारी जीवन का सन्देश दिया। हम सभी को भी अपनेआदर्श के प्रति सच्ची श्रद्धा की गहराई इन सन्तों के प्रति आचरण से समर्पित करनी चाहिए। श्रद्धा का विषय हृदय की भावनात्मक अभिव्यक्ति का है जो शब्दों में बाँधना सम्भव नहीं है, फिर भी प्रयास किया जाता है। पूज्य उपाध्याय भगवन्त श्री मानचन्द्रजी म.सा. का तो इतना विशाल व्यक्तित्व है, इतने गुण हैं, जीवन पर इतना उपकार है कि जिह्वा और लेखनी की सीमित शक्ति में उसे व्यक्त नहीं किया जा सकता। उपाध्याय भगवन्त की मुखाकृति सदैव शान्त एवं मुस्कान लिए रहती थी, हाथ सदैव भक्तों पर आशीर्वाद बरसाता था, आशीष स्वरूप मंगल पाठ तो सदैव तैयार ही रहता था। उन्होंने कभी परिचय में रुचि नहीं ली, परन्तु जानते सभी को थे, पूछने पर पता चलता था कि अमुक है। इसी तरह पच्चक्खाण भी आगे होकर नहीं देते थे। इतने सहज थे कि जिसने दर्शन किये वह जुड़ गया। सदैव अन्तर्मुखी साधना में लगे रहते थे। उन्हें कभी भी, किसी ने भी बात करते, परिचय करते नहीं देखा। सच्चे साधक थे जिन्होंने अपनी वाणी से हमें साधना करने की प्रेरणा दी है।

उपाध्यायप्रवर के शब्दों में कहूँ तो "आप सामायिक करें, संवर करें या अन्य कोई धर्मसाधना करें उसका तत्काल फल मिलता है। साधना का फल भविष्य में मिलेगा, ऐसा कहना एकान्त सही नहीं है। भोजन आज करें और भूख 10 दिन बाद मिटेगी, क्या यह सम्भव है? जैसे भोजन करते ही भूख मिटती है, पानी पीते ही प्यास दूर होती है वैसे ही धर्म का फल तत्काल मिलता है। यहाँ उधार का सौदा नहीं है। आपने सामायिक की, आपका विषम भाव गया। आपने सन्तोष

(शेषांश पृष्ठ 91 पर)

ISSN 2249-2011

संस्मरण

उपाध्यायप्रवर : सेवा एवं साधना के पर्याय

श्री नौरतनमल मेहता

अचल-छोटा के लाल

पूर्व जन्म की पुण्यवानी लेकर सूर्यनगरी के सम्भ्रान्त नागसेठिया परिवार में अनन्य गुरुभक्त सुश्रावक श्री अचलचन्दजी सेठिया के घर-आंगन में दृढ़धर्मी सुश्राविका श्रीमती छोटाबाईजी की रत्नकुक्षि से वि.सं. 1991 की माघ कृष्णा चतुर्थी को जन्म लेकर सेठिया कुल गौरव ने अपना, अपने माता-पिता और पारिवारिक-परिजनों का, सूर्यनगरी जोधपुर का, रत्नसंघ और जिनशासन का नाम रोशन किया है। सात भाई और तीन बहिनों के भरेपूरे परिवार में उनका बचपन संस्कारों से समृद्ध रहा, यौवन त्याग-वैराग्य से पुष्ट रहा, मुनि जीवन यशस्वी रहा और उपाध्याय-पद सार्थक रहा।

गुरु हस्ती के अनमोल शिष्य रत्न

इस युग के यशस्वी-मनस्वी-तपस्वी, प्रतिपल स्मरणीय, अध्यात्मयोगी, युगद्रष्टा-युगमनीषी, सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, इतिहास मार्तण्ड, चारित्र चूड़ामणि पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. के मुखारविन्द से वि.सं. 2020 की वैशाख शुक्ला त्रयोदशी को जैन भागवती दीक्षा अंगीकार करके उस मुमुक्षु आत्मा ने रत्नसंघ और जिनशासन की उज्ज्वल-विमल-धवल छवि को जन-जन तक पहुँचाने में महनीय पुरुषार्थ किया। मुनि 'मान' ने अपने दीक्षा-गुरु पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. एवं नेश्राय-गुरु पण्डितरत्न (बड़े) लक्ष्मीचन्दजी म.सा. से प्राप्त हित शिक्षाओं को जीवन-व्यवहार में चरितार्थ कर अन्त समय में व्रत-प्रत्याख्यान से समाधिमरण का वरण कर विक्रम सम्वत् 2076 पौष शुक्ला सप्तमी, गुरुवार तदनुसार 02 जनवरी, 2020 को मृत्यु को महोत्सव बनाया, ऐसे साधक की सुदीर्घ संयम- साधना जैन-जैनेतर जनसमुदाय को प्रेरित करती रहेगी।

सेवा और साधना के पर्याय

मुनि जीवन में सेवा-धर्म की साधना करते हुए उस महापुरुष ने अग्लानभाव से सेवा का अनुपम आदर्श उपस्थित किया तथा अनेक चारित्रात्माओं के संयम जीवन का उन्होंने निर्माण किया। आपश्री के दर्शनमात्र से विचलित चित्त भी अविचल शान्ति का अनुभव करता था। इसीलिए तो हम उपाध्यायश्री को ''चौथे आरे की बानगी'' शब्दों से सुशोभित करते हैं।

सरलता, सहिष्णुता, सौम्यता, स्वाध्यायशीलता और शासन-सेवा में रचा-पचा उपाध्यायश्री का जीवन हम-सबको आध्यात्मिक आनन्द देता था। उस महापुरुष की मधुर मुस्कान और करुणा बरसाते नेत्र दर्शन- वन्दन करने वालों को निहाल कर देते थे।

आराध्य उपाध्यायप्रवर

गुरु हस्ती ने विक्रम सम्वत् 2048 की प्रथम वैशाख शुक्ला अष्टमी को तेरह दिवसीय तप-संथारे के साथ संलेखना-समाधिमरण से मृत्यु को महोत्सव बनाया, दूसरे दिन निमाज में श्रद्धाञ्जलि-सभा में गुरु हस्ती द्वारा लिखित पत्र पढ़ा गया, जिसमें पण्डित रत्न श्री हीराचन्द्रजी महाराज को 'आचार्यपद' एवं पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी महाराज को 'उपाध्याय-पद' का उल्लेख श्रवण कर हजारों-हजार श्रद्धालुओं में हर्ष-हर्ष, जय-जय के गगनभेदी जयनाद करके गुरु हस्ती की व्यवस्था मान्य की; तब से उस संयम-साधक ने उपाध्याय-पद का दायित्व निभाया था।

पच्चीस गुणों के धारी, अंग-उपांग के ज्ञाता, स्वमत-परमत एवं नय-निक्षेप के जानकार उस महापुरुष को न तो कोई छल सका और न ही कोई परास्त ही कर पाया। कहना चाहिए, उपाध्यायप्रवर का व्यक्तित्व-

कृतित्व हम-सबके लिए सुकून देने वाला रहा है।

उपाध्यायश्री की वाक् पटुता, प्रवचन-शैली और प्रत्युत्पन्नमति से सहज-स्वाभाविक उत्तर जन-जन को सन्मार्ग की ओर अग्रसर करने वाला रहा है। हम सश्रद्धा-सभक्ति-सविनय उस महापुरुष के अनेकानेक गुणों से प्रेरित हैं, प्रभावित हैं, आकर्षित हैं, अत: आज गुणानुवाद-सभा में हम उस दिव्य-दिवाकर के गुणों का अन्तर्मन से स्मरण करते हैं। उपाध्यायश्री का स्मरण हम-सबको नई ऊर्जा, नई चेतना, नई ताजगी और नई स्फूर्ति देता रहेगा।

समय-समय पर व्रत-नियम, प्रत्याख्यान एवं तपाराधना-साधना में तत्पर रहती थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई है।

-पूर्व महामन्त्री, जिनवाणी सह-सम्पादक, जोधपुर

गरिमा गुरु की अनन्त है

वनिता कांकरिया

गरिमा गुरु की अनन्त है, गुण गौरव भण्डार
जन-जन के हैं देवता, मम जीवन आधार
वर्धमान के वीर हो, गुरुदेव की शान
नमन करूँ मैं भक्ति से पाऊँ पद निर्वाण
ये आँसू थमते नहीं यह विदाई हम भूलेंगे नहीं
जग कहता है आप विहार करोगे
मन कहता है मन से विहार नहीं करोगे
जग भी सच्चा, मन भी सच्चा
महापुरुष विहार करके दिल से दूर होते नहीं
ये आँसू थमते नहीं यह विदाई हम भूलेंगे नहीं...
आज गुलशन खिला है, पर राग नहीं
मुखरित होता है गीत पर राग नहीं
सोने जैसे शुद्ध शासन है,
पर गुरु के बिना अब मन लगेगा नहीं
ये आँसू थमते नहीं यह विदाई हम भूलेंगे नहीं
नाम की चाह आप रखते नहीं,
काम की राह आप छोड़ते नहीं
संयम आपका शुद्ध निर्मल
शिथिलाचार को भी छूते नहीं
क्योंकि महापुरुष सदा काम में विश्वास रखते हैं
नाम चाहते नहीं
ये आँसू थमते नहीं यह विदाई हम भूलेंगे नहीं...
दीक्षा से आज तक विराम नहीं
घोर कष्टों और उपसर्गों से
घबराने का कोई काम नहीं
क्योंकि महापुरुष मौत से डरते नहीं।
ये आँसू थमते नहीं ये विदाई हम भूलेंगे नहीं।
महावीर के उपवन को तप और
त्याग से सींच रहे हो
रंग-बिरंगी फुलवारी से जिसे सजाया।
बड़े उत्साह उमंग और परिश्रम से सरताज बनाया।
अफसोस है अब माली
बगीचे को छोड़ विदाई लेगा।
ये आँसू थमते नहीं ये विदाई हम भूलेंगे नहीं
सचमुच आप महावीर के सच्चे सपूत हो,
जैन जगत् के सूर्य हो, आप ही हमारे प्राण हो
पर हम मिलकर आपको रोक नहीं सकते
क्योंकि आप समाचारी से बँधे हो।
ये आँसू थमते नहीं ये विदाई हम भूलेंगे नहीं
हे गुरुवर! हम पर रहम करना
आपके दर्शन से वञ्चित नहीं करना
हे भक्तों! के भगवान अब आप
हमसे विदाई ले रहे हो
परन्तु आप हमको भूलना नहीं।
ये आसूँ थमते नहीं ये विदाई हम भूलेंगे नहीं
क्योंकि आप हमारे चक्खुदयाणं,
मग्गदयाणं, सरणदयाणं हो।

-जोधपुर (राज.)

ISSN 2249-2011

तत्त्व-चर्चा

आओ मिलकर कर्मों को समझें (3)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा- क्या कर्म पुद्गल बिना बुलाये ही आत्मा पर चिपक जाते हैं?

समाधान- नहीं, कर्म पुद्गल यद्यपि सब जगह रहे हुए हैं, किन्तु कोई भी जीव जब तक राग-द्वेषादि विकारी भाव नहीं करता है, मन-वचन-काया की प्रवृत्ति नहीं करता है तब तक कोई भी कर्म पुद्गल आत्मा पर चिपकते नहीं हैं। कर्म पुद्गल बड़े ही स्वाभिमानी हैं, वे बिना आमन्त्रण के आत्मा पर नहीं चिपकते हैं। जीव अज्ञान एवं मोह के कारण से कषाय का सेवन और योगों की प्रवृत्ति में प्रवृत्त हो जाता है, जिसके कारण कर्म-वर्गणा के पुद्गल आत्मा पर चिपक जाते हैं।

जिज्ञासा- क्या कर्म पुद्गल सभी आत्म-प्रदेशों पर चिपकते हैं?

समाधान- उत्तराध्ययन सूत्र के 23वें अध्ययन की 18वीं गाथा में कहा है कि-'सव्वेसु वि पएसेसु, सव्वं सव्वेणं बद्धगं।' अर्थात् ज्ञानावरणीय आदि सभी कर्म पुद्गल आत्मा के सभी प्रदेशों के साथ सर्व प्रकार से बँधते हैं। अत: स्पष्ट है कि कार्मणा-वर्गणा के पुद्गल जब भी आत्मा पर बँधते (चिपकते) हैं तब सभी आत्म-प्रदेशों पर बन्धते हैं।

कतिपय विद्वानों, आचार्यों की यह धारणा रही कि आत्मा के मध्य भाग में रहे हुए आठ रुचक प्रदेशों पर कर्म नहीं बन्धते हैं। ये आठों रुचक प्रदेश कर्मों से सदैव निर्लेप रहते हैं। इस धारणा के पीछे उनका यह तर्क रहा है कि यदि सभी आत्म-प्रदेशों पर कर्मों का बन्ध मान लेंगे तो फिर नन्दी सूत्र का यह कथन कि सभी जीवों के अक्षर के अनन्तवें भाग-ज्ञान-दर्शनादि तो सदैव प्रकट रहते हैं, इसकी संगति नहीं बैठेगी।

समाधान रूप में हम यह कह सकते हैं कि कर्मों का बन्ध सभी आत्म-प्रदेशों पर होते हुए भी उनका आवरण देश घाति होने से वे ज्ञानादि गुणों को पूरी तरह नहीं रोक पाते हैं। अक्षर का अनन्तवाँ भाग जितना ज्ञान तो प्रत्येक संसारी जीवों को सभी गति, जाति आदि में रहता ही है। इसी ज्ञान से वे अपनी भूख, प्यास आदि मिटाने की व्यक्त-अव्यक्त प्रवृत्ति करते रहते हैं।

जिज्ञासा- क्या कर्म पुद्गल बँधते ही जीव को अपना फल देना प्रारम्भ कर देते हैं?

समाधान- कर्म पुद्गल बँधते ही जीव को अपना फल देना प्रारम्भ नहीं करते हैं। कर्म बन्धने और उदय में आने के बीच में कुछ अन्तर रहता हैं, इस अन्तर को अबाधा काल के नाम से जाना जाता है। जितने समय तक बन्धे हुए कर्म उदय से नहीं आये अर्थात् न तो उनका विपाकोदय प्रारम्भ हो और न ही प्रदेशोदय प्रारम्भ हो तब तक का काल अबाधा काल माना जाता है। अबाधा काल पूर्ण होने के पश्चात् ही बन्धे हुए कर्म जीव को अपना फल देते हैं।

जिज्ञासा- जिस भव में कर्म बाँधे हैं, क्या जीव को उन कर्मों को उसी भव में भोगना अनिवार्य है?

समाधान- जिस भव में कर्म बान्धे हैं, उन कर्मों का फल जीव को उसी भव में भोगना अनिवार्य नहीं है। उस भव में भी भोग सकता है तथा अगले भवों में भी भोग सकता है। यदि कर्म दीर्घ स्थिति के बँधे हैं, और आयु थोड़ी बची है तो उन कर्मों को अगले भवों में भी भोगा जा सकता है। यदि स्थिति अल्प बँधी है और आयु अभी अधिक बाकी है तो उस भव में भी वे कर्म अपना फल दे सकते हैं।

विशेष बात यह है कि आयु कर्म को छोड़कर शेष ज्ञानावरणीय आदि सात कर्मों का फल जीव को संख्यात-असंख्यात भवों तक में भी प्राप्त हो सकता है,

किन्तु आयु कर्म एक ऐसा कर्म है जिसका फल अगले एक ही भव में भोगना पड़ता है। दूसरों शब्दों में कहें तो आयुकर्म एक भव के लिए ही बन्धता है जबकि शेष सात कर्म असंख्यात भवों तक के लिए बँध जाते हैं।

यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि जो चरम शरीरी जीव है अर्थात् जो उसी भव में मोक्ष में जाने वाला है तो उसे उसी भव में सभी कर्मों का क्षय करना होता है।चाहे वे कर्म पूर्व भवों के बँधे हुए हो अथवा उस भव में बाँधे हो, सभी की निर्जरा करनी होती है। यह हो सकता है कि वह निर्जरा चाहे प्रदेशोदय के रूप में करे अथवा विपाकोदय के साथ में करें। उसके कोई भी कर्म शेष नहीं रहते हैं।

जिज्ञासा– क्या आठ कर्मों के 148 भेद ही होते हैं अथवा उससे अधिक भी हो सकते हैं?

समाधान– आठ कर्मों के 148 भेद उत्तर प्रकृतियों के रूप में बतलाये गये हैं। नाम कर्म में बन्धन नाम के 5 भेदों के स्थान पर यदि 15 भेद ले तो नाम कर्म के 93 भेद के स्थान पर 103 भेद हो जाते हैं तथा कुल 158 भेद हो जाते हैं।

ये 148 अथवा 158 भेद भी मोटे रूप में, सामान्य रूप में ही समझने चाहिए। वैसे तो एक-एक कर्म की उत्तर प्रकृतियों के असंख्य-असंख्य भेद होते हैं, क्योंकि अलग-अलग जीवों के अलग-अलग प्रकार से कर्म प्रकृतियाँ उदय में आती हैं। एक ही जीव के भी अलग-अलग समयों में नानाविध रूपों में उदय में आती रहती हैं। उनका क्षयोपशम भी असंख्य प्रकारों का हो सकता है। कर्म और उनकी उत्तर प्रकृतियों का स्वरूप आसानी से समझ सके, इसलिए ज्ञानियों ने मूलकर्म के आठ भेद तथा उनके उत्तर भेद के रूप में 148 अथवा 158 भेद बतलाये हैं।

जिज्ञासा– क्या जीव अपने कर्मों के बन्धन की प्रक्रिया को रोक सकता है?

समाधान– सामान्यतया यह नियम है कि जिस कर्म का उदय रहता है तब उसके वह कर्म बन्ध जाता है। यदि उदय तीव्र रूप में है तो प्रायः नया बन्ध भी तीव्र रूप वाला हो जाता है तथा यदि उदय में तीव्रता कम है तो बँध में भी तीव्रता कम हो जाती है। यद्यपि इस सामान्य नियम के बहुत सारे अपवाद भी हैं। फिर भी विशेषकर मोहनीय कर्म में 9वें गुणस्थान तक प्रायः-प्रायः उदय के अनुसार उस-उस कषाय का बँध भी हो जाता है। जैसे मिथ्यात्व मोहनीय के उदय में मिथ्यात्व मोहनीय का बँध (पहले गुणस्थान में), अनन्तानुबँधी चतुष्क के उदय में अनन्तानुबन्धी चतुष्क का बँध (पहले-दूसरे गुणस्थान में), अप्रत्याख्यानी चतुष्क के उदय में अप्रत्याख्यानी चतुष्क का बन्ध (पहले से चौथे गुणस्थान तक), प्रत्याख्यानावरण चतुष्क के उदय में प्रत्याख्यानावरण चतुष्क का बन्ध (पहले से पाँचवें गुणस्थान तक), संज्वलन चतुष्क के उदय में संज्वलन चतुष्क का बँध (पहले से नवें गुणस्थान तक) होता ही है।

जब कर्मों के उदय में मन्दता होती है, तब जीव का विशेष पुरुषार्थ जगता है, वह उदय से कम प्रभावित होता है। समता, सजगता, सहनशीलता, अप्रमत्तता में वृद्धि करता है, जिसके कारण नया बन्ध कम होता है। बन्ध में स्थिति, अनुभाग आदि में कमी करता जाता है और जैसे-जैसे विशुद्धि बढ़ती जाती है वैसे-वैसे बन्धन की प्रक्रिया धीमी होती चली जाती है। एक समय ऐसा भी आता है कि वह बन्धन की प्रक्रिया को पूरी तरह रोक कर शाश्वत सिद्धि को प्राप्त कर लेता है।

(क्रमशः)

-रजिस्ट्रार, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

रत्नसंघ की एप्प

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ratnasangh एप्प डाउनलोड कर अनेक जानकारियाँ प्राप्त कर सकते हैं-विचरण विहार, प्रत्याख्यान पाठ, जैन कलेण्डर, सूर्योदय-सूर्यास्त, चौघड़िया, साधना-आराधना, क्विज, जिनवाणी, स्वाध्याय शिक्षा, रत्नम्, साहित्य, पंचांग, प्रार्थनाएँ, कहानियाँ आदि।

ISSN 2249-2011

जीवन-व्यवहार

नैतिकता का आधार है संयम

प्रो. सुमेरचन्द जैन

भगवान महावीर ने धर्म के तीन लक्षण निरूपित किए-'**धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा, संजमो, तवो।**' अहिंसा, संयम और तप ये तीन धर्म के लक्षण हैं। वही धर्म मंगलकारी है जो अहिंसा, संयम और तप के रूप में साधा जाता है। संयम की परिभाषा बहुत सुन्दर की गयी है। 'इन्द्रियमनोनिग्रहः संयमः।' इन्द्रिय और मन के निग्रह करने का नाम है 'संयम'। जिसमें इन्द्रिय निग्रह है, इन्द्रियों पर नियन्त्रण है और मन पर भी नियन्त्रण है, जो इन्द्रियों और मन के वश में नहीं है, प्रत्युत उन्हें अपने वश में कर लेता है, उसमें तेजस्विता बढ़ती है एवं वैराग्यभाव भी बढ़ता है। तेजस्विता बढ़ाने में संयम का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि जीवन को अनुशासित ढंग से जीने का नाम ही संयम है। जीवन के हर क्षेत्र में संयम की आवश्यकता है। जीवन में संयम आ गया तो समझ लो कि आपने जीवन में बहुत कुछ प्राप्त कर लिया है और अगर आपको जीवन में बहुत कुछ मिल गया है और संयम नहीं है तो सबकुछ न मिलने के बराबर है। जीवन के हर क्षेत्र में भावुकता से बचकर अपने हर कार्य को नियन्त्रण में रखने का नाम ही संयम है।

इन्द्रिय एवं मन का संयम अमरता वरण का सोपान है तो इनका असंयम जन्म-मरण का जनक। पाँचों इन्द्रियों के विषय-शब्द, रूप, गन्ध, रस एवं स्पर्श क्षणिक सुख अवश्य देते हैं, यही कारण है कि जीवात्मा उनमें आसक्त रहता है। लेकिन संयम-सुख की अनुभूति होने पर विषय-सुख अति तुच्छ एवं हेय प्रतीत होने लगते हैं। शान्त सुधारस नामक काव्य में संयम-समता सुख का विश्लेषण किया गया है। विषय-विकार, क्रोध, मान, माया, लोभ आदि प्रवृत्तियों का संयम व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के लिए नितान्त अपेक्षित है।

संयमः खलु जीवनम्-संयम ही जीवन है। यह केवल गृहस्थ या साधु के लिए नहीं, अपितु सबके लिए जीवन है। संयम सबके लिए जरूरी है। यह जितना जरूरी महाव्रती के लिए है, उतना ही जरूरी अणुव्रती के लिए। ऐसा नहीं है कि साधु जीवन स्वीकार कर लिया तो वह सीधा ऊपर की भूमिका में चला गया। संयम की साधना है तो साधु है, अन्यथा उसके और गृहस्थ के जीवन में कोई अन्तर नहीं है। संयम-साधना के लिए मर्यादा आवश्यक है। आदमी की यह वृत्ति है कि कोई भी नयी वस्तु देखता है तो उसके लिए मन ललचा जाता है। इसलिए मर्यादा का विधान है। संयम के पूरक तत्त्व हैं मर्यादा, अनुशासन और व्यवस्था। ये संयम के सहायक तत्त्व हैं। अगर सहायक तत्त्व न हो तो संयम साधन नहीं बनता।

संयम समझदारी का चिह्न है। ज्ञानी का प्रतीक है। संतों-महात्माओं का शृङ्गार है। संयम गृहस्थ-जीवन की आवश्यकता है और सफलता का सूचक है। मनुष्य को खाने में, पीने में, सोचने में, प्रत्येक काम करने में और दूसरों के साथ व्यवहार करने में संयम की आवश्यकता होती है। आप किसी स्थान पर गए और वहाँ उन्होंने आपके स्वागत में तरह-तरह के पकवान रख दिए और आप उन पर भूख न होते हुए भी टूट पड़े तो बहुत हानि हो जाएगी। वास्तविकता तो यह है कि जितने भी लोग बीमार हैं उनमें से बड़ी संख्या उन लोगों की है, जिन्होंने खाने-पीने में संयम को समाप्त कर रखा है। आप में संयम है तो आप स्वस्थ हैं और अगर आप में संयम नहीं है तो आप सदैव ही बीमार रहेंगे और दवाइयाँ खाते रहेंगे।

किसी व्यक्ति ने आपको कह दिया कि अमुक व्यक्ति आपको बहुत गलत बता रहा था। बस आप आग बबूला हो गए और चल दिए उसकी खबर लेने। संसार में निन्दा, चुगली, प्रशंसा, बुराई सब चलती है। किसी ने आपकी प्रशंसा कर दी तो फूल गए और किसी ने बुराई कर दी तो रूठ गए। इसलिए दोनों अवस्थाओं में हमें संयम की आवश्यकता होती है।

आप संसार में कहीं भी अशान्ति देखें, लड़ाई-झगड़ा देखें अथवा कहीं भी गलत भावनाएँ देखें तो आप वहाँ पर संयम की कमी अनुभव करेंगे। जो मन में आया कह दिया, जिसको मन में आया गलत बातें कह दीं तो फिर परिणाम तो गलत निकलेगा ही, घर-गृहस्थी में जितने भी झगड़े होते हैं, संयम न होने के कारण होते हैं। इसीलिए तो कहते हैं कि जबान का बोला हुआ गलत शब्द इतना घाव करता है, जितना तलवार नहीं करती।

आज सबसे बड़ी समस्या नैतिक मूल्यों के ह्रास की है। नैतिकता का विकास क्यों नहीं हो रहा? इस पर चर्चा करने से पहले आधार की चर्चा करना जरूरी है। नैतिकता का आधार क्या हो सकता है? नैतिकता का आधार हो सकता है-संयम और त्याग। एक ऐसी मानसिकता का निर्माण जिसमें संयम है, जिसमें त्याग की क्षमता है। जिसमें उपभोग का संयम नहीं है, वह आदमी कभी नैतिक नहीं बन सकता। जब तक संयम नहीं होगा, नैतिकता नहीं हो सकती। उपभोग का संयम, संग्रह का संयम और प्रदर्शन का संयम नहीं है तो नैतिकता हो नहीं सकती।

यह एक बहुत बड़ी सच्चाई है कि अगर आपको जीना है और समाज में जीना है तो जीवन में संयम का विकास करना ही होगा। संयम नहीं है तो, धीरे-धीरे समाज, व्यक्ति और राष्ट्र पतन के गर्त में चला जाएगा, बड़ी-बड़ी समृद्ध संस्कृतियाँ और राष्ट्र इस एक संयम के अभाव में विनष्ट हो गए, यह इतिहास सिद्ध बात है।

प्रगति के उजले शिखरों को वे ही समाज और राष्ट्र छू सकते हैं, जो सामाजिक और राष्ट्रीय नियमों को सर्वोपरि अधिमान देते हुए अपनी निरंकुश प्रवृत्तियों पर नियन्त्रण रख सकने की कला में दक्ष होते हैं। आपराधिक प्रवृत्तियों में लिप्त बड़े से बड़े व्यक्ति को भी जहाँ माफ नहीं किया जाता हो, भ्रष्ट आचरण चाहे किसी के भी हों, उन पर कड़ा प्रहार होता हो, वह समाज और राष्ट्र स्वस्थ होता है, अन्यथा पतन के गर्त में इस कदर औन्धे मुँह गिरते हैं कि उनका उठना, विकसित होना असम्भव हो जाता है। समय का तकाज़ा है कि संयममय जीवन बने, विशेषतः उच्च पदस्थ लोगों का आदर्श संयमित जीवन बहुत जरूरी है। यदि हिमालय में विष घुल जाता है तो हिमालय से प्रवाहित सभी जलस्रोत विषैले हो जाते हैं। वैसे ही शिखर पुरुषों के अच्छे या बुरे आचरणों का युवा पीढ़ी पर अनकहे अनचाहे प्रभाव पड़ते हैं।

मानव सभ्यता के रहस्यों, तत्त्वों तथा उत्थान-पतन की खोज में सम्पूर्ण जीवन खपा देने वाले विश्व के विख्यात इतिहासकार अर्नाल्ड टायनवी इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि विश्व के ज्ञात इतिहास में अब तक 21 सभ्यताएँ पनपीं, जिनमें 19 सभ्यताएँ जड़मूल से नष्ट हो गयीं, जिसका एकमात्र कारण था उनमें आई नैतिक मूल्यों की गिरावट एवं असंयम का हावी होना। मानवीय मूल्यों की परिधि में नैतिक एवं संयमित जीवन जीने वाला व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्र शान्त, सुखी एवं सुरक्षित रहता है।

अन्तःकरण की तरंगों-क्रोध, मोह, ईर्ष्या, अहंकार, कामभोग की वासना को नियमित किए बिना संयम की साधना, नैतिक नियमों की अनुपालना हो नहीं सकती। सब जानते हैं संयम, सदाचार, सद्व्यवहार, समभाव अनुशासित समाज के लिए अति आवश्यक ही नहीं नितान्त अपेक्षित हैं। फिर भी आचरण नहीं होता। क्यों नहीं होता? कौन रुकावट डालता है? रुकावट डालने वाले मुख्य तत्त्व हैं-क्रोध, अहंकार, माया-कपट, लोभ, धन पद-सत्ता का स्वार्थ। यदि लोभ शान्त हो तो संयम और नैतिकता आने में कठिनाई नहीं होती।

त्याग की चेतना जागे बिना आचरण पवित्र नहीं हो सकता। आज की विनाश लीलाएँ किससे अज्ञात हैं? पर्यावरण-प्रदूषण और सूखते जा रहे धरती के जलस्रोत हमारे असंयमित व्यवहार के ही द्योतक हैं। प्राकृतिक प्रकोप हमें यह चेतावनी दे रहे हैं कि हम प्रकृति के साथ संयमित व्यवहार करें।

एक ओर नशा विरोधी अभियान तथा अश्लील पोस्टर और इश्तिहारों को हटाने का आन्दोलन चलाया जाता है तो दूसरी ओर मद्यपान को प्रोत्साहित किया जाता है। सिनेमा, दूरदर्शन एवं विभिन्न चैनलों में फैशन से सम्बन्धित उत्तेजक नाच-गानों का भौंडा प्रदर्शन होता है तथा अश्लील क्रीड़ाएँ निःसंकोच दिखाई जाती हैं। क्या ये बातें नैतिक संयमित जीवन जीने में बाधक नहीं बनतीं? चिन्तनीय है। आए दिन होने वाले अपराध, चोरी, डकैती, सरे आम हत्याएँ, बलात्कार, महिला उत्पीड़न, भ्रष्ट आचरण आदि हमारी असंयमित जीवन शैली के ही दुष्परिणाम हैं।

'मेरा भारत महान्' 'जाग रहा है भारत' 'अध्यात्म प्रधान भारत', 'स्वच्छ भारत' आदि नारे तभी सार्थक होंगे जब संयम, दया, करुणा एवं नैतिक नियमों का पालन होगा। कितना सुन्दर कहा गया है कि जिसके हाथ-पाँव तथा मन संयत हैं अर्थात् आँख, कान, रसना आदि तथा इनके विषयों की ओर उन्मुख करने वाला मन संयमित है, नियमित है, उन्हें समस्त तीर्थों के दर्शन का लाभ प्राप्त होता है और ऐसा पुरुषोत्तम वन्दनीय होता है।

-10, इण्डस्ट्रियल एरिया, रानी बाजार, बीकानेर-334001 (राज.)

भाषितुं नैव शक्यते

उपाध्याय श्री रमेशमुनिजी शास्त्री

नूनं स्वकीयमस्तित्वं, मानशब्देन कथ्यते।
गृहीत्वा मान-सम्मानं, मुनिर्मानश्च सार्थकः।।1।।

नागोर नगरे प्राप्ते, मयादौ दर्शनं कृतम्।
श्री पुष्करप्रसादेन, अद्यावधि, कृतार्थकः।।2।।

द्वितीयावसरं पुण्यं, पालिपुर्यां प्रभातकम्।
दर्शनं सुखदं सम्यक्, पौनः पुनः स्मराम्यहम्।।3।।

आवां समं पदं यातौ, उपाध्यायाभिधं श्रुतम्।
स्थित्यामस्यां दयापूर्णा, स्वगुरोर्महती स्वता।।4।।

भवता तनुतः पारं, स्वेच्छया मान-योगतः।
निशम्य खिन्नतां यामि, भाषितुं नैव शक्यते।।5।।

उपाध्याय गुरुदेव पूज्य
श्री पुष्करमुनिजी म.सा. के शिष्य
(समदड़ी 03/01/2020 प्रातः 8 बजे)

श्रद्धाञ्जलि... भावाञ्जलि

प्राणीमित्र नितेश नागोता जैन

सहजता, सरलता की खान थे,
आगम ज्ञान में विद्वान् थे।
भक्तों के भगवान थे, कथनी करनी से महान थे।।
छह काय जीवों के रक्षक थे, प्रेरक पथ प्रदर्शक थे।
श्रेष्ठ प्रवचनकार थे, प्रेरक पथ प्रदर्शक थे।
श्रेष्ठ प्रवचनकार थे, गुण आप में अपार थे।।
आपके देवलोक गमन से
हुई क्षति की पूर्ति सम्भव नहीं हैं।
स्मृतियों में सदा प्रेरणा पाथेय रहेंगे आप,
आपके महाप्रयाण से हुई कमी,
कमी ही रहेगी सदा... इसकी पूर्ति सम्भव नहीं है
एक प्रेरक, शासन रसिक आत्मन को
हृदय से... भावों से... मन से... योगों से...
हार्दिक-हार्दिक श्रद्धाञ्जलि... भावाञ्जलि...
एक फूल मुरझा गया, जिनशासन के बाग से,
दे गया सौरभ जगत् को, गुण, ज्ञान वैराग्य से...
उपाध्याय प्रवर को हार्दिक श्रद्धाञ्जलि

-भवानी मण्डी (राज.) 9413101489

आचार्य श्री हस्ती दीक्षा शताब्दी वर्ष (2020-21)

(माघ शुक्ला 2, 26 जनवरी 2020 से माघ शुक्ला 2, 13 फरवरी 2021 तक)

सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, अध्यात्म योगी, इतिहास मार्तण्ड, परमश्रद्धेय आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के दीक्षा शताब्दी वर्ष को पूरे भारत वर्ष में अटूट श्रद्धा, भक्ति सेवा व उत्साह के साथ मनाये जाने हेतु संघ द्वारा निर्णय लिया गया है। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं समस्त सहयोगी संस्थायें मिलकर संयुक्त रूप से दीक्षा शताब्दी वर्ष में आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. से संबंधित पावन दिवसों को एवं संघ के कुछ महत्वपूर्ण दिवसों को भी उत्साह के साथ विशेष रूप से मनायेगी। ये दिवस इस प्रकार है-

आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के मुख्य पावन दिवस

माघ शुक्ला 2, रविवार, 26 जनवरी 2020
दीक्षा दिवस शताब्दी वर्ष प्रारम्भ
सामायिक दिवस

वैशाख शुक्ला 3, रविवार, 26 अप्रेल 2020
आचार्य पदारोहण दिवस
स्वाध्याय दिवस

वैशाख शुक्ला 8, शुक्रवार, 01 मई 2020
29वां स्मृति दिवस
सामूहिक प्रार्थना दिवस

पौष शुक्ला 14, बुधवार, 27 जनवरी 2021
जन्म दिवस-**प्रतिक्रमण दिवस**
(आवश्यक सूत्र पर परीक्षा आयोजन)

माघ शुक्ला 2, शनिवार, 13 फरवरी 2021
दीक्षा दिवस शताब्दी वर्ष समापन
सामायिक दिवस

संघ एवं संघीय संस्थाओं के मुख्य दिवस

24 सितम्बर 2020, गुरुवार
श्राविका गौरव दिवस
संस्कार बोध दिवस

17 नवम्बर 2020, मंगलवार
संघ समर्पण दिवस
संकल्प दिवस

21 नवम्बर 2020, शनिवार
युवा शक्ति दिवस
व्यसन मुक्ति दिवस

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के विशेष कार्यक्रम

- आचार्य श्री हस्ती व्याख्यान माला का देश के विभिन्न शहरों में आयोजन।
- जिनवाणी में प्रतिमाह आचार्य श्री हस्ती के व्यक्तित्व व कृतित्व पर लेख।
- ''जैन जीवन शैली'' पर जिनवाणी विशेषांक।

स्वाध्याय संघ के विशेष कार्यक्रम

- स्वाध्याय प्रवृति का 75वां वर्ष भी हर्ष व उल्लास के साथ इसी वर्ष मनाया जायेगा।
- 75 नये स्वाध्यायी तैयार करना।
- 175 क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधन।
- वृहद् स्वाध्यायी सम्मेलन का आयोजन।
- आचार्य श्री हस्ती द्वारा रचित पुस्तकों पर प्रत्येक माह स्वाध्यायियों के बीच परीक्षा का आयोजन।
- ''स्वाध्यायी-मंजुषा'' पुस्तक का पुनः प्रकाशन।

शिक्षण बोर्ड के विशेष कार्यक्रम

- आचार्य श्री हस्ती पर प्रश्नोत्तरी पुस्तक का प्रकाशन।
- आचार्य श्री हस्ती के व्यक्तित्व व कृतित्व पर जुलाई 2020 व जनवरी 2021 में आयोजित परीक्षाओं में कम से कम 10 अंकों का प्रश्न पत्र रखा जायेगा।
- प्रतिमाह आचार्य श्री हस्ती के व्यक्तित्व व कृतित्व पर रत्न संघ ऐप के माध्यम से ऑनलाईन परीक्षाओं का आयोजन।

संस्कार केन्द्र के विशेष कार्यक्रम

- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्राविका मण्डल व युवक परिषद की सभी शाखाओं व सम्पर्क सूत्रों वाले स्थानों पर संस्कार केन्द्र खोलने का लक्ष्य।

सभी कार्यक्रमों की सफलता के लिए निम्नलिखित प्रयास सभी द्वारा करना-

- रत्न संघ के समस्त परिवारों की जानकारी लेकर रत्न संघ ऐप से जोड़ना।
- आचार्य श्री हस्ती के व्यक्तित्व व कृतित्व पर आधारित संगोष्ठी, भाषण प्रतियोगिता, निबन्ध, नाटक, भजन आदि कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- अधिकतम प्रचार व प्रसार एवं व्यक्तिगत सम्पर्क करना।

10 फरवरी 2020
जिनवाणी 50
ISSN 2249-2011

शोधालेख

श्वेताम्बर और दिगम्बर परम्पराओं में अन्तर

डॉ. सुदर्शनलाल जैन

श्वेताम्बर और दिगम्बर जैनों में क्या अन्तर है इसे जानने से पूर्व इसके इतिहास-क्रम को जानना आवश्यक है। आज से 2544 वर्ष पूर्व चौबीसवें तीर्थङ्कर भगवान महावीर (जन्म ईस्वी पूर्व 599) के निर्वाण (ईस्वी पूर्व 527) के 162 वर्षों तक (चन्द्रगुप्त के शासनकाल तक) जैन सङ्घ में कोई मतभेद नहीं था। महावीर के बाद गौतम, सुधर्मा और जम्बू स्वामी ये तीनों गणधर केवली (अनुबद्ध केवलज्ञानी) हुए।

जम्बू केवली के बाद श्वेताम्बर परम्परानुसार क्रमश: प्रभव, शय्यंभव, यशोभद्र, सम्भूतिविजय और भद्रबाहु ये पाँच चौदह पूर्वों के ज्ञाता हुए। सम्भूतिविजय और भद्रबाह ये दोनों यशोभद्र के शिष्य थे। सम्भूतिविजय के शिष्य स्थूलभद्र थे। दिगम्बर-परम्परानुसार जम्बू स्वामी के बाद विष्णु, नन्दिमित्र, अपराजित, गोवर्धन और भद्रबाहु ये पाँच श्रुतकेवली (आगमज्ञ) हुए। इस तरह भद्रबाहु को दोनों परम्पराओं को मान्य किया। इसके बाद निमित्तज्ञानी भद्रबाहु चन्द्रगुप्त के शासनकाल में मगध में पड़ने वाले 12 वर्षीय अकाल को जानकर अपने सङ्घ के साथ दक्षिण में समुद्र तट की ओर चले गए। जो शेष साधु बचे वे स्थूलभद्र (निर्वाण, वीर निर्वाण सम्वत् 219) के नेतृत्व में वहीं रह गए।

अकाल के दूर होने पर पाटलिपुत्र में स्थूलभद्र ने जैन साधुओं का सम्मेलन बुलाया जिसमें मौखिक परम्परा से चले आ रहे ग्यारह अङ्ग ग्रन्थों का सङ्कलन किया गया। बारहवाँ अङ्ग 'दृष्टिवाद' भद्रबाहु के अलावा किसी दूसरे को याद नहीं था। उनकी अनुपस्थिति से उसका सङ्कलन नहीं हो सका। इसके बाद आर्य स्कन्दिल (ईस्वी सन् 300-313) के नेतृत्व में मथुरा में दूसरा सम्मेलन हुआ। करीब इसी समय नागार्जुनसूरि के नेतृत्व में वलभी (सौराष्ट्र) में भी एक सम्मेलन हुआ। इसके बाद दोनों नेता आपस में नहीं मिल सके जिससे आगमों का अंशत: पाठभेद बना रह गया। इसके बाद देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण के नेतृत्व में वलभी में एक तीसरा सम्मेलन (वीर निर्वाण सम्वत् 980-993) हुआ। इसमें जिसे जो याद था उसे पुस्तकारूढ़ कर दिया गया।

इधर दिगम्बर परम्परानुसार महावीर निर्वाण के 683 वर्ष बाद (ईस्वी सन् प्रथम शताब्दी मध्यकाल) गिरनार पर्वत की चन्द्रगुफा में तपस्या में लीन आचार्य धरसेन के पास (महाराष्ट्र में स्थित नगरी) आचार्य अर्हद्बलि ने पुष्पदन्त और भूतबलि नामक दो शिष्यों को भेजा। वहाँ कुछ पूर्वों का ज्ञान प्राप्त कर दोनों ने मिलकर षट्खण्डागम ग्रन्थ को लिपिबद्ध किया। इसके बाद गुणधर ने कसायापाहुड और आचार्य कुन्दकुन्द ने समयसारादि ग्रन्थों की रचना की। यही आज दिगम्बर परम्परा के मान्य आगम हैं। दिगम्बरों में सभी अङ्ग आगम ग्रन्थों और उपाङ्ग आगम ग्रन्थों का लोप स्वीकार कर लिया, जो एक बड़ी भूल हुई।

इधर उत्तर भारत में अकाल की विशेष परिस्थितियों में स्थूलभद्र के सङ्घ ने अपवाद स्वरूप वस्त्रादि ग्रहण करके कुछ नियमों में शिथिलता को स्वीकार कर लिया। फलस्वरूप आगे चलकर (ईस्वी सन् प्रथम शताब्दी) श्वेताम्बर, दिगम्बर भेद बन गए और दोनों की गुर्वावलियाँ भिन्न हो गईं। प्रारम्भिक मतभेद साधु के वस्त्र को लेकर था, गुरु और शास्त्र में मतभेद होने पर भी बहुत समय तक एक ही प्रकार की मूर्ति की दोनों उपासना करते रहे, परन्तु बाद में आराध्य में भेद न करके मूर्तियों की संरचना में अन्तर कर दिया

गया। कुछ मान्यताओं में तथा कुछ बाह्य क्रियाओं आदि में बाह्य मतभेद होने पर भी बौद्धों की तरह दार्शनिक सिद्धान्तों (छह द्रव्य, सात तत्त्व, स्याद्वाद, अनेकान्तवाद, पाँच महाव्रत, अहिंसा, वीतरागता आदि) में मतभेद नहीं हुए।

श्वेताम्बर परम्परा में स्वीकृत

1. सवस्त्र मुक्ति होती है।
2. स्त्रीमुक्ति (उसी पर्याय में) सम्भव है।
3. गृहस्थावस्था में मुक्ति सम्भव है।
4. भरत चक्रवर्ती को शीशमहल में ही केवलज्ञान प्राप्त हो गया था।
5. मल्लिनाथ (19वें तीर्थङ्कर) स्त्री थीं।
6. केवलज्ञानी कवलाहार (भोजन) करते हैं।
7. केवलज्ञानी नीहार (मल-मूत्रादि का विसर्जन) करते हैं।
8. मरुदेवी को हाथी पर चढ़े हुए ही मुक्ति हो गई।
9. साधु के लिए अपने 14 उपकरण ग्राह्य थे अब और अधिक हो गए हैं।
10. वस्त्राभूषण युक्त (अलङ्कृत) प्रतिमा पूज्य है। रचना में भी थोड़ा अन्तर है।
11. भगवान महावीर का गर्भ परिवर्तन (ब्राह्मणी के गर्भ से क्षत्रियाणी के गर्भ में) हुआ था।
12. भगवान महावीर का विवाह हुआ था और एक कन्या भी हुई थी।
13. महावीर तप:काल में 12 मास तक वस्त्र पहने रहे।
14. साधु और साध्वियों के द्वारा कई घरों से लाए गए भिक्षान्त को लाकर एकाधिक बार आहार करना।
15. ग्यारह अङ्ग-आगम और उपाङ्ग उपलब्ध हैं। परन्तु दृष्टिवाद और पूर्वों का लोप हो गया है।
16. आगम अर्धमागधी प्राकृत में लिखित हैं।
17. वैमानिक स्वर्ग 12 हैं और मुख्य इन्द्र भी 12 हैं।
18. मुनि के 27 मूलगुण हैं। दिगम्बरों में मूलगुणों से कुछ अन्तर भी है।
19. तीर्थङ्कर की माता को चौदह स्वप्त आते हैं।
20. केवली के ऊपर केवल के पूर्व उपसर्ग सम्भव है।
21. मानुषोत्तर पर्वत से आगे मनुष्य जा सकता है।
22. अङ्गग्रन्थों के सङ्कलन हेतु वाचनायें हुईं।
23. पार्श्वनाथ के चातुर्याम धर्म (अहिंसा, सत्य, अचौर्य और अपरिग्रह) को महावीर ने पञ्चयाम (ब्रह्मचर्य जोड़कर) किया।
24. पार्श्वनाथ के शिष्य केशी का साथ संवाद हुआ था और पञ्चयाम तथा रत्नत्रय धर्म इन्हें भी अभीष्ट है।
25. सुधर्मा गणधर से गुर्वावलि प्रारम्भ है, गौतम गणधर से नहीं। आज सभी सन्तानें सुधर्मा की हैं। आगमों में कहीं-कही गौतम द्वारा प्रश्न किए गए हैं।
26. स्थूलभद्र अन्तिम श्रुतधर (11-14 पूर्वों के ज्ञाता) थे। वज्रस्वामी 10 पूर्वों के तथा उनके शिष्य आर्यरक्षित 9.5 पूर्वों के ज्ञाता थे। तत्पश्चात् पूर्वों का ज्ञान लुप्त हो गया। केवल 11 अङ्ग बचे रह गये।
27. अङ्ग बाह्य (उपाङ्ग, मूलसूत्र आदि) श्रुतों की आज भी सत्ता है, परन्तु उनकी संख्या आदि में कुछ अन्तर है।
28. भगवान के पैरों का नाखून युक्त चरण चिह्न पूज्य हैं।
29. **अवान्तर पथ भेद**

    (क) चैत्यवासी या मन्दिरमार्गी (चौथी-पाँचवीं शताब्दी)।

    (ख) स्थानकवासी (15वीं शताब्दी) में लम्बी मुखपट्टी रखते हैं। मूर्तिपूजा नहीं करते।

    (ग) तेरहपन्थी (18वीं शताब्दी)। ये चौड़ी मुखपट्टी रखते हैं। मूर्तिपूजक नहीं हैं।
30. गुर्वावलि-सुधर्मा, जम्बू, प्रभव, शय्यंभव, यशोभद्र शिष्य, (सम्भूतिविजय और भद्रबाहु), स्थूलभद्र (सम्भूतिविजय के शिष्य)।

दिगम्बर परम्परा में स्वीकृत

1. सवस्त्र मुक्ति नहीं होती है।
2. नहीं।
3. नहीं।
4. नहीं।
5. नहीं, पुरुष थे।
6. केवलज्ञानी का शरीर परम औदारिक हो जाता है अत: भोजन ग्रहण की आवश्यकता नहीं है।

7. नहीं।
8. नहीं।
9. साधु को संयम-रक्षणार्थ पिच्छी, कमण्डलु और शास्त्र उपकरण ही स्वीकृत हैं, अन्य नहीं।
10. नहीं, पूर्ण दिगम्बर प्रतिमा की पद्मासन या खड्गासन मुद्रा ही पूज्य है। उनकी ध्यानमुद्रा ऐसी हो जिसमें चक्षु (नासाग्र दृष्टि) हो तथा शरीर से वीतरागता प्रकट होती हो।
11. नहीं, क्षत्रियाणी के गर्भ में ही अवतरण हुआ था।
12. दोनों नहीं।
13. नहीं।
14. विधि मिलने पर एक ही घर में खड़े-खड़े अञ्जुली में ही एक बार आहार, पानी आदि लेना 'साध्वियाँ बैठकर आहार करती हैं, यह अन्तर है।
15. समस्त अङ्गों और पूर्वों का लोप हो गया है। पूर्वों पर आधारित षट्खण्डागम तथा कषायपाहुड उपलब्ध हैं। परवर्ती कुन्दकुन्दाचार्य आदि के ग्रन्थ आगमवत् हैं।
16. जैन शौरसेनी प्राकृत में वर्तमान आगम लिखित हैं।
17. वैमानिक स्वर्ग 16 हैं, परन्तु उनके मुख्य इन्द्र भी 12 ही हैं। सब मिलाकर इन्द्रों की संख्या 100 है।
18. मुनि के 28 मूलगुण हैं।
19. तीर्थङ्कर की माता को सोलह स्वप्न आते हैं।
20. नहीं। पार्श्वनाथ पर उपसर्ग हुण्डावसर्पिणी कालदोष से हुआ। परन्तु केवलज्ञानी होने पर नहीं।
21. नहीं।
22. नहीं।
23. ऐसा नहीं है, परन्तु सामायिकादि चार प्रकार के चारित्र में छेदोपस्थापना चारित्र जोड़कर पञ्चयाम किया। इस परिवर्तन में श्वेताम्बर कारण थे। इस परिवर्तन का कारण था मनुष्यों की विचार-भिन्नता। तीर्थङ्कर आदिनाथ के जीव ऋजु-जड़ थे। दूसरे से तेईसवें तीर्थङ्कर के काल के जीव ऋजुप्राज्ञ थे, परन्तु महावीर के काल के जीव वक्रजड़ थे।
24. ऐसा उल्लेख नहीं है। अचेल, महावीर के शिष्य गौतम के केशी ने अपने 500 शिष्यों के साथ महावीर का धर्म (पंचयाम तथा अचेल धर्म) स्वीकार किया था। वस्तुत: 'रत्नत्रय (सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र) दोनों का मूल लक्ष्य था।'
25. इन्द्रभूति गौतम गणधर से गुर्वावलि प्रारम्भ होती है। इन्होंने ही बारह अङ्गों को संयोजित किया और सुधर्मा को सौंपा। सुधर्मा ने जम्बू को सौंपा।
26. 683 वर्षों तक अङ्गज्ञान की परम्परा क्षीण होते हुए अङ्ग, भी अविच्छिन्न रही।
27. अङ्गबाह्य श्रुत भी लुप्त हो गया।
28. मिट्टी में पैर रखने पर जैसे चिह्न बनते हैं वैसे भगवान के ऊपर चरण चिह्न पूज्य है।
29. **अवान्तर पन्थ भेद**

(क) भट्टारक पन्थी (13वीं शताब्दी)। ये मूर्तिपूजक ये मुखपट्टी हैं।

(ख) तारणपन्थी (15वीं शताब्दी)। ये मूर्तिपूजक नहीं, शास्त्रपूजक हैं।

(ग-घ) तेरहपन्थी और बीसपन्थी (17वीं शताब्दी)। ये दोनों मूर्तिपूजक हैं तेरहपन्थ में स्त्रियाँ भगवान का अभिषेक नहीं कर सकतीं। इनके यहाँ पूजा में सचित्त पुष्प, नैवेद्य आदि नहीं चढ़ाया जाता। बीसपन्थ में ये दोनों बातें स्वीकृत हैं तथा ये भगवान को चन्दन और फूलों से अलङ्कृत भी करते हैं।

(ङ) कहानपन्थी या मुमुक्षुपन्थी या सोनगढ़ी (20वीं शताब्दी)। ये निश्चनय मार्ग का अनुसरण करते हैं तथा तेरहपन्थी की तरह मूर्तिपूजक हैं।

30. गुर्वावलि-गौतम, सुधर्मा, जम्बू, विष्णु, नन्दिमित्र, अपराजित, गोवर्धन, भद्रबाहु।

इसी तरह अन्य अवान्तर भेद भी देखे जा सकते हैं। दार्शनिक सिद्धान्तों की व्याख्या में भी कहीं-कहीं थोड़ा अन्तर मिलता है। (जैसे-प्रमाण-लक्षण, बन्ध-प्रक्रिया आदि)।

-एम.ए. (संस्कृत), आचार्य जैनदर्शन, साहित्य, प्राकृत, जैन न्यायतीर्थ, हिन्दी साहित्यरत्न, दमोह

अशुचि भावना

श्रीमती अभिलाषा हीरावत

रज विरज से मिलकर बनी ये दे है तेरी
हाड-माँस लहु संग व्याधिमय है देही,
केसर, चन्दन, पुष्प सुगन्ध जड़ से सजा ले देह सारी
फिर भी ये अपावन मल-मू भरित
निशदिन अशुचि भण्डारी
दिन रैन करे उपाय देह का, रहे ये अशुचि से मैली
कितनी कर ले सम्भाल,
फिर भी रोम-रोम रोग दशा फैली
चमड़ी के वेष्टन के भीतर मलमूत्र,
विष्टा अशुचि ही व्याप्त है।
बाह्य रूप पर मोहित प्राणी, मिथ्यात्व को प्राप्त है,
क्षणकान्त विकारी जड़ देह चाहना बुद्धिमानी नहीं
निरख ले भीतरी हर अंग को,
कोई भी रुचिर रणमीय नहीं
अपनी देह आप परख ले, ना कर नादानी
तू चेतन, देह अचेतन, देह जड़ पर तू तो ज्ञानी
अनादि से रीत चलाई, क्षण प्रतिक्षण है देह सजाई
अब भेद है करना
अपवित्र, रोगी, नश्वर को छोड़,
उत्तम आत्म को है चुनना
निस्सार तुच्छ निन्दनीय देह मोह को अब त्याग दे
विषय भोग काम-वासना को उखाड़ कर तू फेंक दे
ज्ञान ज्ञान तप धर्म सेवन से कर्म बन्धन हैं टूटते
देह के सत् दर्शन से भव भ्रमण हैं छूटते
देह लिप्तता आत्मा के आवरण का कारण है
अशुचिता देख देह अनासक्त रहना ही निवारण है
दुर्लभ मनु भव को भोग में ना करें व्यय
देह से आत्म सेवा कर, करें कर्मों का क्षय
अभोगी, अमोही बन छोड़ योगों की लिप्तता
कर्म निर्जरा से बढ़ती जाएगी देह की निर्लिप्तता
'सनत्कुमार' ने अप्रमत्त हो 'अशुचि भावना' भायी
अनुप्रेक्षा से आचरित कर त्वरित मुक्ति है पायी
'अशुचि भावना' की अनुप्रेक्षा कर ले रे भवी प्राणी!
दिखला रही मुक्ति पथ हमको 'मुदित' जिनवाणी।

-1101, वुड साइड, जी साउथ गोखले रोड़,
प्रभादेवी, मुम्बई-400025 (महाराष्ट्र)

हे मोक्षमार्ग के पथिक

श्री धीरज डोसी

(पूज्य उपाध्यायप्रवर पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. के चरणों में भाव भरी श्रद्धाञ्जलि)

व्यक्तित्व मिला बहुमूल्य हमें,
जो 'मानचन्द्र' बन महका था।
ज्ञान और वैराग्य किरण से
सबका जीवन चहका था।

सूर्य नगरी धार्मिक नगरी कण-कण में हर्ष अपार भरा।
जिनशासन के अमूल्य रत्न तुमने जीवन अपना सफल किया।।

रत्नसंघ हर्षित है तुम-सा ज्ञानी गुरुवर मिला।
हे मोक्षमार्ग के पथिक तुम्हीं से मुक्तिपुरी का सन्देश मिला।।

यही भावना भाते हैं हम,
तुम सा ज्ञानी गुरुवर जन-जन को मिले।
भव भ्रमण मिटे पंचमगति मिले,
रत्नत्रय की छाँव मिले।।

ज्ञान वैराग्य सुमेरु का तुम,
सम जीवन सबको मिले।
चाह यही है एकमात्र बस,
ज्ञान की ज्योति हृदय जले।।

-प्रभारी, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ,
जोधपुर (राजस्थान)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

श्री गौतमचन्द जैन

श्रमणों का संविधान-प्रवचनकार-योगिराज श्री अरुणमुनिजी महाराज, कार्यकारी सम्पादक-हुकमचन्द जैन 'मेघ' दिल्ली। **प्रकाशक**-रत्नत्रय प्रकाशन, दिल्ली, 424, डी-मॉल, रोहिणी वेस्ट, नईदिल्ली-110085, **पृष्ठ**-300

प्रस्तुत रचना 'श्रमणों का संविधान' प्रवचनकार योगिराज श्री अरुणमुनिजी म. के व्याख्यान हैं जो श्री दशवैकालिक सूत्र पर आधारित हैं तथा रत्नत्रय प्रकाशन का प्रथम सोपान है। दशवैकालिक सूत्र 32 आगमों में एक मूल अंग शास्त्र है। आचार्य देववाचकसूरि ने आगम शास्त्रों के दो भेद बताये हैं-कालिक और उत्कालिक। उत्कालिक अंगशास्त्रों में दशवैकालिक प्रथम स्थान पर है। यह आगमों में अग्रणी धर्मशास्त्र है जिसे श्रमणधर्म का हार्द कहा जा सकता है। इसलिये नवदीक्षित साधु-साध्वियों को श्रमणधर्म का एवं श्रमणों की समाचारी का ज्ञान कराने के लिए सर्वप्रथम दशवैकालिक सूत्र का अध्ययन कराया जाता है। इस शास्त्र में साधु-जीवन के आचार-गोचर विश्लेषण के साथ जीवविद्या की चर्चा की गई है। इसमें श्रमणाचार की हर क्रिया का वर्णन है जैसे कि साधु कैसे चलें, कैसे बैठें, कैसे खड़े हों, कैसे खाएँ, कैसे बोले, कैसे सोएँ, कैसे गोचरी करें आदि। साधु सम्पूर्ण कार्य यतना पूर्वक करें। साधुओं के सम्पूर्ण क्रियाकलाप और समाचारी का इसमें वर्णन होने से इसे श्रमणों का संविधान कहा जा सकता है।

श्री अरुणमुनिजी म.सा. ने दशवैकालिक सूत्र की गाथाओं को आधार बनाकर सुन्दर सरल हिन्दी भाषा में प्रवचन फरमाये हैं जो सभी साधु-साध्वियों के लिए सहज, सुगम और हृदयंगम करने योग्य हैं। इसमें आवश्यकतानुसार अनेक स्थानों पर आंग्लभाषा के शब्दों का भी सुन्दर प्रयोग किया गया है, जिसमें विषय-वस्तु स्पष्ट हो जाती है और पाठक को सरलता से समझ में आ जाती है। दशवैकालिकसूत्र की गाथाओं के आधार पर अध्ययनों का नामकरण किया गया है जो समीचीन है, जिससे अध्ययन के नाम से ही विषय-वस्तु का बोध हो जाता है। साथ ही अन्य शीर्षक भी विषयानुसार एवं जिज्ञासोत्पादक हैं। स्थान-स्थान पर हिन्दी भाषा में कवितायें लिखी गई हैं जो प्रासंगिक, रुचिकर एवं प्रेरणादायी हैं। प्रथम अध्ययन द्रुमपुष्पिका को दो अध्ययनों में, द्वितीय अध्ययन श्रामण्यपूर्वक को दो अध्ययनों में, तृतीय अध्ययन क्षुल्लकाचारकथा को दो अध्ययनों में, चतुर्थ अध्ययन धर्मप्रज्ञप्ति या षट् जीवनिकाय को छह अध्ययनों में, पञ्चम अध्ययन पिण्डैषणा को पाँच अध्ययनों में, षष्ठ अध्ययन महाचारकथा को दो अध्ययनों में, सप्तम अध्ययन वाक्यशुद्धि को एक अध्ययन में, अष्टम अध्ययन आचारप्रणिधि को चार अध्ययनों में, नवम अध्ययन को चार अध्ययनों में प्रस्तुत किया है। साथ ही प्रथम चूलिका को एक और द्वितीय चूलिका को पाँच अध्ययनों में प्रस्तुत किया गया है। सभी अध्ययनों को विषय से सम्बन्धित सुन्दर चित्रों से भी सुसज्जित किया गया है जो आकर्षक एवं अतीव रमणीय हैं। कार्यकारी सम्पादक श्री हुकमचन्दजी जैन मेघ ने कुशलतापूर्वक श्रेष्ठ सम्पादन किया है। प्रस्तुत पुस्तक केवल साधु-साध्वियों के लिए ही नहीं, अपितु सभी गृहस्थ श्रावक-श्राविकाओं के लिए भी पठनीय एवं आचरणीय है।

-पूर्व डी.एस.ओ., 70, 'जयणा', विश्वकर्मा नगर-द्वितीय, महारानी फॉर्म, जयपुर (राजस्थान)

चतुर श्रावक कभी युक्ति से तो कभी भक्ति से जोड़ता ही है। जोड़ने वाला श्रावक होता है, तोड़ने वाला श्रावक नहीं होता। आप यदि जोड़ने वाले श्रावक हैं तो एक-दूसरे को प्रेम से समझाएँ, नज़दीक लाने की कोशिश करें। जोड़ने वाले कम हैं, तोड़ने वालों की कमी नहीं है। सच्चा श्रावक हितबुद्धि से जोड़ने का काम करता है।

-उपाध्यायश्री मान

ISSN 2249-2011

समाचार विविधा

उपाध्यायप्रवर पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का समत्व भावों के साथ 2 जनवरी को समाधिमरण

आत्मार्थी, शान्त-दान्त-गम्भीर, प्रबल पुरुषार्थी पण्डित रत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का पौष शुक्ला सप्तमी विक्रम सम्वत् 2076, वीर निर्वाण सम्वत् 2546, दिनांक 02 जनवरी, 2020 को सायंकाल 5.55 बजे समत्वभावों के साथ चौविहार प्रत्याख्यान पूर्वक समाधिमरण हो गया। यह समाचार देश भर में विद्युत-वेग की तरह यत्र-तत्र-सर्वत्र पहुँच गए। उपाध्यायप्रवर के स्वर्गगमन हो जाने पर सकल जैन समाज स्तब्ध रह गया। पार्थिव देह का अन्तिम संस्कार जोधपुर में होने से समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्री संघ व श्रद्धालुजन जिसे जो साधन मिला, उसके माध्यम से पहुँचने का प्रयास करने लगे। 03 जनवरी को प्रात: काल से भक्तजन पहुँचने प्रारम्भ हुए तो 11 बजे के पूर्व हजारों-हजार श्रद्धालु उस दिव्य-दिवाकर को श्रद्धा-सुमन अर्पित करने आ पहुँचे। संघ के उत्साही कार्यकर्त्ताओं ने व्यवस्था बनाए रखने का प्रयास किया। जन-जन की श्रद्धा के केन्द्र उपाध्यायप्रवर का पार्थिव शरीर जो सुसज्जित खण्डी में विराजित किया गया, हजारों भाई-बहिनों ने नत-मस्तक हो अपनी श्रद्धा व्यक्त की। जय-जयकारों के गगनभेदी जयनाद, भाई-बहिनों के द्वारा एवं भजन मण्डलियों ने भक्तिगीत के माध्यम से तथा बैंड की धुन के साथ 11 बजे प्रारम्भ हुई महाप्रयाण-यात्रा में सकल जैन समाज के ही नहीं, राजनेताओं तक ने अपनी श्रद्धा दर्शायी। केन्द्रीय जलशक्ति मन्त्री श्री गजेन्द्रसिंहजी शेखावत, पूर्व गृहमन्त्री तथा वर्तमान में विधानसभा के प्रतिपक्ष नेता गुरुभक्त श्री गुलाबचन्दजी कटारिया, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री सतीशजी पूनिया जैसे बड़े नेताओं ने पार्थिव देह के दर्शन कर अपनी-अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

प्रदेश के मुख्यमन्त्री माननीय श्री अशोकजी गहलोत उनके साथ पाली के पूर्व सांसद श्री बद्रीरामजी जाखड़ तथा स्थानीय स्तर के कांग्रेसी नेताओं ने भी महाप्रयाण-यात्रा में अपनी भागीदारी निभाई। महाप्रयाण यात्रा पावटा, मेड़तीगेट, घण्टाघर, सिरे बाजार होते हुए सिंवाची गेट स्वर्गाश्रम लगभग 2.30 बजे पहुँची।

उपाध्यायप्रवर का जन्म जोधपुर में हुआ, दीक्षा भी जोधपुर में हुई और स्वर्गवास भी जोधपुर में होने से जैन समाज ही नहीं, जैनेतर समाज भी उनकी संयम-साधना का मुरीद रहा, इसलिए समाज के हर वर्ग ने अन्तिम-यात्रा में भाग लेने में अपनी भागीदारी निभाई। पीपाड़, गोटन, जयपुर, सवाईमाधोपुर, मेड़ता आदि अनेक ग्रामनगरों से श्रद्धालुओं ने भी इस महाप्रयाणयात्रा में भाग लिया। जोधपुर संघ द्वारा बाहर से पधारने वाले सभी श्रद्धालुओं के भोजन की व्यवस्था हनुवन्त गॉडर्न, पावटा बी रोड़ पर रखी गई। जोधपुर संघ की सम्पूर्ण टीम, श्राविका मण्डल, युवक परिषद् के सभी सदस्यों ने दिनभर व्यवस्था में अपना महत्त्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया।

गुणानुवाद सभाओं के आयोजन

4 जनवरी, 2020 शनिवार को पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की सन्निधि में पीपाड़ में, मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. की सन्निधि में जोधपुर में, सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणजी म.सा. की सन्निधि में अहमदाबाद में, श्रद्धेय श्री मनीषजी म.सा. की सन्निधि में नन्दुरबार में, साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. के सान्निध्य में प्रताप नगर-जयपुर में तथा इसी प्रकार जो सन्त-सती जहाँ विराजित थे, उन स्थानों पर गुणानुवाद सभा आयोजित कर सरलता, सेवा एवं साधना की प्रतिमूर्ति श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गयी तथा उनके जीवन से प्रेरणा ग्रहण की गई। देश के अनेक आचार्यों एवं सन्त-

महासतीवृन्द के सान्निध्य में भी गुणानुवाद किये गये। कई स्थानों से श्रद्धाञ्जलि पत्र भी हस्तगत हुए यहाँ पर विभिन्न स्थानों पर आयोजित गुणानुवाद सभाओं का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है।

पूज्य आचार्यप्रवर की सन्निधि में पीपाड़ में गुणानुवाद सभा

पीपाड़शहर-रत्नसंघ के नायक आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी-सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 11 तथा व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा. आदि ठाणा 9 पीपाड़ विराजित थे। उनके सान्निध्य में 04 जनवरी, 2020 को राता उपासरा में प्रात: 9.15 बजे से गुणानुवाद सभा आयोजित हुई। यहाँ व्युत्क्रम से संक्षिप्त विचार संकलित है।

परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा.-बोलकर रहने का नहीं, अब करने का समय है। एक बात रखूँ-पत्थर ठण्डा है या गर्म, रेत ठण्डी है या गर्म, हवा ठण्डी है या गर्म, पानी ठण्डा है या गर्म, आदमी ठण्डा है या गर्म। सामान्य आदमी भी प्रमोद के समय प्रसन्न नजर आता है और गुस्से के समय गर्म हो जाता है। जबकि क्रोध के वातावरण में उत्तेजित नहीं हो, आकुलता न हो, यह स्वभाव दशा है। सामायिक क्या है? साधना क्या है? हर स्थिति में सम रहना सामायिक है। क्रोध का प्रसंग उपस्थित होने पर भी गर्म नहीं होना, विभाव में नहीं जाना यही साधना का सच्चा स्वरूप है। ऐसे अवसर आने पर विचलित नहीं होना साधना का प्रतिफल है। हर स्थिति में सम रहना उपाध्याय श्री की विशेषता रही। हमारी स्थिति क्या है? चिन्तन करें।

उपाध्यायश्री ने हर स्थिति में सम रहना सीख लिया था। आहार में क्या आया, क्या नहीं आया। उसको न देखकर जो दिया, जितना दिया, वह ग्रहण कर लिया। जीतु (जितेन्द्रमुनिजी) ने दवा दी तो ले ली। यदि नहीं दी तो यह नहीं कहा कि आज दवा नहीं दी। जीतू ने कह दिया आज अष्टमी है, उपवास करना है। कह दिया तो उपवास ही करनो है। जीतू ने कहा बाबजी अष्टमी के बाद दशमी आ रही है, वदि दशमी का आप उपवास करते ही है, अगर नवमी को पारणा नहीं करो तो तेले की साधना हो जायेगी और उपाध्याय श्री ने तेला कर लिया। आपकी और हमारी क्या स्थिति है। हमारे जीवन में कितना आग्रह है? हर बात में अपनी चलाना चाहते हैं। अगर हमें उनकी तरह रहना आ जाये तो घर में कभी टकराव होने वाला नहीं है।

हलवे का गुणगान करलो, क्या पेट भर जायेगा। मिठाई की प्रशंसा करने से क्या स्वाद आ जायेगा। उपाध्यायश्री के प्रेम सौहार्द की बातों को उनकी ही तरह, अपने जीवन में भी ये बातें आए ऐसी सोच, ऐसा लक्ष्य रहना चाहिये। हर स्थिति व वातावरण में सभी के प्रति समदृष्टि वाले भावों को बनाए रखना है।

अन्तिम समय तक भी न कोई शिकवा है न ही कोई शिकायत। बिठा दिया तो बैठ गये। लिटा दिया तो लेट गये। किसी भी तरह की अपनी तरफ से हलचल नहीं। उनके गुण अनन्त है, कहना चाहें तो भी कहने में नहीं आ सकते। पर लेना चाहें तो ले सकते है। अगर आपको सेवा का गुण अच्छा लगा तो सेवा का, सरलता का गुण अच्छा लगा तो अपना लीजिये। सजगता, सरलता, क्षमता के अनेक प्रसंग सुने। उन्हें सुनकर भेदविज्ञान को ध्यान में रख चलेंगे तो अनन्तानंत कर्म बंधन से बच जायेंगे। सेवा, समान व्यवहार, छोटों की सेवा के गुणों में से गुण ग्रहण कर जीवन को सुन्दर बनायें।

महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.-पौष शुक्ला सप्तमी के समय एक चुस्त ज्ञान सूर्य अस्त हो गया और रत्नसंघ को सुस्त कर गया। उपाध्यायप्रवर स्थविर पद से विभूषित थे। गुरु हीरा के शासन की विरल विभूति थे। 84 वर्ष से ऊपर की अवस्था थी। आगामी 14 जनवरी को 86वें बसन्त में प्रवेश करने से पूर्व ही वे

महापुरुष प्रयाण कर गये। जब उपाध्यायप्रवर ने 84वें वर्ष में प्रवेश किया था तब आचार्य भगवन्त ने उनके लिये विशेष पत्र लिखवाया था। पत्र में उल्लेख किया गया कि आपश्री ने 84 वर्ष पूरे कर चौरासी के चक्कर के फेरे कम कर दिये हैं। श्रुत स्थविर की ज्ञान गरिमा अद्भुत थी। सजगता-सरलता-सौम्यता-विनयता जेसे गुण आपके संयमी जीवन की विभूषा थी। आचार्यप्रवर ने समय-समय पर जो निर्णय लिये उन पर सदैव उपाध्याय प्रवर की सहमति रही। संघ को आगे बढ़ाने में उपाध्यायश्री का पूरा सहयोग रहा। विगत 6 वर्षों से शारीरिक कारणों से आप जोधपुर विराज रहे थे। गौतममुनिजी के निर्देशन में जितेन्द्र मुनिजी ने अग्लान व अहोभाव से उपाध्यायप्रवर की महनीय सेवा का लाभ लिया। उनके गौरवशाली गुणों में से कुछ या जितने भी गुण जीवन में उतार सकें, अपनाकर जीवन धन्य बनायें।

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.-राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की रचित पंक्तियाँ, श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर के साधनामय जीवन के 56 साल पर जब दृष्टिपात करते हैं, तो यथोचित प्रतीत लगती हैं-

जो इन्द्रियों को जीतकर, धर्माचरण में लीन है,
उनके मरण का सोच क्या, वो मुक्त बन्धनहीन है।
जो धर्मपालन से विमुख, जिनको विषय ही भोग्य है,
संसार में मरना उन्हीं का, सोचने के योग्य है।।

साधना के समय किसी भी प्रकार का संशय नहीं आया, ऐसी निर्मल संयम शुद्ध साधना उपाध्यायप्रवर की रही। यह तब ही सम्भव है-जब तीन बातों का प्रारम्भिक चरण से ही ध्यान रखा जाय-1. लक्ष्य दृष्टि, 2. परिपूर्ण पुरुषार्थ एवं 3. अनन्त धैर्य। धैर्य को पिता तुल्य बताया है। उपाध्यायप्रवर के संयमी जीवन में इन सभी की झलक देखने को मिली। मर्यादा पालक की छत्रछाया में साधना आराधना करने का मुझे भी सौभाग्य मिला। वे सेवामूर्ति थे। बड़ों की सेवा तो प्राय: करने के उनके भाव रहे ही, पर मेरे जैसे छोटे सन्त की भी उन्होंने सेवा की। वे सिलाई बहुत अच्छी करते। मेरे भी कपड़ों की सिलाई की। कई बार मेरे कपड़े भी बिना मुझे बताये धो दिया करते। लघुनीत भी मौका देखकर मेरे से पहले ही परठने के लिये पधार जाते। महापुरुष रक्षा कवच होते हैं। इनके जाने से निश्चित ही जिनशासन की क्षति हुई है। उनके सरलता-सहजता के गुण हमारे जीवन में भी आयें।

श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा.-उपाध्यायप्रवर के तेजस्वी चेहरे की अकृत्रिम सौम्यता ने प्रथम दर्शन में ही मुझे प्रभावित किया। इतनी ऊँचाई (उपाध्याय पद) पर पहुँचने के बाद भी उन्होंने अपनी सरलता को सजोकर रखा। असीम आत्मशक्ति के धनी के सन्दर्भ में मुझे एक श्लोक याद आ रहा है-

धन्यं नेत्रं परमपुनीतं, दर्शनं येन चाप्तम्, धन्या जिह्वा गुण-श्रोतृकर्णौ च धन्यौ।
चेतो धन्यं स्मरणनिरतं, पादलग्नं ललाटम्, भक्त्या विनतं वन्दमानं, विश्वविश्वैकधन्यम्।।

उनके शुभदर्शनों को प्राप्त करने वाले नेत्र धन्य हैं। उनके गुणगान में निरत रहने वाली जिह्वा भी धन्य है। उनके गुणों को श्रवण करने वाले कान भी धन्य हैं। उनके स्मरण में सतत लगा रहने वाला चित्त भी धन्य है। उनके पवित्र चरणों को स्पर्श करने का सौभाग्य जिस ललाट को मिला, वह ललाट भी धन्य है और उस विनत महापुरुष को भक्ति से वन्दन करने वाला यह समूचा विश्व धन्यता का अनुभव कर रहा है।

श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा.-उपाध्यायप्रवर ऐसा निर्मल संयमी जीवन जीकर चले गये, जिसके कारण उन महापुरुष का स्मरण सदैव रहेगा। इस संघ को सूर्य-चन्द्र रूप दो-दो वरदहस्त प्राप्त थे। अब ये चन्द्र हमारे बीच नहीं रहे। वे सेवाभावी थे। श्रद्धेय श्री माणकमुनिजी म.सा. की सेवा का सुन्दर आदर्श प्रस्तुत कर गये। सहज साधक ने रागद्वेष रहित साधना की। गुरुगम्य निर्मलज्ञान के धारी रहे।

सेवाभावी महासती श्री विमलावतीजी म.सा.–उपाध्यायप्रवर के लिए सम्बोधन कर कहा–दीपक जला, समय के साथ बुझ गया, पर जगमग रोशनी दे गया। उपाध्याय श्री सबके तारणहार थे। वे सबके उपकारी थे। वे चौथे आरे की बानगी थे। अब वे शरीर से हमारे बीच नहीं हैं, पर उनके अनेकानेक गुण तो हमारी स्मृति में हैं। वे महान् सेवाभावी सन्तप्रवर थे। उनके गुणों को जीवन में उतारकर, आत्मा का उत्थान करें।

व्याख्यात्री महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा.–वे ओजस्वी, वर्चस्वी, यशस्वी सन्तप्रवर थे। उनके प्रयाण से समूचा जैन जगत आर्त्त कर रहा है। उपाध्यायप्रवर का सारा जीवन गुणों से भरा हुआ था। साधना में सदैव सजग रहे। स्वाध्याय की पुस्तक हमेशा हाथ में रहती। हित मित भाषा फरमाकर सामने वाले को सन्तुष्ट कर देते।

महासती श्री वृद्धिप्रभाजी म.सा.–धन्य है जीवन तुम्हारा, तुम मरकर भी अमर हो गये। उपाध्याय भगवन्त प्रथम उपाध्याय के रूप में रत्नसंघ में अधिष्ठित हुए। आपका आचार–विचार संघ की गौरव गरिमा के अनुरूप रहा। वे चाँदनी के समान शीतलता के पुञ्ज थे। वे ज्ञान से जिनशासन को प्रकाशमान कर रहे थे। सरलता, समता, सहिष्णुता के पर्याय एवं प्रवचन पटु थे। मुख मण्डल पर सदैव प्रसन्नता की झलक विद्यमान रहती थी।

गुणानुवाद सभा का संचालन करते हुए संघ मन्त्री श्री सुमतिचन्दजी मेहता ने अपने भाव व्यक्त किये। सभा में युवारत्न श्री नमनजी मेहता, श्री पंकजजी कोठारी, श्री नेमीचन्दजी कांकरिया, श्री धनपतजी मेहता, श्रावक संघ के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री बुधमलजी बोहरा, श्री परेशजी मुथा आदि सुश्रावक एवं श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्रीमती बीनाजी मेहता ने भी अपने भाव व्यक्त किये।

शक्तिनगर जोधपुर में गुणानुवाद सभा

उपाध्यायप्रवर की महाप्रयाण यात्रा के दूसरे दिन 04 जनवरी, 2020 को सामायिक–स्वाध्याय भवन, शक्तिनगर में गुणानुवाद सभा का आयोजन रखा गया। प्रात: 9.00 बजे मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 7 का पदार्पण हुआ तो कुछ समय बाद महासती श्री शशिकलाजी म.सा. एवं महासती श्री कान्ताजी म.सा. जो व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. की सेवा में दिग्विजयनगर विराजित थे, करीब 12 किलोमीटर का विहार कर शक्तिनगर पधारे। शक्तिनगर का सामायिक–स्वाध्याय भवन ऊपर–नीचे एवं सीढ़ियों–गैलेरियों तक भक्तों की विशाल उपस्थिति से शोभित था।

सर्वप्रथम **श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा.** ने उपाध्यायप्रवर के एक–एक गुण का वर्णन करते हुए उनकी संयम–साधना के अंश सुनाए। उपाध्याय भगवन्त की सेवा में प्रतिपल सन्नद्ध रहने वाले **श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.** ने उपाध्यायप्रवर की सेवा में रहते हुए अपने अनुभवों का सजीव चित्रण कर उपाध्यायप्रवर की सजगता रेखांकित की। साथ ही अपने आपको सौभाग्यशाली बताया कि मुझे भगवन्त की सेवा का विशेष अवसर प्राप्त हुआ। **वयोवृद्ध श्री अभयमुनिजी म.सा.** ने भी उपाध्यायप्रवर को करीब से देखा और गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि उपाध्यायश्री की सहनशीलता गजब की थी। **व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा.** के अनुभव उद्धृत करते महासती श्री कान्ताजी म.सा. ने उपाध्यायप्रवर के गुणगान कर श्रद्धा समर्पित की।

गुणानुवाद–सभा में शासन सेवा समिति के सदस्य **श्री नौरतनमल जी मेहता, वीरभ्राता श्री महेन्द्रजी सेठिया,** रत्नसंघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना,** संघ के पूर्व महामन्त्री **श्री अरुणजी मेहता,** संघ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री मनमोहनजी कर्णावट,** संघ संरक्षक **श्री प्रसन्नचन्दजी बाफना** ने गौरवशाली रत्नसंघ में आचार्य–उपाध्याय के परस्पर प्रेम को रेखांकित करते रत्नसंघ की गरिमा और महिमा में उपाध्यायप्रवर के योगदान और संयम–साधना पर विचार रखे। संघ के कार्याध्यक्ष **श्री आनन्दजी चौपड़ा** ने अपनी ओर से उपाध्यायप्रवर के

गुणों का उल्लेख करते हुए जोधपुर एवं विशेष रूप से शक्तिनगर के युवारत्नों की सेवा और भक्ति को महत्त्वपूर्ण बताया।

संघ के राष्ट्रीय **अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री प्रकाशजी टाटिया** ने अपने सम्बोधन में संघहित में उपाध्यायप्रवर के योगदान का उल्लेख करते हुए कहा कि उस महापुरुष ने आबाल-वृद्ध सबको अपनत्व दिया। उपाध्यायप्रवर की अपणायत इतनी सहज थी कि हर कोई उस महापुरुष का प्रेम पाने को आतुर रहता। टाटिया साहब ने अपनी ओर से एवं रत्नसंघ परिवार की ओर से उपाध्यायप्रवर के स्वर्ग-गमन को अपूरणीय क्षति बताया तथा उनकी स्मृति स्थायी रखने के लिए उनके गुणों को आत्मसात् करने पर बल दिया।

संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक एवं **संघ-सेवा शिरोमणि श्री मोफतराजजी मुणोत** ने कहा कि हम भले ही बड़ी-बड़ी तपस्या कर सकें या न भी कर सकें तो भी उपाध्यायप्रवर की सरलता का गुण अपनाकर मन की तपस्या करने में तो पीछे नहीं रहे। गुरु हस्ती की भावना रखने के लिए पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. ने उपाध्याय-पद स्वीकार किया और निभाया भी, परन्तु वे उपाधि को व्याधि मानने वाले रहे हैं, इसलिए उन्होंने अपनी ओर से आचार्यश्री को संघ व्यवस्था में यह कहकर कि संघनायक का आदेश ही नहीं, संकेत भी सर्वोपरि होता है, उनको पूर्ण सहयोग किया। संघ की एकता बनी रहे, इसमें उपाध्यायप्रवर का योगदान सदा याद किया जायेगा।

स्थानीय श्राविका मण्डल की अध्यक्ष **श्रीमती सुमनजी सिंघवी** ने अपनी ओर से एवं श्राविका मण्डल की ओर से श्रद्धा-सुमन अर्पित किए, वहीं **डॉ. श्रीमती मीताजी मुल्तानी** ने भी उपाध्यायप्रवर के गुणगान किए।

संघ के संयुक्त महामन्त्री **श्री प्रकाशजी सालेचा** ने उपाध्यायप्रवर के अनेकानेक गुणों के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की।

संघ महामन्त्री एवं **वीरभ्राता श्री धनपतजी सेठिया** ने उपाध्यायप्रवर के बचपन-यौवन के प्रमुख उदाहरण उद्धृत करते हुए कहा कि शुरू से उनकी धर्मभावना तो रही ही, गुरु हस्ती और पं. रत्न श्री लक्ष्मीचन्दजी म.सा. की कृपा से उनकी संयम-साधना उत्तरोत्तर बढ़ी, फलीभूत हुई। अग्लानभाव से सेवा का उपाध्यायप्रवर का आदर्श जन-जन की जिह्वा पर है, मैं सश्रद्धा-सभक्ति उस दिव्यात्मा का स्मरण कर गुणकीर्तन करता हूँ।

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि संयम की श्रेष्ठ साधना करने वाले उपाध्यायप्रवर ने इस देह को छोड़कर देहातीत बनने की दिशा में प्रयाण किया है, उपाध्यायप्रवर का स्वर्ग-गमन संघ के लिए क्षति है, तो भी हम-सबको उनकी सरलता-सहजता-सजगता सर्वदा प्रेरणा देती रहेगी। उपाध्यायप्रवर अल्पभाषी थे-मधुरभाषी थे। वे शान्त थे, सौम्य थे। 'आनन्द है' का हर समय उनका वचन सबको आनन्दित करता था। उनका नाम मान था, पर वे विनयमूर्ति थे। वे संतोषी थे और जो भी सन्तोषी होता है वह पाप-कर्म नहीं करता। उनका स्वभाव ही ऐसा था कि-''दे जिको खा लेणो और केवे जिको सुण लेणो।'' मुनिश्री ने स्वर्गगमन तक उपाध्यायप्रवर की सजगता को बड़ी उपलब्धि बताया।

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर को सूर्य-चन्द्र की तरह बताते कहा कि दीर्घ द्रष्टा गुरु हस्ती ने दोनों पदधारियों का चयन किया, इसलिए वे हमारे आराध्य हैं, पूजनीय हैं। उपाध्याय ज्ञान के भण्डार होते हैं। (शेष विचार इसी अंक में प्रकाशित प्रवचन में द्रष्टव्य हैं।)

उपाध्यायश्री जी का नाम मान था पर वे संघ के अभिमान थे। हमारा अभी-अभी मान गया, पर संघ का अभिमान सुरक्षित है। हमें उसे सम्भालकर रखना है।

मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. जो विगत कई वर्षों से उपाध्यायप्रवर की सेवा-सन्निधि में रहते आए हैं, अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा-उपाध्यायप्रवर की साधना विशेष थी उस महापुरुष का जीवन खुली किताब था। एक बार प्रभावना को लेकर किसी का प्रश्न हुआ-तो वाक् चातुर्य का परिचय देते उपाध्यायप्रवर ने

प्रत्युत्तर में कहा-"अप्रभावना से बचते रहना ही सच्ची प्रभावना है।" उपाध्यायश्री जी अप्रमत्त थे। उपाध्यायश्री जी यदा-कदा अपने भक्तों को कहते भी थे कि आप सामायिक में आसन चञ्चल रखेंगे, तो देवताओं का आसन कैसे चलायमान होगा? (शेष प्रवचन-संस्मरण पृथक् से इसी अंक में द्रष्टव्य हैं।)

अन्तिम वक्ता के रूप में जोधपुर संघ अध्यक्ष श्री सुभाषजी गुंदेचा ने अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की तथा गुणानुवाद सभा का सफल संचालन युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा द्वारा किया गया।

अहमदाबाद में गुणानुवाद सभा-04 जनवरी, 2020 को श्रद्धेय श्री नंदीषेणमुनिजी म.सा. एवं श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में श्री एलिस ब्रिज स्थानकवासी जैन संघ, पालड़ी-अहमदाबाद में गुणानुवाद सभा रखी गई। सर्वप्रथम **श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा.** ने उपाध्याय भगवन्त का जीवन परिचय दिया एवं आपकी सरलता, सादगी, संयमनिष्ठा, समता, सेवा, स्वाध्याय, आगमनिष्ठा, आचार्यश्री के प्रति समर्पण भाव, स्नेह, प्रेम, वात्सल्य, निर्भयता, ज्ञान-क्रिया के बेजोड़ आदर्श, तप-त्याग आदि अनेक गुणों का उल्लेख किया।

उपाध्यायश्री को श्रद्धाञ्जलि देते हुए श्रावक रत्न **श्री पदमचन्दजी कोठारी** ने जोधपुर अन्तिम यात्रा का सजीव चित्रण करते हुए कहा कि आप महायोगी, उच्च कोटि के साधक, महावीर एवं गुरु हस्ती के अनमोल मोती मानरहित थे। आप जिनशासन की शान, सन्त समाज की शान, मर्यादा पुरुष, चारित्र धर्म की खान, आगम के जीवंत ज्ञान, मर्यादा का सदा भान रखने वाले गुरु हस्ती के महान् शिष्य थे। आपके दर्शन, मांगलिक एवं धर्म ध्यान की प्रेरणा मात्र से दर्शनार्थी को शान्ति एवं सुखद अनुभव होता था। आपकी सद्प्रेरणा को आत्मसात् करेंगे तो सुख, शान्ति का अनुभव होगा। श्री एलिस ब्रिज स्थानकवासी जैन संघ एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-अहमदाबाद की ओर से श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई। श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की बहनों द्वारा-"गुरुवर मान महान् थे, जिनशासन की शान थे" स्तवन प्रस्तुत कर श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई।

अन्त में **पूज्य श्री नन्दीषेणजी म.सा.** ने गुणानुवाद करते बताया कि उपाध्यायप्रवर अप्रमत्त सन्त थे। ज्ञान-ध्यान सिखाने को सदैव तत्पर रहते थे। सरल, सेवाभावी, विनयवान, सदा धर्म की ही प्रेरणा देने वाले, शरीर की ममता नहीं रखने वाले, समतावान एवं संयम-साधना में सहयोग प्रदान करने वाले सच्चे महान् सन्त रत्न थे। अप्रमत्तता उनके जीवन का विशेष गुण था। रत्नसंघ के नींव के पत्थर के समान उनको सदा याद किया जायेगा। गुणानुवाद सभा में लगभग 150 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। अन्त में 4 लोगस्स के ध्यान के साथ श्रद्धासुमन अर्पित किये।

-पदमचन्द कोठारी

नन्दुरबार (महाराष्ट्र)-पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-2 के सान्निध्य में 4 जनवरी, 2020 को गुणानुवाद सभा आयोजित की गयी। जिसमें श्रीमती मनीषाजी कांकरिया, मन्त्री श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, श्रीमती रंजनाजी कांकरिया, अध्यक्ष श्री जैन रत्न श्राविक मण्डल, श्रीमती मनीषाजी लुणावत, श्री निर्मलजी कांकरिया आदि श्रावक-श्राविकाओं ने उपाध्यायप्रवर के जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धा की अभिव्यक्ति की। तदनन्तर **श्रद्धेय श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.** ने उपाध्यायप्रवर के जीवन चरित्र का वर्णन करते हुए उन्हें पूर्ण पुरुष बताया। **श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.** ने फरमाया कि उपाध्यायप्रवर ने अपने जीवन में मोह को जीतने का प्रयास किया। अचलचन्दजी के पुत्र होने से वे व्रतों में सदैव अचल रहे, साथ ही छोटाबाई के अंगजात होने के कारण उन्होंने सदैव अपने को छोटा बनाकर रखा यह सब साधना मोह को जीतने पर सम्भव होती है। अन्त में चार लोगस्स का कायोत्सर्ग किया गया।

प्रताप नगर, जयपुर-साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में 4 जनवरी, 2020 को प्रात: 10 बजे आयोजित गुणानुवाद सभा में महासती श्री संगीताजी म.सा. ने उपाध्यायप्रवर के जीवन की अनेक घटनाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। महासती श्री चैतन्यप्रभाजी म.सा. ने भी उपाध्यायप्रवर के अनेक गुणों का विवेचन किया। सभा में उपस्थित श्री वर्धमान जैन स्थानकवासी श्रावक संघ, लालभवन के मन्त्री श्री विमलचन्दजी डागा, श्री विनोदजी सेठ, शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलालजी बाफना जलगाँव, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ जयपुर के अध्यक्ष श्री प्रमोदजी महनोत, जिनवाणी के सम्पादक डॉ. धर्मचन्दजी जैन ने श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए उपाध्यायप्रवर के गुणों का वर्णन किया तथा अपने जीवन को उनके अनुरूप बनाने का आह्वान किया। श्री राजकुमारजी बुरड़ ने भजन प्रस्तुत किया। महासती श्री सुमनलताजी म.सा. ने उपाध्यायप्रवर को भावभरी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की तथा उनके गुणों में से कोई एक गुण अपनाने का आह्वान किया। अन्त में चार लोगस्स का ध्यान कर दिवगंत आत्मा को श्रद्धाञ्जलित अर्पित की गयी। सभा में लगभग 400 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ जयपुर, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल जयपुर एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद् जयपुर द्वारा आयोजित इस गुणानुवाद सभा का संचालन श्री सुशील कुमारजी जैन, मन्त्री प्रताप नगर संघ ने किया। ***-सुरेश कोठारी, मन्त्री जयपुर संघ***

अजमेर-पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी **विदुषी महासती श्री सुशीलाकँवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा.** आदि ठाणा-8 के सान्निध्य में 4 जनवरी, 2020 को स्वाध्याय भवन में आयोजित गुणानुवाद सभा में विदुषी महासती श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. ने उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के जीवन एवं साधना पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उनके जीवन से हमें सीख लेकर कोई संकल्प करना चाहिये। महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. ने फरमाया कि संयम के प्रति रुझान ही उपाध्यायप्रवर का आदर्श रहा है। अन्य महासतीवर्यों ने भी गुणानुवाद किया। श्रावक वर्ग में श्री सी. पी. गाँधी, श्री विनीतजी रियाँ वाले, श्री प्रेमसुखजी सुराणा, श्री अशोकजी नाहर, श्री बलवीरजी पीपाड़ा, श्री राजेन्द्रजी रांका ने गद्य एवं पद्य में गुणानुवाद किया। ***-चन्द्रप्रकाश कटारिया, मन्त्री***

चेन्नई-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु के तत्त्वावधान में पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी **व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा.** आदि ठाणा-10 के सान्निध्य में 4 जनवरी, 2020 को प्रात: 9 बजे से ए.एम.के.एम. मेमोरियल ट्रस्ट पुरुषवाक्कम् में गुणानुवाद सभा आयोजित की गयी। इस गुणानुवाद सभा में चेन्नई महानगर के अनेक क्षेत्रों से विभिन्न संस्थाओं के अनेक पदाधिकारियों एवं प्रतिनिधि गण ने भाग लिया। महासती श्री हेमप्रभाजी म.सा. ने जिन नहीं पर जिन सरीखे, केवली नहीं पर केवली सरीखे के माध्यम से विस्तृत उल्लेख कर उपाध्यायश्री के गुणगान किये। श्री वर्षाजी म.सा. ने स्थानाङ्ग सूत्र की चौबीसी का उल्लेख करते हुए तथा श्री सिन्धुप्रभाजी म.सा. ने स्थानाङ्ग सूत्र के छठे ठाणे में वर्णित आत्मार्थी पुरुष की छह बातों पर्याय, परिवार, श्रुत, तप, लाभ, पूजा सत्कार के आधार पर उपाध्यायप्रवर के जीवन के अनेकानेक प्रेरणादायक संस्मरण प्रस्तुत किये। **अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री पी. शिखरमल सुराणा,** सुधर्म संस्कृति संघ तमिलनाडु के अध्यक्ष श्री पारसमलजी टाटिया, श्री गौतमराजजी सुराणा, श्री गौतमचन्दजी कटारिया, श्री जयमल्लजैन श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिखरचन्दजी बेताला, श्रीमती संगीताजी बोहरा, श्री रमेशजी जांगड़ा, श्री ललितजी बाघमार, श्री एच. महावीरचन्दजी ओस्तवाल, श्री नवरतनमलजी बाघमार, श्री चम्पालालजी बोथरा, श्री माँगीलालजी चोरड़िया, श्री महावीरजी तातेड़, श्री अशोकजी रांका, श्री विनोदजी जैन, श्री

जवाहरलालजी कर्णावट ने उपाध्यायप्रवर के उच्च जीवन के गुणगान किये।

महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा. ने उपाध्यायप्रवर की सरलता, विनम्रता, सेवा, पण्डित, समिति-गुप्ति पालन आदि अनेक सद्गुणों का विश्लेषण करते हुए उनके साधनामय संयमी जीवन पर अनेक उद्धरणों के साथ प्रकाश डाला। उन्होंने यह भी कहा-उपाध्यायश्री की मुख्य भावना थी कि साधु-साध्वीगण के समाचारी पालन में कठोरता आयी, अभिवृद्धि हुयी है **मेरी भावना है कि रत्नसंघ के हर श्रावक-श्राविका भी ज्ञानवान एवं क्रियावान् बनें।** महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. ने मांगलिक फरमायी। गुणानुवाद सभा का संचालन श्रावक संघ के मन्त्री श्री ज्ञानचन्दजी बाघमार ने किया। *-आर. नरेन्द्र कांकरिया, प्रचार-प्रसार सचिव*

कोट्टुर (कर्नाटक)-रत्नसंघीया व्याख्यात्री महासती श्री नि:शल्यवती जी म.सा. ने उपाध्यायप्रवर के समाधि पूर्वक देवलोक गमन पर चार-चार लोगस्स का ध्यान किया। तीन जनवरी को सामूहिक नवकार मन्त्र का जाप हुआ साथ ही 3-4 जनवरी को एकाशन, आयम्बिल, उपवास, बेला आदि तप हुए। 4 जनवरी को गुणानुवाद सभा रखी गयी जिसमें महासती मण्डल ने उद्गार व्यक्त किये-पूज्य उपाध्यायप्रवर पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का जीवन शान्त, सरल, सहज और सौम्य था, वे मौन साधक थे। बोलते कम थे, किन्तु उनका पूरा जीवन बोलता था। जैसे मन्दिर में मूर्ति विराजित है वह मूर्ति एकदम शान्त मुद्रा में रहती है वैसे उपाध्याय भगवन्त का जीवन एक जीती-जागती मूर्ति की तरह था। वे शिथिलाचार, आडम्बर और प्रपञ्चों से सदैव दूर रहते थे। वे आत्मार्थी साधक थे। उनका जीवन खुली किताब की तरह था कथनी-करनी में एक रूपता बेजोड़ थी।

जोधपुर शहर के नागसेठिया परिवार में जन्म लेकर आपके पण्डित रत्न बड़े लक्ष्मीचन्दजी म.सा. से जीवन में विरक्ति की शिक्षा मिली और अध्यात्मयोगी श्री हस्तीमलजी म.सा. के श्रीमुख से जोधपुर में दीक्षा अंगीकार कर **'समयं गोयम मा पमायए'** वाक्य का निष्ठापूर्वक दीर्घ काल तक जीवन में अनुसरण किया एवं जीवन सफल बनाया। संयम ही जीवन है इसे उन्होंने जीकर सिखाया। सादगी, सरलता, सहनशीलता की साक्षता प्रतिमूर्ति का जीवन इतना लोकप्रिय बन गया कि हजारों-हजार व्यक्ति आपको हृदय से याद करते हैं और सहज ही गुणगान करने लग जाते हैं। पूज्य आचार्य भगवन्त की कृपा से हम सती मण्डल को भी जोधपुर, बिलाड़ा, ब्यावर, बालोतरा आदि क्षेत्रों में आपश्री की सेवा का पुण्योदय से लाभ मिला। हमने आपका अलौकिक व्यक्तित्व देखा। जो भी आपके सम्पर्क में आया, प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। आपका तेजस्वी मुखमण्डल, ओजस्वी प्रवचन शैली, बालक सी निश्छलता, संयम में वज्र से कठोर, करुणामय कोमल हृदय हर एक प्रभावित करता रहा। जब भी आपके दर्शन किये तन-मन में असीम शान्ति का प्रभाव होने लगता। आपश्री का उपकार हम सती मण्डल को सदा स्मरणीय रहेगा। आपने हमारे विरक्ति के भाव में दृढ़ता बढ़ायी एवं ज्ञानादि देकर उपकार किया। **'संमो निंदापसंसासु'** का जीवन जीने वाले 'खण निकम्मो रहनो नहीं' का आदर्श निभाने वाले पद लिप्सा से दूर रहने वाले उपाध्यायप्रवर की सेवा का लाभ प्राप्त करने वाले श्रद्धेय श्री गौतम से गणधर, जिनेन्द्रमुनिजी की जागरूकता, अविनाशमुनिजी की सेवा अत्यन्त पुण्योदय से प्राप्त हुयी है वे हमारे आदर्श हैं। *-अनिल जैन (बागरेचा), कोट्टुर*

विजयनगर (अजमेर)-उपाध्यायप्रवर पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण होने पर रत्नसंघीया व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकँवरजी म.सा. आदि ठाणा 3 ने गुणानुवाद करते हुए फरमाया-सूर्य-चन्द्र के समान हीरा-मान की जोड़ी रही, उपाध्याय प्रवर का रत्नसंघ को ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण चतुर्विध संघ को दिया गया अवदान स्वर्णाक्षरों में अंकित हुआ है। संयम-साधना, आत्मोन्नति के लिए उनके द्वारा दिया गया बोध संयमयात्रा में सदैव पाथेय सिद्ध होगा।

धरा शय्या, गगन चादर बीच देह समा गई
उपाध्यायप्रवर की महान आत्मा दिव्य पथ को पा गई
धन्य-धन्य आदर्श गुरु मान का आत्मा का शृङ्गार किया
आत्म शुद्धि के महान पथ में तन मन जीवन वार दिया।

-डॉ. नवलसिंह जैन

गंगापुरसिटी-रविवार, 05 जनवरी, 2020 को दोपहर 1.30 से व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में मदर इण्डिया छात्रावास, गंगापुरसिटी में गुणानुवाद सभा रखी गई। सभा में शाखा अध्यक्ष श्री जितेन्द्रसिंहजी जैन, श्री अजीतजी जैन, श्री शीतलजी जैन ने उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के गुणगान किए। सती मण्डल द्वारा भी उपाध्याय भगवन्त के कठोर तप, संयम-साधना के बारे में गुणगान किया गया। सभा में लगभग 65 श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित रहे। *-राकेश पल्लीवाल, शाखा मन्त्री*

खेड़गाँव (महा.)-यहाँ विराजित सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 ने गुणानुवाद करते हुए कहा कि भगवन्त का जीवन सरलता, सजगता, सहिष्णुता आदि अनेक गुणों का संगम था। वे शासक थे, उन्होंने अनुशासन किया, पर दूसरों पर नहीं स्वयं पर किया। वे आलोचक थे पर धर्म के नहीं धर्म के दम्भ के आलोचक रहे। वे चिकित्सक थे, उन्होंने सफल चिकित्सा की पर मानव के तन की नहीं मन की की। *-रीता जैन*

मडगाँव-व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 6 ने गुणानुवाद करते हुए फरमाया कि जिनशासन के अनूठे शिल्पी एक सतत जाग्रत पहरेदार का अभाव हुआ है। जिनका साहस भरा श्रमण-जीवन युगों-युगों तक आदरणीय, अनुकरणीय, प्रशंसनीय, सराहनीय रहेगा। सेवा करने वाले श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा., श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. का पुरुषार्थ अनुकरणीय है। *-हेमलता जैन*

धरणगाँव-व्याख्यात्री महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 ने गुणानुवाद करते हुए कहा कि रत्नसंघ के इस भव्य विशाल भवन में आचार्य भगवन्त विस्तृत एवं अखण्ड छत की भांति मेढ़ीभूत है और उपाध्याय भगवन्त मजबूत दीवार की भाँति आलम्बन भूत थे। (शेषांश अन्यत्र इसी अंक में प्रकाशित।) *-निकिता गेलड़ा*

अन्य परम्पराओं के सन्त-सतियों के सान्निध्य में गुणानुवाद सभाएँ

हैदराबाद-राजस्थान प्रवर्तिनी श्रमणसंघीया साध्वी शिरोमणि महासती श्री यशकँवरजी म.सा. की सुशिष्या महासती श्री प्रज्ञाज्योतिजी म.सा., महासती श्री सुधाकँवरजी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में काँचीगुड़ा स्थित श्री पूनमचन्द जैन स्थानक में गुणानुवाद सभा आयोजित की गई। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, ग्रेटर हैदराबाद, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद्, हैदराबाद- सिकंदराबाद के श्रावक-श्राविकाओं ने उपाध्यायप्रवर के संयमी जीवन के गुणगान करते हुए उनके प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किए। *-पारस डोसी*

मुम्बई-रविवार, 05 जनवरी, 2020 को प्रातः 9.00 बजे घाटकोपर मुम्बई में गुणानुवाद सभा आयोजित की गई, साथ ही पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. का 110वाँ जन्मदिवस त्याग-तप के साथ पंजाब सम्प्रदाय के बहुश्रुत पंडित, आगम मनीषी, कवि हृदय श्री जयमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 6 के सान्निध्य में मनाया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 300 लोगों की उपस्थिति रही।

नागपुर-रविवार, 05 जनवरी, 2020 को गुणानुवाद सभा का आयोजन 'वर्धमान भवन' में विराजित आचार्यप्रवर श्री पार्श्वचन्दजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती **तत्त्वज्ञानी श्रद्धेय श्री सुमतिमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा एवं प्लॉट नं. 35, वर्धमान नगर में विराजित तपस्वी पूज्य श्री कानमुनिजी म.सा. की सुशिष्या वर्धमान आयम्बिल तप आराधिका

महासतीजी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी तपस्वी महासती श्री रुचिताकँवरजी म.सा. आदि ठाणा 4 के संयुक्त सान्निध्य में श्रद्धाञ्जलि सभा का आयोजन किया गया। प्रवचन में मुनिश्री ने सारगर्भित उद्‌बोधन में फरमाया कि–''तीर्थङ्करों की देशना श्रवण करने मात्र से तथा गुरु भगवन्तों के मुखारविन्द से जिनवाणी का श्रवण करने मात्र से भी अनेक भव्य आत्माएँ मोक्ष की प्राप्ति कर सकती हैं। आत्मा अजर-अमर है, पहले कहीं और थी, आज यहाँ हैं, भविष्य में कहीं अयन्त्र होगी। जीवन शाश्वत है तो समाप्त होता ही नहीं, जीव कहीं से आया था और कहीं चला गया। जीव कभी पराया नहीं होता अजीव कभी अपना नहीं होता।'' विराजित सन्त-मुनिराज एवं महासती मण्डल ने उपाध्यायप्रवर के संयमी जीवन पर प्रकाश डाला। सभा में श्री दिनेशजी बेताला, श्री गौतमजी सिंघी तथा श्री महेन्द्रजी कटारिया ने अपनी भावांजलि अर्पित की। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के उपसभापति, अध्यक्ष, महामंत्री, उपाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष आदि पदाधिकारियों के साथ लगभग 200 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने दो-दो सामायिक की आराधना की।

इन्दौर-पंजाब सम्प्रदाय के उत्तर भारतीय सन्त संघशास्ता पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शनलालजी म.सा. के शिष्यरत्न **दृढ़संयमी, धर्मप्रभावक पूज्य श्री राजेशमुनिजी म.सा., सेवाभावी, तपस्वी श्री ऋषिमुनिजी म.सा.** के सान्निध्य में इन्दौर के जानकी नगर में 3 जनवरी को श्रद्धाञ्जलि सभा का आयोजन हुआ। जिसमें श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने निम्नांकित उद्‌गार व्यक्त किये-व्यक्ति पूजनीय नहीं होता, उसका व्यक्तित्व पूजनीय होता है। ऐसे पूजनीय महान् व्यक्तित्व के धनी थे सरलमना, आदर्श त्यागी, चौथे आरे की प्रतिमूर्ति उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.। सन् 1988 में आपश्री का चातुर्मास चाँदनीचौक दिल्ली में था और हमारा गाँधी नगर दिल्ली में था। इनके साथ श्री गौतममुनिजी म.सा. भी थे। तब पावन दर्शन हुये थे। राजस्थानी सन्तों से प्रथम बार ही मिलन था। एक मञ्च पर हमारा समवेत प्रवचन हुआ। ऐसे अवसर कई बार मिले भगवन्त श्री रामप्रसादजी म.सा. के साथ भी प्रवचन हुआ तब भी हम साथ में थे और तब महसूस हुआ कि ये सन्त बहुत महान् हैं तो इनके गुरु आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. कितने महान् होंगे। हमने तब ही रत्नसंघ एवं इन सन्तों का नाम सुना था। उसके बहुत वर्षों के पश्चात् वर्ष 2019 में राजस्थान के पीपाड़ एवं पाली में पूज्य आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के पावन दर्शन का लाभ मिला वही छवि इनमें भी नज़र आयी। गम्भीरता, वात्सल्य, दूरदर्शिता के पावन दर्शन हुये। भरपूर अपनत्व मिला। ढेरों आशीर्वाद मुझे दिये। मन गद्‌गद् हो गया। पूज्य मानचन्द्रजी म.सा. रत्नसंघ के कोहिनूर हीरे थे। ऐसे महान् सन्त का जाना सम्पूर्ण जैन समाज के लिए महती क्षति है। कई सदियों में जाकर ऐसे महापुरुष पैदा होते हैं। जिसकी महक दिग्‌दिग्न्त तक फैलती है। शत-शत नमन, हार्दिक श्रद्धाञ्जलि। जानकी नगर संघ के अध्यक्ष श्री अनूपजी बाफना एवं मन्त्रीजी ने भी अपने भाव प्रस्तुत कर श्रद्धाञ्जलि अभिव्यक्त की। *-पीयूष जैन, इन्दौर*

कोथरूड़-पूना-मेवाड़ भूषण पूज्य श्री प्रतापमलजी म.सा. के सुशिष्य **दक्षिणभूषण, आगम ज्ञाता डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम', तपस्वीरत्न श्री वैभवमुनिजी** आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में आयोजित श्रद्धाञ्जलि सभा में श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी 'प्रथम' ने फरमाया-उपाध्यायप्रवर अत्यन्त सरल मना, शान्त एवं गम्भीर स्वभाव के धनी थे। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा., बड़े एवं छोटे श्री लक्ष्मीचन्दजी म.सा. का आपके संयम जीवन पर बहुत प्रभाव था। श्रद्धेय श्री मानमुनिजी म.सा. की प्रवचन शैली बहुत ही सटीक एवं प्रभावकरिणी थी। किसी भी विषय पर सहज रूप से एवं मर्यादित समय में मार्मिक विवेचन करना आपकी खूबी थी। इस महान्, ज्येष्ठ श्रेष्ठ सन्त के देवलोक गमन से केवल रत्नसंघ परम्परा की ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण जैन समाज की बहुत बड़ी हानि हुई है। सभा में विद्यमान अन्य सभी लोगों ने लोगस्स का कायोत्सर्ग करते हुए उपाध्यायप्रवर के चरण में श्रद्धा-

सुमन अर्पित किये। *-दिनेश मुनोत, पूना*

निफाड-नाशिक-आचार्यप्रवर श्री रामलालजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी **श्रद्धेया श्री उज्ज्वलाप्रभाजी म.सा., प्रमितिश्रीजी म.सा., श्री नवकारश्रीजी म.सा.** आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में 3 जनवरी, 2020 को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गयी तथा चार लोगस्स का ध्यान किया गया। *-नन्दलाल चोरड़िया, अशोक कर्णावट*

कोटा-महावीर नगर जैन स्थानक कोटा एवं श्री जैन स्थानक विज्ञान नगर कोटा में पूज्य श्री धर्ममुनिजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी **महासती श्री अपूर्वप्रज्ञाजी म.सा.** के सान्निध्य में गुणानुवाद सभा आयोजित की गयी, जिसमें उपाध्यायप्रवर के गुणानुवाद के साथ चार-चार लोगस्स का काउसग्ग किया गया। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्री संघ रामपुरा कोटा की ओर से श्री जैन दिवाकर पावन तीर्थ धाम में विराजित उपाध्यायप्रवर श्री मूलमुनिजी म.सा. एवं उप-प्रवर्तक श्री राकेशमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में 5 जनवरी, 2020 को सामूहिक सामायिक के साथ गुणानुवाद सभा का आयोजन वल्लभबाड़ी कोटा में किया गया। श्री जगदीशप्रसादजी जैन मन्त्री, श्री अशोकजी जैन नगर निगम कोटा तथा **उप-प्रवर्तक श्री राकेशमुनिजी म.सा.** ने उपाध्यायप्रवर के विराट् व्यक्तित्व पर अपने विचार प्रस्तुत किये तथा अन्त में चार-चार लोगस्स का काउसग्ग किया गया। *-अनिल कुमार जैन, पूर्व सहमन्त्री*

विभिन्न श्रावक संघों द्वारा गुणानुवाद

कोलकाता-रविवार 05 जनवरी, 2020 को दक्षिण कोलकाता के भवानीपुर स्थित महावीर सदन में गुणानुवाद सभा के प्रथम चरण में सामूहिक सामायिक, भक्तामर पाठ एवं गुरु वन्दन का कार्यक्रम हुआ। गुणानुवाद सभा का संचालन करते हुए श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के मन्त्री श्री कमलजी भण्डारी ने उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के संयमी जीवन पर प्रकाश डाला। संस्था के सहमन्त्री श्री दिलीपजी मेहता ने कहा कि संघ में हुई क्षति की भरपाई करना मुश्किल है। क्षेत्रीय प्रधान श्रीमती मंजू प्रेमजी भण्डारी ने भजन के साथ गुरुदेव के सौम्य, शान्त एवं सरल व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। कोलकाता महिला मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती मंजूजी सुराणा ने उपाध्याय भगवन्त के गुणगान करते हुए उन्हें श्रद्धाञ्जलि दी। श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमती बिमलाजी भण्डारी ने कहा कि उपाध्याय श्री जी महान् विभूति थे। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चंचलमलजी बच्छावत ने बताया कि वे बचपन से ही उपाध्यायश्री के सम्पर्क में आए एवं उनसे समय-समय पर प्रेरणा प्राप्त करते थे। अखिल भारतीय तेरापन्थ युवक परिषद् के दिलीपजी बोथरा ने युवा पीढ़ी को सामायिक करने की प्रेरणा दी।

-कमल भण्डारी, मन्त्री

खारिया मीठापुर (जोधपुर)-प्रबुद्ध श्रावक-श्राविकाओं के साथ 36 कौम के सैकड़ों धर्म प्रेमियों ने उनके गुणस्मरण करते हुए उनको श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। कतिपय श्रावक-श्राविका उनकी अन्तिम यात्रा में शामिल होने के लिए जोधपुर भी पधारे।

शिरपुर (महा.)-रविवार, 05 जनवरी, 2020 को सुबह 8.45 बजे नवकार महामन्त्र जाप का आयोजन किया गया। तत्पश्चात् श्री सुवालालजी ललवानी (संघपति), श्री नवनीतजी राकेचा, श्री पारसमलजी संकलेचा, श्री मुकेशजी बुरड़, श्री भीकमचन्दजी दुग्गड़, श्री विशालजी बागरेचा, श्री अतिशजी सेठिया, श्री संदीपजी मुणोत ने अपने भाव प्रकट किये। 4 लोगस्स के द्वारा श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ संयोजक श्री सचिनजी बागरेचा, श्री जितुजी संकलेचा आदि पदाधिकारियों सहित लगभग 300 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

-सागर सेठिया

मैसूर (कर्नाटक)-श्री स्थानकवासी जैन संघ मैसूर द्वारा रविवार, 05 जनवरी, 2020 को स्वाध्याय कक्षा के पश्चात्

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. को 4 लोगस्स के द्वारा श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई तथा गुणानुवाद किए गए। सभा में लगभग 250 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

नदबई-05 जनवरी, 2020 को प्रात: गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। उपाध्यायप्रवर के संयमी जीवन पर प्रकाश डाला गया तथा नवकार मन्त्र का जाप, मान-चालीसा, मान गुणाष्टक एवं भजन के कार्यक्रम के साथ चार लोगस्स का ध्यान किया गया। कार्यक्रम में अच्छी उपस्थिति रहीं। *-नरेशचन्द्र जैन, मन्त्री*

बालोतरा-श्री वर्धमान जैन स्थानकवासी संस्थान द्वारा स्थानक भवन में आयोजित श्रद्धाञ्जलि सभा में संघमन्त्री श्री ओमजी बाँठिया ने उपाध्यायप्रवर का जीवन परिचय देते हुए बताया कि उनके 56 वर्षों के संयम जीवन में सहजता, सरलता, सौम्यता एवं गुणों के प्रति अनुपम भाव देखने को मिलते थे। उनका जीवन शान्त-दान्त-गम्भीर होने के साथ ही उन्होंने अपने संयम पर्याय में हजारों श्रावक-श्राविकाओं को धर्म के प्रति प्रेरित कर सामायिक स्वाध्याय से जोड़ा। सभा में पूर्व मन्त्री श्री गौतम एम. तातेड़, महिला मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती सुमनदेवीजी हुड़िया ने उपाध्यायप्रवर के प्रति श्रद्धा समर्पित की। ज्ञानगच्छ के सन्त-मुनिराज एवं महासती-मण्डल द्वारा भी उपाध्यायप्रवर के संयमी जीवन पर प्रकाश डाला गया। *-ओमप्रकाश बाँठिया, मन्त्री*

भरतपुर-05 जनवरी, 2020 को महावीर भवन, भरतपुर में दोपहर 4.00 बजे गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। सभा में संघ के पदाधिकारी, सदस्यगण एवं अनेक श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। उपाध्याय श्री के अनेक गुणों का व्याख्यान किया गया। उनके जीवन की सरलता, सजगता, सादगी की महिमा की प्रशंसा के साथ उनकी विनम्रता, उच्च व्यक्तित्व की विवेचना भी की गई। *-राहुल जैन*

नसीराबाद-उपाध्यायप्रवर पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण होने पर सुश्रावक श्री ताराचन्दजी मुणोत सहित सभी श्रावक-श्राविकाओं ने उपाध्यायप्रवर के गुणानुवाद कर श्रद्धा समर्पित की।

धुलिया-यहाँ आयोजित श्रद्धाञ्जलि सभा के संक्षिप्त विचार इस प्रकार हैं-आज उपाध्यायश्री हमारे बीच शरीर से उपस्थित नहीं हैं, लेकिन उनकी जीवन की निर्मल गाथा हमें उनकी राह पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। क्षमा की वे जीवित मूर्ति थे। उनके शान्त मुख पर क्रोध की क्षीण रेखा भी कभी नज़र नहीं आयी। उनकी मधुरवाणी अच्छे-अच्छे को पिघला देती थी। संघ विजय की दिशा में वे सदा सतर्क रहे थे। आपश्री के हृदय में समाज हेतु सदैव सुविचारों की नदी बहती रहती थी। आपका मानना था कि अच्छाइयाँ ही सुखी समाज का निर्माण करती हैं। आप भगवान महावीर के कथन 'जीओ और जीने दो' का जीवन का मूलमन्त्र समाज को पढ़ाते थे। आप सरस्वती के उपासक थे। आप वाणी के जादूगर थे। आप अहम् और वहम से स्वयं को दूर रखा करते थे।

-के. के. ताथेड, महामन्त्री-श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, धुलिया

बेंगलुरू (कर्नाटक)-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ (कर्नाटक), बेंगलुरू एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ ट्रस्ट (कर्नाटक), बेंगलुरू के संयुक्त तत्त्वावधान में एच. उत्तमचन्द प्रमिला भण्डारी सामायिक स्वाध्याय भवन में 04 जनवरी, 2020 को प्रात: 8.15 बजे से नवकार मन्त्र जाप रखा गया तत्पश्चात् संघ मन्त्री श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल ने उपाध्यायप्रवर का समग्र जीवन-परिचय एवं प्रेरक प्रभावक जीवन झाँकी प्रस्तुत कर भावपूर्वक श्रद्धाञ्जलि दी। श्री सज्जनराजजी मेहता, श्री विनोदजी गुंदेचा, श्री सुनीलजी दलाल, श्री ज्ञानचन्दजी लोढ़ा, श्री भंवरलालजी चोरड़िया एवं श्री चेतनप्रकाशजी डुंगरवाल ने भी उपाध्यायप्रवर के गुणगान कर श्रद्धा अभिव्यक्ति की। अन्त में वरिष्ठ सुश्रावक श्री नवरतनजी भंसाली द्वारा भाव अभिव्यक्ति करते हुए चार लोगस्स का कायोत्सर्ग कराया

गया। सुधर्म संस्कृति संघ, साधुमार्गी संघ, जैन कॉन्फ्रेन्स, राजाजीनगर संघ, जयमलसंघ, समर्थगच्छ, शूलेसंघ, विजयनगर संघ, मरुधरकेसरी गुरु सेवा समिति द्वारा भी श्रद्धाञ्जलि दी गई। मंगलपाठ श्री भँवरलालजी पगारिया ने प्रदान किया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य श्रावक-श्राविका उपस्थित थे।

हिण्डौनसिटी-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संस्थान हिण्डौनसिटी द्वारा जैन स्थानक भवन में रविवार 5 जनवरी, 2020 को वरिष्ठ श्रावक श्री मूलचन्दजी जैन के सान्निध्य में गुणानुवाद सभा रखी गयी, जिसमें कई श्रावक-श्राविकाओं ने उपाध्यायप्रवर के कठोर संयम, नियम, साधना, तप एवं कोमल मन के बारे में प्रकाश डाला। गुणागुवाद सभा में लगभग 60 श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित थे।

सवाईमाधोपुर-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के शासन सहयोगी उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के देवलोकगमन पर पोरवाल सम्भाग के ग्राम-नगरों से सैकड़ों श्रावक-श्राविकाओं ने जोधपुर पहुँच कर महाप्रयाण यात्रा में 3 जनवरी, 2020 को भाग लिया। उसके पश्चात् 4 जनवरी, 2020 को महावीर भवन में क्षेत्रीय गुणानुवाद सभा में सर्वश्री सुबाहु कुमारजी जैन क्षेत्रीय प्रधान, श्री सुरेशजी जैन पूर्व क्षेत्रीय प्रधान, श्री धर्मचन्दजी जैन संघाध्यक्ष, श्री कुशलजी जैन राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, श्री मदनलालजी जैन (करेला), श्री धर्मचन्दजी जैन (श्यामपुरा), श्री सौभागमलजी जैन (एडवोकेट), श्री पदमचन्दजी गोटेवाला मन्त्री बजरिया, श्री संजयजी जैन मन्त्री आवासन मण्डल, श्री आशीषजी जैन युवक परिषद् महावीर नगर, श्री कपूरचन्दजी जैन (मुम्बई) सुरेखाजी जैन मन्त्री श्राविका मण्डल ने गुरु गुण वर्णन, उपकारों एवं सवाईमाधोपुर वर्षावास के संस्मरण प्रस्तुत कर भावाञ्जलि दी। चार-चार लोगस्स का काउसग्ग किया गया। पोरवाल सम्भाग के विभिन्न ग्राम-नगरों में गुरु भक्तों द्वारा लोगस्स का काउसग्ग कर गुणों का स्मरण कर भावाञ्जलि दी गई। सभा का संचालन श्री कुशलजी गोटेवाला द्वारा किया गया।

कानपुर-यहाँ पूज्य उपाध्यायप्रवर के प्रति श्रद्धाञ्जलि में 5 जनवरी, 2020 को स्थानकवासी, तेरापन्थी, मूर्तिपूजक संघ के साथ आनन्दपुरी जैन स्थानक में सामूहिक सामायिक का आयोजन रखा गया। उपाध्यायप्रवर की साधना, समाचारी आदि की विशेषताओं पर श्रावक-श्राविकाओं द्वारा प्रकाश डाला गया। नवकार मन्त्र का जाप किया गया तथा चार लोगस्स का काउसग्ग किया गया। वे सरल, सौम्य, पण्डित, आगम ज्ञाता एवं उपकारी सन्त थे।

-मनमोहनचन्द बाफना

सूरत-यहाँ 5 जनवरी, 2020 रविवार को गुणानुवाद सभा आयोजित की गयी, जिसमें 225 श्रावक-श्राविका श्रद्धाञ्जलि देने हेतु उपस्थित हुए। प्रातः 9 से 10 बजे तक नवकार मन्त्र का जाप किया गया तथा बाद में श्रावक-श्राविकाओं ने भावाञ्जलि प्रस्तुत की। श्री उत्तर भारतीय जैन श्रावक संघ, श्री जयमल्ल जैन श्रावक संघ, श्री तेरापन्थी युवक परिषद् द्वारा भी श्रद्धाञ्जलि दी गयी। सभी श्रावक-श्राविकाओं के द्वारा पूज्य उपाध्यायप्रवर के उपकारों का स्मरण किया गया। श्रद्धेय श्री मयारामजी म.सा. की सम्प्रदाय के श्रद्धेय श्री अचलमुनिजी म.सा. का लुधियाना में समाधिमरण हो गया था, अतः श्रद्धेय श्री अचलमुनिजी एवं उपाध्यायप्रवरश्री को चार लोगस्स काउसग्ग के साथ श्रद्धाञ्जलि दी गयी।

बीजापुर-यहाँ आयोजित गुणानुवाद सभा में सामूहिक सामायिक में नवकार महामन्त्र का जाप, गुरु मान चालीसा का पाठ किया गया तत्पश्चात् श्री अशोक जी लुंकड ने उपाध्यायप्रवर का जीवन परिचय दिया एवं भावपूर्वक श्रद्धाञ्जलि दी गयी। वरिष्ठ श्रावक श्री पारसमलजी बोथरा, श्री चन्दूलालजी रूणवाल, श्राविका स्मिताजी रूणवाल एवं संघ मन्त्री नितिनजी रूणवाल ने उपाध्यायप्रवर को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। अन्त में चार लोगस्स का ध्यान किया गया।

-विजय नितिन कुमार रूणवाल

देश के विभिन्न आचार्यों एवं सन्तों के श्रद्धाञ्जलि पत्र

बालेसर-नानेश पट्टधर, युगनिर्माता, साधुमार्गी संघ के **आचार्यप्रवर श्री रामलालजी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा.** आदि सन्तप्रवरों की सन्निधि से 3 जनवरी, 2020 को निम्नांकित भाव फरमाये गये-

''यकायक श्रुतिगत हुआ कि उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का देवलोक गमन हो गया। स्वर्गीय आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म.सा. के साथ जोधपुर घोड़ों के चौक में जब उपाध्यायप्रवर का भी चातुर्मास था, उस वक्त के कई दृश्य मानस पटल पर तैर रहे हैं आचार्यश्री अक्सर उपाध्यायप्रवर को उनकी विनम्रता आदि गुणों को देखते हुए उन्हें मानमुनिजी म.सा. के स्थान पर विनयमुनिजी म.सा. के रूप सम्बोधित करते थे। उपाध्यायप्रवर श्री आचार्यप्रवर के प्रति अत्यन्त सम्मान भाव से उपस्थित रहते थे।

प्रशस्त संयोगवश जोधपुर चातुर्मास के पूर्व महामन्दिर समता भवन से विहार करके राजपूत छात्रावास की ओर जाते हुए मैंने (आचार्यश्री रामलालजी म.सा.) ने भी शक्तिनगर स्थानक में विराजमान उपाध्यायप्रवर के दर्शनों का लाभ प्राप्त किया एवं उन्हें जोधपुर चातुर्मास की स्मृतियाँ करवाने का प्रयत्न किया। उस समय भी उनकी शारीरिक, मानसिक स्थिति पूर्ण स्वस्थ प्रतीत नहीं हुई। चातुर्मास में तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. का पधारना हुआ तब उनसे एवं आने वाले श्रावकों से समय-समय पर उपाध्यायप्रवर की स्वास्थ्य विषयक जानकारी प्राप्त होती रही।

कल रात्रि को बिना किसी विशेष अस्वस्थता सम्बन्धी पूर्व समाचार के आकस्मिक रूप से स्वर्गवास के ही समाचार मिले। उपाध्यायप्रवर के वियोग के इन क्षणों में मैं साधुमार्गी संघ की ओर से हार्दिक संवेदना की अभिव्यक्ति करते हुए ऐसे प्रसंग पर स्वयं को आपश्री के साथ महसूस करता हूँ।

आपश्री एवं आपश्री के सान्निध्य के रत्नत्रय साधना निरत मुनि मण्डल का आरोग्य ऊर्ध्वारोही होगा। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखावें।''

-आज्ञा से, प्रेषक धर्मेश चौपड़ा

बालाघाट (म.प्र.)-जिनशासन गौरव, प्रज्ञानिधि **आचार्यप्रवर श्री विजयराजजी म.सा.** आदि ठाणा-4 के यहाँ 3 जनवरी, 2020 को गुणानुवाद सभा में आचार्यप्रवर ने फरमाया-

''रत्नसंघ के चतुर्विध संघ को इस क्षति से गुजरना पड़ रहा है, यह क्षति मात्र रत्नसंघ की नहीं पूरे जिनशासन की अपूरणीय क्षति है। युगों-युगों के बाद ऐसे महान् सन्तों का सान्निध्य प्राप्त होता है। उपाध्यायश्री वास्तव में गौरवशाली उपाध्यायपद को सुशोभित कर रहे थे। उनकी मितभाषिता, संयम, सादगी और जैन सिद्धान्तों के प्रति उनका अटूट अनुराग हमें प्रत्यक्ष में देखने को मिला। आपकी ऋजुता-मृदुता और निरभिमानता जैसी साधना की ऊँचाइयाँ आज भी जब स्मृति कोष से निकलती हैं तो हृदय श्रद्धा से अभिभूत हो जाता है। सन्त जीवन की जिन ऊँचाइयों को आपश्री ने छुआ, वह बहुत ही प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय हैं।

श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पूज्य श्री मानमुनिजी म.सा. के वियोग को हमारा जिनशासन महती क्षति के रूप में देख रहा है। महापुरुष किसी भी संघ एवं पन्थ के क्यों न हों, वे मानव मात्र के आदर्श प्रकाशपुञ्ज होते हैं। युगों-युगों तक उनकी प्रकाश किरणें मानवता को आलोकित करती हैं-करती रहेंगी।

सम्पूर्ण शान्त क्रान्ति संघ की भावात्मक गुणानुरागिता उपाध्यायश्री जी के प्रति रही है, उनका सम्पूर्ण प्रत्याख्यान के साथ देवलोकगमन का श्रवण कर पूरा संघ स्तब्ध है और शून्यता का अनुभव कर रहा है।''

-आचार्यप्रवर की आज्ञा से लालसिंह

काल्टेर (राणा)-जिनशासन गौरव, प्रज्ञामूर्ति **आचार्यप्रवर श्री सुदर्शनलालजी म.सा.** आदि ठाणा एवं **साध्वी रत्नाश्री विनय प्रज्ञाजी म.सा.** आदि ठाणा के यहाँ से 10 जनवरी, 2020 के पत्र में निम्न भाव फरमाये-

"उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के 2 जनवरी को समाधिमरण के समाचार प्राप्त होते ही अतीत की स्मृतियाँ साकार हो उठी। वे शान्त, सरल और सहज व्यक्तित्व जिनका सान्निध्य ही असीम प्रेम से आप्लावित था। जब कभी भी उनसे मार्गदर्शन के लिए निवेदन किया, नि:स्वार्थ एवं साम्प्रदायिक भावों से अतीत होकर सत्यानुप्रेमी पथ-प्रदर्शन किया। पूज्य गुरुदेव श्री सोहनलालजी म.सा. के चादर महोत्सव में उपाध्यायप्रवर की उपस्थिति और उनका असीम वात्सल्य इस प्रतीति का अवबोध था कि यह व्यक्तित्व साम्प्रदायिक सीमाओं से अतीत है। जब भी आवश्यकता पड़ी असामाजिक तत्त्वों द्वारा फैलाई गई भ्रान्तियों को भी मुँह तोड़ जवाब देने में कभी पीछे नहीं रहे। आज जब उनके अवसान का समाचार प्राप्त हुआ तो लगा कोई हमारा अपना ही आत्मीय व्यक्तित्व इस विनाशी सत्ता में अवस्थित नहीं रहा है।

भले ही वे इस अस्तित्व में विद्यमान न होंगे किन्तु उनके सान्निध्य की स्मृतियाँ, उनका बोध कराती हैं। वह एक निर्मल साधक जो स्वभावत: ही कषाय से मुक्ति की ओर अग्रसर हैं, जिनके आचरण में स्वभाविकता है। जिनकी वाणी में यथार्थ सत्य झलकता है और जिनका चिन्तन वीतरागता के भावों से ओतप्रोत है। ऐसे साधक का अवसान संघ में एक रिक्तता की प्रतीति कराता है। उनकी स्मृतियाँ हम सब के लिए वीतरागता की हेतु, समाधि एवं शान्ति की सेतु बनेगी। उनका जीवन वीतरागता के पथ में अग्रसर साधकों के लिए सागर में द्वीप के समान सम्बल प्रदायक रहेगा। मात्र रत्नसंघ ही नहीं नानक संघ भी उस साधक की रिक्तता से स्वयं को व्यथित महसूस कर रहा है। सभी साधक उनके समाचरित और उपदिष्ट पथ का अनुसरण करते हुए उनकी स्मृति को सम्बल रूप में सजोये रखेंगे ऐसी मनोभिलाषा। साथ ही उनके लिए हार्दिक श्रद्धाभिव्यक्ति।"

-आचार्यप्रवर के भावानुसार राकेश कुमार सांखला, मुम्बई

लाम्पोलाई-जयगच्छापति व्याख्यान वाचस्पति, आशुकवि **आचार्यप्रवर श्री पार्श्वचन्दजी म.सा.** एस.एस.जैन समणी मार्ग के प्रारम्भ कर्ता, अणुप्पेहा ध्यान प्रेणता, प्रवचन प्रभावक डॉ. पदमचन्दजी म.सा. आदि ठाणा-5 ने मेड़ता के निकटवर्ती ग्राम लाम्पोलाई से अपने 04 जनवरी, 2020 के श्रद्धाञ्जलि सन्देश में निम्नलिखित भाव फरमाये-

"उपाध्यायश्री अत्यन्त सरल प्रकृति के वयोवृद्ध सन्तरत्न थे। उनके देवलोकगमन से मारवाड़ परम्परा के उत्तम सन्तरत्न की महती क्षति हुई है।"

नरवाना-संघशास्ता श्री सुदर्शनलालजी म.सा. के परम्परा के **संघसंचालक श्री नरेशमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा-3 ने नरवाना से 3 जनवरी, 2020 को जो सन्देश प्रेषित किया है। वह इस प्रकार है-

"जिनशासन के ऊपर मुसीबतों के पहाड़ गिर रहे हैं। मंगलवार की प्रात: हमारे गुरुभ्राता श्री अचलमुनिजी म.सा. यकायक विदा हो गए। वीरवार की सायं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के देहावसान ने रही सही कसर पूरी कर दी। वयस्थिर, श्रुतस्थिवर, पर्यायस्थविर श्रद्धेय श्री मानचन्द्रजी म.सा. का मुझे दर्शन सौभाग्य नहीं मिला, मेरा उत्तर भारत से बाहर विचरण नहीं हुआ। जब वे दिल्ली पधारे तब मैं कहीं दूर था। पर उनकी महानता का मैं कायल रहा हूँ। उनमें गुर्वाज्ञा पालन की विशिष्ट कला थी, आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. अपने पत्र में आज्ञा निर्देश देकर गए, उनका उन्होंने 'तहमणे तहचित्ते' पालन किया। उम्र-दीक्षा के गणित को कभी हावी और प्रभावी नहीं होने दिया। पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शनलालजी म.सा. प्राय: उनके गुणों का वर्णन करते रहते थे, हम तभी से उनके गुण प्रशंसक रहे हैं। हमारे गणाधीश श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. जब 2009 में पाली में उनसे मिले थे तथा हमारे बहुश्रुत श्री जयमुनिजी म.सा. ने गतवर्ष जोधपुर में उनके दर्शन किए, वे सब मधुर समाचार हम तक आते रहे।

हम भावना भाते रहे कि उपाध्यायश्री जी शतायु हों तथा जिनशासन द्युतिमान् रहे। 'जय गुरु हीरा-जय गुरु

मान' यह नारा-जयकारा द्रव्य दृष्टि से भले ही अपूर्ण हो गया है, पर भाव दृष्टि से पहले से भी ज्यादा परिपक्व हुआ है। उपाध्यायश्री जी ज्ञान के प्रतिमान थे। प्रत्येक विवाद को संवाद में बदलना जानते थे। उनके पास गुरु कृपा थी, आगमों की धारणा थी, स्वयं की अन्त:प्रज्ञा थी। उस दिव्य आत्मा के वियोग से होने वाली पीड़ा को न्यून करने के लिए हम सब आपसे आन्तरिक विनति करते हैं। हमारा सकल मुनिसंघ इस घड़ी में आपके साथ खड़ा है। उपाध्यायप्रवर को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए मुनिसंघ को हार्दिक सम्वेदना व्यक्त करते हैं।''

-संघ संचालक जी म.सा. की आज्ञा से वैरागी राजन जैन

जैतारण, पाली-जैतारण में विराजमान श्रमण संघीय प्रवर्तक मरुधरा भूषण शासन गौरव **पूज्य श्री सुकनमलजी म.सा.** एवं सन्तों ने लोगस्स का ध्यान करके उपाध्यायश्री के प्रति संवेदना 3 जनवरी, 2020 के पत्र द्वारा निम्नांकित प्रकार से व्यक्त की-

''उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म.सा. रत्नसंघ के साथ-साथ जैन जगत् के भी मूर्धन्य मनीषी थे, कई बार उनके साथ आध्यात्मिक मंगल मिलन भी हुआ है। प्रतिपल संयम-साधना में लीन वे विरल विभूति थे। उनके जाने से रत्न हितैषी संघ में भारी क्षति हुई है। पूज्य प्रवर्तक श्री ने अपनी काव्य अभिव्यक्ति के माध्यम से फरमाया-

मान मुनीश्वर यशस्वी, उपाध्याय पुनवान। रत्नसंघ का दीवला, पल में किया प्रयाण।।
मिलनसार हँसमुख सदा, सदा स्वच्छ आचार। सरल सादगी विनयता, भरिया गुण भण्डार।।
संयम की कर साधना, सुकन पवित्र विचार। मुनि मान स्वर्गे गया, मन की ममता मार।।
जोधाणे संयम लिया, जन्मभूमि लो जान। देवलोक सिधाविया, पुर जोधाणे मान।।
गुरु सेवा कीनी घणी, लिया गुरु से ज्ञान। भक्त सभी देखत रहे, गये स्वर्ग मुनि मान।।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, श्री मरुधरकेसरी पावन धाम जैतारण के द्वारा उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म.सा. के उत्तम चरित्रमय जीवन को शत-शत भाव वन्दन।''

-म.सा. की आज्ञा से, प्रेषक माणकराज डागा, महामन्त्री श्री मरूधर केसरी पावन धाम जैतारण

दिल्ली-विद्या वाचस्पति आगम रत्नाकर **आचार्यप्रवर श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.** ठाणा-5 की ओर से प्राप्त श्रद्धाञ्जलि पत्र का अंश-

''उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. से हमारा प्रत्यक्ष मिलना तो नहीं हुआ, परन्तु उनके संयम, तप, ज्ञान-गरिमा आदि गुणों की सुगन्ध सर्वत्र व्यापक रही है। वह सुगन्ध हम तक भी समय-समय पर पहुँचती और हमें हर्षित करती रही है। अत: बिना मिले भी उनके व्यक्तित्व से, उनके विविधानेक गुणों से भाव-परिचय तो हमारे संघ का रहा ही है। उपाध्यायश्री रत्संघ के अनमोल रत्न थे। वे आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के परम सहयोगी थे। आचार्य देव श्री हस्तीमलजी म.सा. के तप-संयम एवं सामायिक-साधना मिशन को आगे बढ़ाने की दिशा में महान् पुरुषार्थ उनकी जीवन एवं संयम-यात्रा का पर्याय था। उनका विचरण क्षेत्र-विस्तृत और प्रभावना का मंगलमय प्रभाव गहन रहा। भगवान महावीर के धर्म की प्रभावना में उनका योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा।

रत्नसंघ के महान् संयम-पुरुष आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री विनयचन्द्रजी म.सा. के साथ हमारे परम पूज्य संयम सुमेरु चारित्र चूड़ामणि श्री मायारामजी म.सा. के बहुत मधुर सम्बन्ध थे। दोनों महापुरुषों का एक ऐतिहासिक चातुर्मास भी साथ-साथ सम्पन्न हुआ था। स्मृतियाँ इतिहास होती हैं। इतिहास स्मृतियों में सिमटा होता है। आज उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म.सा. भी इतिहास के एक पृष्ठ बन गए हैं। यह पृष्ठ निश्चित रूप से रत्नसंघ का स्वर्णिम एवं गौरवशाली अध्याय कहलाएगा। उनके चले जाने से आपके संघ की ही नहीं, अपितु भगवान महावीर के पूरे अनुयायी-समुदाय की एक महत्त्वपूर्ण क्षति हुई है।''

-अमित मुनि

दिल्ली-उपाध्यायश्री पुष्करमुनिजी के शिष्य **श्रमण संघीय प्रवर्तक डॉ. राजेन्द्रमुनिजी म.सा.** ने दिल्ली से 3 जनवरी, 2020 को प्रेषित श्रद्धाञ्जलि पत्र में अपने भाव व्यक्त किये-सरल आत्मा पूज्य गुरुदेव उपाध्यायश्री मानचन्द्रजी म.सा. के देवलोक गमन के समाचार जानकर गहरी संवेदना का अनुभव हुआ। आपश्री रत्नसंघ के ही नहीं, अपितु समस्त संघ के देदीप्यमान कोहिनूर हीरे थे। संयमी रंग में रंगा हुआ आपका जीवन हमारे लिये सदा प्रेरणादायी रहा और रहेगा। आपके संयमी जीवन को हमारी हार्दिक श्रद्धाञ्जलि समर्पित है। गुरु पुष्कर देवेन्द्र आचार्य अमरसिंहजी म.सा. की परम्परा के साथ आपकी गहरी आत्मीयता रही। इसके साथ समदड़ी में विराजमान **उपाध्यायश्री रमेशमुनिजी म.सा.** ने भी गहरी संवेदना व्यक्त की है। नवकार तीर्थ ट्रस्ट की ओर से भी हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित है। *-डी. सी. छाजेड़, महामन्त्री नवकार तीर्थ*

मुम्बई-अत्र विराजित गुरु सुदर्शन संघ के सन्त, संघ संचालक श्री नरेशमुनिजी के आज्ञानुवर्ती बहुश्रुत श्री जयमुनिजी ठाणा 6 ने उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी महाराज के देवलोकगमन पर श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए निम्नोक्त भाव निवेदित किये हैं-

''तीन दिन से बड़े अप्रिय घटनाचक्र से वास्ता पड़ रहा है। परसों (31/12/2019) प्रातः हमारे गुरुभ्राता श्री अचलमुनिजी (54) का अचानक देहावसान हो गया और आज सूर्य की अंतिम किरण के साये जिनशासन के भासमान दिवाकर मान-मर्यादा के पालक, निर्मान, निर्मद, निर्माय उपाध्याय श्री मानमुनिजी महाराज अस्तगत दिवंगत हो गये। मन असमाहित-सा है। इसके प्रश्न अनुत्तरित हैं। बिलकुल एक वर्ष पूर्व सूर्यनगरी जोधपुर में उस ज्ञानसूर्य की आभा में, पावन कृपासुधा में स्नान करने का सौभाग्य मिला था। शारीरिक अस्वस्थता के बावजूद हम बाल-गोपालों को असीम स्नेह का दान दिया। उनके चरणों में व्यतीत तीन दिन तीन काल के लिए हृदय पटल पर अंकित टंकित हैं। उन जैसा निर्दोष, निर्मल जीवन विरल व्यक्तियों में होता है। रत्नसंघ के अवतन्स, कुशलोद्यान के कल्पतरु, आचार्य श्री हस्ती के विश्वसनीय सपूत को खोकर जिनशासन स्तब्ध है, किंकर्तव्यविमूढ़ है। सन्तोष है कि उन्होंने अपने जीवन का कण-कण आगम-साधना, गुर्वाराधना, शासन प्रभावना एवं संयम आराधना में समर्पित किया और कृतकृत्य होकर विदा हुए हैं। चरणान्तेवासी महामुनिराजों-श्री गौतममुनिजी महाराज, यशवन्तमुनिजी, श्री जितेन्द्रमुनिजी महाराज प्रभृति ने अपूर्व सेवा करके उन्हें अन्तिम पाथेय भी प्रदान किया। हमारी ओर से उस दिव्य आराधक साधक को शत-शत नमन।'' *-आज्ञा से, डॉ. दिलीप धींग*

भारत-काश्मीर प्रचारिका पूज्या श्री उमरावकुँवरजी म.सा. 'अर्चना' की शिष्या राजस्थान प्रवर्तिनी डॉ. सुप्रभा 'सुधा' के यहाँ से प्राप्त श्रद्धाञ्जलि पत्र-युगपुरुष आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. के सुशिष्य आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. के शासन सहयोगी शान्त-दान्त-गम्भीर पण्डित रत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के देवलोकगमन के अवाञ्छनीय समाचार श्रवण कर आन्तरिक संवेदना हुई। पूज्य पाद उपाध्यायप्रवर के विशाल व्यक्तित्व को सीमित शब्दों में व्यक्त कर पाना नामुमकिन है। आपकी शासन समर्पणा और गुरु निष्ठा बेजोड़ थी। सरलता, सहजता, निस्पृहता, गाम्भीर्य आपकी अनूठी पहचान थी तो संयम के प्रति सजगता आपकी मिशाल थी। मनुष्य भव प्राप्त होना 10 दुर्लभ बोलों में से सबसे अधिक दुर्लभ और महत्त्वपूर्ण है। उससे भी अधिक मनुष्य भव की सार्थकता और दुर्लभता को समझना, महत्त्वपूर्ण है। इसे कोई-कोई विरल आत्मा ही समझ पाती है। आपश्री जी उन्हीं विरल आत्माओं में से एक हैं जिसने मनुष्य भव को प्राप्त कर अपने अथक पुरुषार्थ से संयम-साधना के दीप जलाकर सम्पूर्ण जैन जगत् को प्रकाशित कर जिनशासन को देदीप्यमान किया है। ऐसी ही आत्मा जन-जन के हृदय में अमर हो जाती है। आपके जीवन का हर पृष्ठ अलौकिक आध्यात्मिक, आलोक से आलोकित था। आपश्रीजी की हरेक चर्या 'जहा अंतो तहा बाहिं' की उक्ति को साकार करती थी।

आज आपश्री जी का पार्थिव शरीर हमारे बीच नहीं है, परन्तु जिनशासन की प्रभावना हेतु किया गया प्रत्येक प्रबल पुरुषार्थ, सजीव स्मृतियाँ बनकर जैन जगत् में चिरस्थायी रूप से विद्यमान रहेगी। आपश्रीजी के महाप्रयाण से जिनशासन में अपूरणीय क्षति हुई है। 'अर्चना महासती मण्डल' श्रद्धा सुमन समर्पित करते हुए यही मंगल मनीषा व्यक्त करती है कि आपश्री जी की आत्मा जहाँ कहीं भी विराजित हो चिर शान्ति को प्राप्त करते हुए शीघ्रातिशीघ्र मोक्षगामी बनकर शाश्वत सुखों का वरण करे। *-राजस्थान प्रवर्तिनी 'श्रमण संघ'*

अध्यात्मयोगी आचार्यश्री हस्ती का 110वाँ जन्म-दिवस तप-त्याग के साथ देशभर में मनाया गया

अध्यात्मयोगी युगमनीषी पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. का 110वाँ जन्मदिवस तप-त्याग एवं सामायिक-स्वाध्याय के साथ मनाया गया। देश के विभिन्न क्षेत्रों में पूज्य आचार्यप्रवर, सन्त-प्रवरों एवं सतीमण्डल के सान्निध्य में विभिन्न ग्राम-नगरों में अध्यात्मयोगी, युगमनीषी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. का गुणानुवाद किया गया। उपवास, पौषध, एकाशन आदि की तपस्याएँ सम्पन्न हुईं तथा अनेकविध त्याग-प्रत्याख्यान किए गए। जिनवाणी कार्यालय को बेंगलूरू, बीजापुर, जोधपुर, जयपुर, अहमदाबाद, सवाईमाधोपुर, कोटा, पाली, बालोतरा, कोट्टुर आदि अनेक स्थानों से पूज्य आचार्यप्रवर का जन्मदिवस मनाने के समाचार प्राप्त हुए हैं, किन्तु यहाँ स्थानाभाव के कारण प्रकाशित नहीं किया जा सका है।

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान पूर्वछात्र परिषद् का प्रथम अधिवेशन एवं स्मारिका का लोकार्पण

जयपुर-आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान पूर्वछात्र परिषद् द्वारा 12 जनवरी, 2020 को श्री एस. एस. जैन सुबोध पी.जी. कॉलेज रामबाग सर्किल जयपुर के सभागार में प्रथम अधिवेशन का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि थे अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष पूर्व न्यायाधिपति श्री प्रकाशजी टाटिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राणिमित्र पद्भूषण डॉ. डी. आर. मेहता संरक्षक-आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान पूर्वछात्र परिषद् एवं संस्थापक भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति द्वारा की गई। श्री कैलाशचन्दजी हीरावत, सह-संयोजक शासन सेवा समिति, श्रीमती शान्ताजी मोदी पूर्व संयोजक सिद्धान्तशाला एवं वर्तमान व्यवस्थापक डॉ. पी. एस. लोढ़ा ने विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

इस अवसर पर पद्मभूषण डॉ. डी. आर. मेहता ने इस अधिवेशन के आयोजन पर प्रमोद प्रकट किया तथा करुणा एवं अनुकम्पा को जीवन में अपनाने हेतु प्रेरणा प्रदान की। विशिष्टि अतिथि श्रीमती शान्ताजी मोदी ने संस्थान के संयोजक काल की मधु स्मृतियों का उल्लेख किया तथा उनके प्रति वात्सल्य से अनुभूत प्रमोद का उल्लेख किया। विशिष्ट अतिथि शासन सेवा समिति के सह संयोजक श्री कैलाशचन्दजी हीरावत ने संस्थान के नये स्वरूप की भूमिका उल्लेख करते हुए वर्तमान में प्रतिवर्ष 40-50 छात्रों के अध्ययन एवं जीवन-निर्माण पर हर्ष प्रकट किया।

पूर्वछात्र परिषद् की ओर से श्री पारसमलजी जैन, प्रेसीडेण्ट, वित्त, वेल स्पन कार्पोरेशन लिमिटेड ने अपने द्वारा संस्थान में कृत अध्ययन के प्रति कृतज्ञता प्रकट की तथा कहा कि हम कोई भी प्रवृत्ति करें तो हमें सोचना चाहिए कि हम यह प्रवृत्ति क्यों कर रहे हैं? बैंकॉक से आए श्री माँगीलाल हिरण ने रोचक ढंग से अपने बाल्यकाल के ग्राम्य जीवन का सजीव चित्रण किया तथा संस्थान एवं गुरुजी श्री कन्हैयालालजी लोढ़ा से किए अध्ययन एवं आत्मीय सहयोग के प्रति आभार प्रकट किया।

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री पवन कुमार जैन ने अपनी विचाराभिव्यक्ति में कहा कि पुलिस सेवा में रहते हुए भी आज जीवन में जो नैतिकता एवं प्रामाणिकता है उसका कारण संस्थान में प्राप्त संस्कार हैं।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व न्यायधिपति एवं रत्नसंघाध्यक्ष श्री प्रकाशजी टाटिया ने कहा कि कानून किसी का जीवन निर्माण नहीं करता, शिक्षा से ही जीवन बनता है। आचार्य हस्ती की प्रेरणा से संस्थापित इस संस्थान से निकले छात्रों के अनुभवों को सुनकर प्रसन्नता हुई।

पूर्वछात्र परिषद् की ओर से इस शुभ अवसर पर संस्थान के पूर्व अधिष्ठाता, पूर्व संयोजक, उच्चपदस्थ छात्र , अन्तरराष्ट्रीयस्तर पर लब्धप्रतिष्ठ पूर्व छात्र, वीर परिवारों से सम्बद्ध छात्र, निरन्तर 10 वर्ष तक पर्युषणपर्व में स्वाध्यायी सेवा देने वाले पूर्वछात्र तथा संस्थान के छात्रों को और संस्कृत आदि विषयों में विद्वान्, अध्ययन में सहयोगी गुरुजन श्रीमती डॉ. राजेश्वरी भट्ट तथा श्री प्रेमराजजी जैन का शाल, माला तथा स्मृति चिह्न द्वारा अभिनन्दन स्वागत किया गया।

पूर्वछात्र परिषद् के मानद् सचिव श्री अशोक कुमार जैन ने पूर्वछात्र परिषद् की समस्त गतिविधियों के विषय में अवगत कराया। आध्यात्मिक संस्थान में अब तक अध्ययनरत-समस्त छात्रों के जीवन परिचय मय आवक्षचित्र, छात्रों के आदरणीय गुरुजी श्री कन्हैयालालजी लोढ़ा के प्रति श्रद्धाभाव संस्मरण एवं पूर्वछात्र परिषद् द्वारा सम्पादित समस्त गतिविधियों की जानकारी प्रदान करने वाली स्मारिका का विमोचन किया गया।

कार्यक्रम के अन्त में श्री गौत्तमचन्दजी जैन अध्यक्ष ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन करते हुए डॉ. धर्मचन्द जैन ने आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान की विकास यात्रा का परिचय भी दिया।

-अशोक कुमार जैन, मानद् सचिव

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर (सिद्धान्त शाला) में वर्ष 2020 के प्रवेश हेतु रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ

जयपुर-आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर (सिद्धान्तशाला) में वर्ष 2020 से प्रवेश प्राप्त करने वाले छात्रों के रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ हो गये हैं। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. की प्रेरणा से वर्ष 1973 में संस्थापित शिक्षण संस्थान में आध्यात्मिक शिक्षण के साथ-साथ उच्च अध्ययन की समुचित व्यवस्था है। साथ ही विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए कई कार्यक्रम भी संचालित किये जाते हैं। संस्थान में विद्यार्थियों के लिए उचित आवास-भोजन व्यवस्था के साथ कम्प्यूटर शिक्षण, इंग्लिश स्पीकिंग क्लासेज, सेमिनार एवं मोटिवेशनल कक्षाएँ आयोजित होती रहती हैं।

शैक्षणिक अध्ययन के साथ संस्थान द्वारा निर्धारित धार्मिक पाठ्यक्रम का अध्ययन भी संस्थान में करवाया जाता है। जो छात्र अभिभावक संस्कारित रहकर जयपुर में उच्च अध्ययन करना चाहते हैं, वे रजिस्ट्रेशन के लिए सम्पर्क करें। **रजिस्ट्रेशन के लिए योग्यता**-कक्षा 8वीं से उच्च कक्षा का कोई भी विद्यार्थी रजिस्ट्रेशन करवा सकता है। विद्यार्थी को धार्मिक एवं नैतिक संस्कारों को सीखने में रुचि हो। **रजिस्ट्रेशन कैसे करें**-संस्थान के दिये गये सम्पर्क सूत्र पर सम्पर्क करें अथवा ईमेल https://ratnasangh.com/ वेबसाइट से अथवा हमारे फेसबुक पेज ईमेल facebook.com/sidhantshala से फॉर्म डाउनलोड कर संस्थान के पते पर अथवा ईमेल ahassanathan@gmail.com पर प्रेषित करें। **संस्थान में प्रवेश कैसे होगा**-माह अप्रेल अथवा जून 2020 में संस्थान में प्रवेश के लिए प्राप्त आवेदनों में से चयनित छात्रों का इण्टरव्यू के आधार पर सलेक्शन किया जायेगा।

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-दिलीप जैन, अधिष्ठाता, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) 0141-2710946, 9461456489

संक्षिप्त-समाचार

जयपुर-व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. एवं महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. के सान्निध्य में 29 दिसम्बर, 2019 को लालभवन, चौड़ा रास्ता में मासिक पारिवारिक सामूहिक सामायिक के अवसर पर 'नारी के हम आभारी' विषय पर संगोष्ठी आयोजित हुई जिसके अन्तर्गत सुश्री सेहल जैन ने 'राजनीति में नारी का योगदान', श्रीमती महकजी डागा ने 'सामाजिक क्षेत्र में नारी का योगदान', श्री प्रकाशजी जैन ने 'पारिवारिक क्षेत्र में नारी का योगदान' एवं महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. ने 'आध्यात्मिक क्षेत्र में नारी का योगदान' विषय पर भावाभिव्यक्ति की। संगोष्ठी का संचालन जिनवाणी के सम्पादक डॉ. धर्मचन्दजी जैन द्वारा किया गया। *-सुरेश कोठारी, संघ मन्त्री*

चेन्नई-मद्रास विश्वविद्यालय के जैनविद्या विभाग में भक्तामर-स्तोत्र पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी का 8 जनवरी, 2019 को समापन हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि मद्रास उच्च न्यायालय के न्यायाधीश डॉ. विनीतजी कोठारी ने कहा कि नैतिकता के दूत बनकर भक्तामर में प्राप्त अमृत की बूँदें जन-जन तक वितरित करें। महाविद्यालय के सचिव एस अभय कुमार श्री श्रीमाल ने कहा कि महाविद्यालय परिसर में देशभर के विद्वानों के बीच पवित्र भक्तामर स्तोत्र की चर्चा सौभाग्य की बात है। *-डॉ. प्रियदर्शना जैन, संगोष्ठी समन्वयक*

बेंगलूरु-5 जनवरी, 2020 को दानवीर भामाशाह परम गुरुभक्त श्री जवरीलालजी उत्तमचन्दजी प्रकाशचन्दजी पदमराजजी रातड़िया मुथा परिवार द्वारा नवनिर्मित श्री मरुधरकेसरी जैन भवन का भव्य उद्घाटन एवं सन्त-सतीवृन्द के मंगलमय पदार्पण के साथ-गुरु श्री मरुधरकेसरी स्मृति-दिवस, आचार्य श्री हस्ती जन्म-दिवस तथा प्रवर्तक श्री सुकनमुनि जन्म-दिवस अपार श्रद्धा-भक्ति एवं उत्साह से आयोजित किया गया। सन्त-सतीवृन्द द्वारा नवकार महामन्त्र से मंगलाचरण के पश्चात् कार्यक्रम के संचालक श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल द्वारा भवन निर्माणकर्ता दानवीर रातड़िया परिवार की समग्र दान-गुरुभक्ति-श्रद्धा की बखूबी बखान कर अनुमोदना की गई।

-सोहनराज मेहता, ओमप्रकाश लुणावत

चेन्नई-करुणा अन्तरराष्ट्रीय का 22वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन डॉ. ए.सी. शन्मुगम, फाउण्डर चांसलर डॉ. एम.जी.आर. एजूकेशनल एण्ड रिसर्च इन्स्टीट्यूट यूनिवर्सिटी के मुख्यातिथ्य, श्री एस. शान्तिलालजी जैन एवं श्री मोहनलालजी चोरड़िया के विशिष्टातिथ्य में करुणा प्रार्थना के साथ देश के विभिन्न राज्यों से पधारे 400 करुणा प्रतिनिधियों की उपस्थिति में 27 दिसम्बर, 2019 को प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर 'करुणा गीत' पुस्तिका का विमोचन किया गया। देश के 20 करुणा केन्द्रों के प्रतिनिधियों ने अपने-अपने क्षेत्र के करुणा कार्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

उत्कृष्ट करुणा क्लब अवार्ड 30 विद्यालयों को, दयावान अवार्ड 15 विद्यार्थियों को, करुणा शिक्षक सम्मान, विशिष्ट 15 करुणा केन्द्र सम्मान अतिथियों के करकमलों से प्रदान किए गए। संस्था सचिव पदमचन्दजी छाजेड़ द्वारा धन्यवाद ज्ञापन एवं सामूहिक राष्ट्रगान के साथ अधिवेशन का समापन हुआ।

जयपुर-आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर (सिद्धान्तशाला) में अध्ययनरत 25 विद्यार्थियों ने अपने शीतकालीन अवकाश का सदुपयोग परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि सन्त मुनिराजों के सान्निध्य में पीपाड़ शहर में किया। 26 दिसम्बर, 2019 से 10 जनवरी, 2020 तक 16 दिनों तक संस्थान के विद्यार्थियों ने पूज्य आचार्य भगवन्त, सन्त मुनिराजों के सान्निध्य में रहकर ज्ञान-ध्यान, तपाराधना एवं धर्माराधना में प्रतिदिन प्रार्थना, प्रवचन, आगम वाचनी एवं प्रतिक्रमण का लाभ तो लिया ही साथ ही आचार्य भगवन्त की विशिष्ट अनुकम्पा से महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री

प्रमोदमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. ने भी विद्यार्थियों को विविध विषयों का अध्ययन-मार्गदर्शन किया। प्रतिदिन विद्यार्थियों द्वारा स्थानक में ही रात्रिकालीन संवर आराधना की गयी, साथ ही कुछ विद्यार्थियों ने 1008 एवं 108 वन्दना आचार्य भगवन्त के श्री चरणों में की। विद्यार्थी धीरज जैन ने पूज्य चारित्रात्माओं की पावन सन्निधि में अठाई तप की आराधना की तथा अन्य विद्यार्थियों ने शीलव्रत के नियम (शादी नहीं हो तब तक), सप्त कुव्यसन त्याग, जमीकन्द एवं रात्रि भोजन त्याग आदि नियम भी ग्रहण किये।

LAS VEGAS (USA)-The Department of Religious Studies at San Diego State University invites applications from new or recent PhD's in the field of Jainism to serve as the Bhagwan Sumatinath Post-doctoral Fellow. The Bhagwan Sumatinath Fellow will contribute to the intellectual vibrancy, cultural competency, and research excellence of SDSU.

The selected fellow will engage in a comprehensive research, teaching, and mentoring experience. The appointments are for a two-year term and offers a salary of $40,000 and the benefits are eligible. In addition, the Bhagwan Sumatinath Postdoctoral Fellow will have the opportunity to apply for grants offered by SDSU, as well as travel funds of $1,500 to attend and present at conferences.

The successful appointee must have received his/her Ph.D. between July 1, 2017 and June 1, 2020. Full applications must be received by February 28th, 2020.

For More detail please contact :-Dr. Sulekh C. Jain, Las Vegas, Nevada, USA, Home: 281-494-7656, Cell : 832-594-800 Email : scjain@gearthlink.net

जयपुर-स्थानकवासी जैन सोसाइटी, मालवीय नगर, जयपुर द्वारा नवनिर्मित 'श्री उत्तम स्वाध्याय भवन' में उच्च शिक्षा एवं कोचिंग में प्रयासरत युवकों के लिए छात्रावास की सुविधाएँ उपलब्ध है। इनमें आवास और भोजन व्यवस्था नि:शुल्क है। जो छात्र संस्कारित रहकर उच्च अध्ययन करना चाहते हैं, वे आवेदन करें। चयनित छात्रों का साक्षात्कार उपरान्त चयन किया जाएगा। **सम्पर्क सूत्र**-श्री उत्तम कल्याण ट्रस्ट, सी-345, हंसमार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.) मो. 8233934951 ईमेल jlalit1991@gmail.com

बधाई

बालोतरा-श्री ओमप्रकाशजी बाँठिया संयोजक, कांग्रेस सीए प्रकोष्ठ बाड़मेर-जैसलमेर क्षेत्र को उनकी उल्लेखनीय

समाज-सेवा, शिक्षा, चिकित्सा एवं पर्यावरण क्षेत्र में योगदान के लिए इण्डो-नेपाल समरसता ऑर्गेनाइजेशन द्वारा रशियन कल्चर सेण्टर काठमाण्डू नेपाल में आयोजित समारोह में नेपाल सरकार के पूर्व प्रधानमन्त्री श्री बहादुरराय माझी, पूर्व राजदूत डॉ. विष्णुहरि एवं श्री श्यामानन्द सुमन सहित अतिथियों द्वारा 'इण्डो नेपाल समरसता अवार्ड' से सम्मानित किया गया।

शुभम कांकरिया

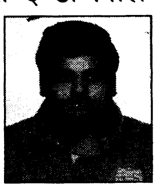

विनय लुणावत

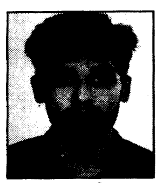

शुभांग मेहता

प्रदीप चौपड़ा

माण्डल गाँव (जलगाँव)-चि. शुभम रनिशजी जैन (कांकरिया) सुपौत्र स्व. श्री इन्दरचन्दजी पन्नालालजी कांकरिया ने सी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण की है।

जोधपुर-विनय सुपुत्र श्री शैलेन्द्रजी-श्रीमती रीनाजी सुपौत्र स्व. श्री देवेन्द्रजी-श्रीमती शान्ताजी लुणावत ने सी.ए. एवं सी.एम.ए. परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप श्री अर्जुनराजजी मेहता जोधपुर के दौहित्र हैं। *-अर्जुनराज मेहता*

जोधपुर-शुभांग मेहता सुपुत्र श्रीमती सरिता-मनीष मेहता सुपौत्र श्रीमती पुसबकँवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री बुद्धमलजी मेहता ने सीए परीक्षा उत्तीर्ण की है।

जोधपुर-श्री प्रदीप चौपड़ा सुपौत्र स्व. श्रीमती उमरावदेवीजी-श्री चम्पालालजी चौपड़ा सुपुत्र श्रीमती पूनमदेवीजी-हंसराजजी चौपड़ा ने सीए परीक्षा उत्तीर्ण की है।

श्री कुशल जैन छात्रावास के छात्रों ने किया सीए उत्तीर्ण

जोधपुर-श्री कुशल जैन छात्रावास प्रथम पोलो पावटा, प्लॉट नं. 30 जोधपुर के प्रदीप चौपड़ा गोटन, विमल सुराणा सेवकी कला एवं रविजी भंसाली बाड़मेर सीए अन्तिम वर्ष में चार्टर्ड एकाउण्टेन्ट के रूप में चयनित हुए है। इनकी सफलता पर श्री कुशलजैन छात्रावास के ट्रस्टीगणों एवं समाज ने हर्ष व्यक्त करते हुए इनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ दी है। *-मनमोहन कर्णावट*

श्रद्धाञ्जलि

मुम्बई-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्रीमान् बसन्तजी जैन (मूथा) का 05 जनवरी, 2020 को देहावसान हो गया। आपका

जीवन धर्मनिष्ठा, कर्त्तव्य परायणता, कर्मठ सेवाभावना, स्वधर्मी वात्सल्य, विनम्रता आदि अनेक गुणों से ओतप्रोत था। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णत: समर्पित थे तथा सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आप श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ शाखा-मुम्बई और श्री जैन रत्न युवक परिषद् शाखा मुम्बई के विभिन्न पदों को सुशोभित करने के अनन्तर अखिल भारतीय श्री जैन हितैषी श्रावक संघ के कोषाध्यक्ष पद पर महनीय सेवाएँ प्रदान कर रहे थे। आप स्वाभाविक सहिष्णुता एवं शिष्टाचार के धनी थे, आपसे मिलने वाला आपका मनमोहक बन जाता था। आपमें नैतिकता का संस्कार भरपूर था। आपका पूरा परिवार रत्नसंघ के समर्पित वरिष्ठ परिवारों में से एक है। आप स्वयं ने संस्कारी जीवन व्यतीत करते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया था। साथ ही संघ की विभिन्न संस्थाओं में सेवा प्रदान कर संघ का नाम गौरवान्वित किया था। *-अशोक कुमार सेठ, मण्डल मन्त्री*

सवाईमाधोपुर-धर्मनिष्ठ, वरिष्ठ स्वाध्यायी, सुश्रावक श्री रामदयाल जैन (चोरू वाले) का 03 जनवरी, 2020 को

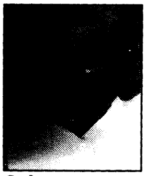

86 वर्ष की आयु में बजरिया-सवाईमाधोपुर में देहावसान हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से पूरिपूर्ण था। धर्मनिष्ठा, कर्त्तव्य परायणता, कर्मठ सेवाभावना, स्वधर्मी वात्सल्य, विनम्रता आदि अनेक गुणों से आपका जीवन ओतप्रोत था। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णत: समर्पित थे। सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आपको अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के द्वारा सन् 2006 में संघ रत्न सम्मान प्रदान किया गया। आपने पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के सन् 1974 एवं 1988 के सवाईमाधोपुर चातुर्मासों में सेवा का अपूर्व लाभ लिया एवं स्वाध्यायी बनकर 47 वर्षों तक पर्युषण पर्व में सेवाएँ प्रदान की। 37 वर्ष की वय में आपने ब्रह्मचर्यव्रत अंगीकार कर लिया था। आप वर्ष 2013 से 2018 तक आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सान्निध्य में पूरे चार माह संवर, पौषध की साधना में रत रहे। रात्रि भोजन के त्याग के साथ आपका अधिकांश समय संवर,पौषध की साधना में व्यतीत होता था और नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय करते थे। आप अपने पीछे धर्मपत्नी श्रीमती

राजादेवीजी, पुत्र श्री उम्मेदचन्दजी, लालचन्दजी, नमोकारजी, मोहन, धनराजजी एवं एक पुत्र का भरापूरा धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गए हैं। *-नमोकार जैन*

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती कमलाजी अबानी धर्मसहायिका स्व. श्री जोरावरमलजी अबानी का 19 जनवरी, 2020 को देहावसान हो गया। रत्नसंघ की सुज्ञ, समर्पित, श्रद्धावान एवं धर्मनिष्ठ श्राविकारत्न थी। आप सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सदैव तत्पर रहती थी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के जोधपुर चातुर्मास में आप सहित समस्त परिवारजनों ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन श्रवण के साथ धर्म-ध्यान का अपूर्व लाभ प्राप्त किया था। जोधपुर मेंआयोजित संघ के समारोह, कार्यक्रमों में अबानी परिवार का सक्रिय योगदान प्राप्त होता है। सुश्राविका श्रीमती कमलाजी अबानी ने आतिथ्य ही घर का वैभव है, इस पंक्ति को अपने जीवन में साकार किया था। आप स्वयं ने संस्कारी जीवन जीते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने में महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया था, जिसके फलस्वरूप श्री पूरणराजजी अबानी ने संघ में राष्ट्रीय महामन्त्री के रूप में अपने दायित्व का कुशलता पूर्वक निर्वहन किया तथा वर्तमान में भी उनकी सेवाएँ संघ को निरन्तर प्राप्त हो रही है। *-धनपत सेठिया, महामन्त्री*

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री दलीचन्दजी चौपड़ा का 20 जनवरी, 2020 को संथारा पूर्वक समाधिमरण हो गया।

आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करते थे। आपने कई प्रकार के प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। गुरु भगवन्तों के दर्शन करना, जिनवाणी का श्रवण करना, नियमित सात-आठ सामायिक, संवर, रात्रि चौविहार-त्याग, प्रतिक्रमण आपकी धार्मिक क्रिया के अभिन्न अंग थे। संघ और समाज के प्रति आपका सहयोग एवं समर्पण हमेशा रहा। आप एवं आपका समस्त चौपड़ा परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में अग्रणी रहा। अनुभवी एवं वरिष्ठ श्रावक श्री पारसमलजी गिड़िया की प्रेरणा एवं परिवार के सहयोग से आपको संलेखना संथारा के प्रत्याख्यान करवाए और आपका अन्तिम समय सफल बनाया।

बालोतरा-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री छगनराजजी दान्ती का 6 जनवरी, 2020 को देहावसान हो गया। आपकी सन्त-

सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आपके चेहरे पर सदा शान्ति-सौम्यता झलकती रहती थी। वाणी की मधुरता, व्यवहार की सरलता और मन की निष्कपटता के कारण आप सबके प्रियपात्र थे। आपका जीवन त्याग-प्रत्याख्यान से युक्त था। आपने पूज्य आचार्यश्री के अहमदाबाद चातुर्मास में आजीवन शीलव्रत के खन्द अंगीकार कर रखे थे। उन्होंने संस्कारी जीवन जीते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया था जिसके फलस्वरूप दान्ती परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है। विहार-सेवा के साथ-साथ स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी दान्ती परिवार सदैव समर्पित रहा है। *-धनपत सेठिया, महामन्त्री*

जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री पारसमलजी कुचेरिया का 12 जनवरी, 2020 को देहावसान हो गया। आपका समस्त

जीवन राजकीय सेवा के साथ-साथ धर्मध्यान तथा स्वाध्याय सेवा में व्यतीत हुआ। आपका सम्पूर्ण परिवार संघ द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियों में जुड़ा हुआ है। आपका जीवन धर्मनिष्ठा, कर्त्तव्य परायणता, कर्मठ सेवाभावना, स्वधर्मी वात्सल्य, विनम्रता आदि अनेक गुणों से ओतप्रोत था। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णत: समर्पित थे तथा सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गये हैं। *-पुखराज कुचेरिया*

कानाना (बालोतरा)-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री सोनराजजी सुपुत्र श्री ओगड़मलजी श्री श्रीमाल का 13 जनवरी, 2020 को 79 की आयु में देहावसान हो गया। आप प्रत्येक सम्प्रदाय के सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आपने आचार्य भगवन्त के कानाना प्रवास पर सजोड़े शीलव्रत अंगीकार किया था। आपका जीवन धर्मनिष्ठा, कर्त्तव्य परायणता, कर्मठ सेवाभावना, स्वधर्मी वात्सल्य, विनम्रता आदि अनेक गुणों से ओतप्रोत था। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थे। सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

-सोहनलाल जैन, बालोतरा

सवाईमाधोपुर-धर्मानुरागी सुश्राविका श्रीमती रामप्यारीदेवीजी जैन धर्मसहायिका स्व. श्री मोतीलालजी बोहरा (श्यामपुरा वाले) का 21 दिसम्बर, 2019 को देवलोकगमन हो गया। आपका जीवन सरलता, मधुरता एवं उदारता जैसे गुणों से ओत-प्रोत था। सन्त-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। गुरु दर्शन, वन्दन, सामायिक-स्वाध्याय, व्रत-नियम का पालन कर हर्ष का अनुभव करती थी। पूज्य आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन्त के सवाईमाधोपुर चातुर्मास में आपकी एवं आपके परिवारजनों की महनीय सेवा रही। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गयी है। *-शैलेन्द्र जैन*

चौथ का बरवाड़ा-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती पानादेवीजी जैन धर्मसहायिका स्व. श्री छीतरमलजी जैन का 14 दिसम्बर 2019 को 83 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपका जीवन धर्मनिष्ठा, कर्त्तव्य परायणता, कर्मठ सेवाभावना, स्वधर्मी वात्सल्य, विनम्रता आदि अनेक गुणों से ओतप्रोत था। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थी। सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहती थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गयी हैं। *-मोहनलाल जैन*

इन्दौर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती शान्तिदेवीजी जैन धर्मसहायिका स्व. श्री रघुनाथप्रसादजी जैन (कुण्डेरा वाले) का 09 जनवरी, 2020 को देहावसान हो गया। आपकी आचार्य भगवन्त, उपाध्यायप्रवर, सन्त-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। सामायिक-स्वाध्याय आपका नित्यक्रम था। आपका जीवन धर्मनिष्ठा, कर्त्तव्य परायणता, कर्मठ सेवाभावना, स्वधर्मी वात्सल्य, विनम्रता आदि अनेक गुणों से ओतप्रोत था। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गयी हैं। *-महावीर प्रसाद जैन*

बोरुन्दा (मेड़ता)-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री पुखराजजी बाफणा सुपुत्र श्री सलेराजजी बाफणा का 05 नवम्बर, 2019 को 90 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप प्रतिदिन पाँच सामायिक करते थे। तपस्या में उपवास, बेला, तेला, अठाई एवं पन्द्रह की तपस्या के साथ-साथ 80 वर्ष की आयु में आपने अठाई की तपस्या भी थी। आपकी एक बहिन ज्ञानगच्छ में दीक्षित हुई हैं। आपका जीवन अनेक गुणों से ओतप्रोत था। सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

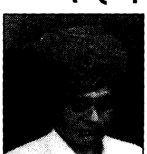

जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री सन्तोषचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री विरदीचन्दजी मेहता (हरमाड़ा वाले) का 8 जनवरी, 2020 को मानसरोवर-जयपुर में देहावसान हो गया। आपकी धार्मिक गतिविधियों में विशेष रुचि थी। आप वर्तमान में श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संस्था, मानसरोवर में परामर्शदाता थे। आपका जीवन धर्मनिष्ठा, कर्त्तव्य परायणता, कर्मठ सेवाभावना, स्वधर्मी वात्सल्य, विनम्रता आदि अनेक गुणों से ओतप्रोत था। सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आप अपने पीछे

भरा-पूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती शान्तिदेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री सम्पतराजजी मेहता का 07 जनवरी, 2020

को देवलोकगमन हो गया। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में आप सदैव तत्पर रहती थी। तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के नेहरू पार्क चातुर्मास में आप सहित समस्त परिवारजनों ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण के साथ धर्म-ध्यान का लाभ प्राप्त किया। आप स्वयं ने संस्कारी जीवन जीते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया था जिसके फलस्वरूप मेहता परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

भड़गाँव-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सायरबाईजी धर्मसहायिका स्व. श्री जवाहरलालजी रांका (भोपालगढ़ वाले)

का 27 दिसम्बर, 2019 को 87 वर्ष की आयु में संथारे सहित समाधिमरण हो गया। आपकी रत्नसंघ के सन्त-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आप नियमित सामायिक, प्रतिक्रमण, रात्रि-भोजन त्याग, जमींकन्द त्याग, विशेष तिथियों पर हरी का त्याग, द्रव्य मर्यादा आदि नियम थे। परिवार द्वारा आपके अन्तिम भावों में प्रधानता देते हुए जप, तप, त्याग, दान, धर्म का अवलम्बन लिया तथा सांसारिक रीति-रिवाज एवं आर्त्तध्यान गौण किया।

आलनपुर (सवाईमाधोपुर)-सुश्रावक श्री प्रभुलालजी जैन अध्यापक (सिंगोर वाले) का 11 जनवरी, 2020 को

87 वर्ष की आयु में देवलोकगमन हो गया। आप शान्तस्वभावी, सरलमना, मिलनसार एवं धर्मनिष्ठ श्रावकरत्न थे। श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, आलनपुर के अध्यक्ष रहने के साथ सन्त-सतियों की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। नियमित सामायिक करने वाले श्रावकरत्न ने अस्वस्थ दशा में भी समता बनाए रखी तथा सभी प्रकार की मर्यादा एवं प्रत्याख्यान के साथ देह त्याग किया। आप धर्मसहायिका श्रीमती शान्तिदेवीजी, सुपुत्र श्री रमेशजी, कमलेशजी एवं तीन पुत्रियों का भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गये हैं।

-कमलेश जैन

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती कमलाजी धर्मपत्नी श्री प्रसन्नचन्दजी सिंघवी सुपुत्री स्व. श्री दौलतचन्दजी

भण्डारी का 17 जनवरी, 2020 को 80 वर्ष की आयु में संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। आपने अपने जीवन में अनेक भजनों की रचना की और अपनी मधुर आवाज में उन्हें गाया भी। पिछले 15 वर्षों से शारीरिक अस्वस्थता के चलते और पिछले 10 वर्षों से बोलने में असमर्थ होते हुए भी आप धार्मिक भावना एवं समता की जीती जागती तस्वीर थी। आप अपने पीछे धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत भरा-पूरा परिवार छोड़कर गयी हैं।

-शरद सिंघवी

पाली-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती बिदामी देवीजी धर्मसहायिका स्व. श्री खींवराजजी चौपड़ा का 18 जनवरी, 2020 को 92 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। सभी सन्त-सतियों के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से ओत-प्रोत था। चातुर्मास में प्रतिदिन प्रवचन श्रवण, सामायिक तथा समय-समय पर व्रत-नियम, प्रत्याख्यान एवं तपाराधना-साधना में तत्पर रहती थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई है।

चौथ का बरवाड़ा-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री बजरंग लालजी जैन (हलवाई) का 10 जनवरी, 2020 को स्वर्गगमन हो

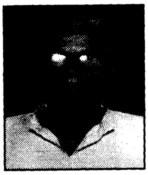

गया। वे धर्मनिष्ठ एवं संघनिष्ठ श्रावकरत्न थे। आपकी रत्नसंघ के सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति थी। आप मृदुभाषी, मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। नियमित सामायिक-स्वाध्याय करते थे। सन्त-सतियों के प्रवचन श्रवण का लाभ लेते थे तथा उनकी सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। आप अपने पीछे श्री जिनेन्द्र कुमारजी, मननजी जैन का संस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं।

मुश्किल मिलेगा वैसा मुनि पावन

बहुश्रुत श्री जयमुनिजी

(5 जनवरी 2020 को घाटकोपर (मुम्बई) में आयोजित धर्मसभा में प्रस्तुत)

मानमुनि की महासाधना को कर लें वन्दन।
मुश्किल मिलेगा वैसा मुनि पावन।।
जिसने दर्शन किये, उसके भाग्य जगे थे।
उसके जीवन-पथ से दुःख दारिद्र भगे थे।
तप्त धरा पर बसरा देते थे सावन के कण।
मुश्किल मिलेगा वैसा मुनि पावन।।
संयम-नियम में फौलादी कदम रखे थे।
प्रतिकूल परिस्थितियों में भी नहीं थके थे।
ऐसे सन्तों से चमकता रहा यह जिनशासन।
मुश्किल मिलेगा वैसा मुनि पावन।।
आचार्य हस्ती के उत्तम शिष्य कहाए।
हीराचार्य के संग-संग कदम बढ़ाए।
दो हंसों की जोड़ी बिछड़ी, होती है सिहरन।
मुश्किल मिलेगा वैसा मुनि पावन।।
मिली कृपा उनकी, हम धन्य हो गए।
तन-मन में ही मानो चैतन्य हो गए।
नहीं कर पाएँगे उनका विस्मरण।
मुश्किल मिलेगा वैसा मुनि पावन।।

-प्रस्तुति, डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई

नमन संयमी सन्त को

महाश्रमण जिनेन्द्र मुनि 'काव्यतीर्थ'

मानमुनि महाराज थे, शान्त-दान्त-गम्भीर।
जिनशासन में शोभते, धन्य-धन्य गुणधीर।।
उपाध्याय पद प्राप्त कर,किया कभी ना मान।
क्रिया ज्ञान सम्पन्न थे, पाया जग सम्मान।।
हस्ती गुरु के नाम को, भव्य दिपाया आप।
विविध गुणों के सिन्धु थे, जिसका नहीं है नाप।।
हीरा मुनि आचार्य के, सहयोगी थे आप।
परीषह भी आये कभी, सह लेते चुपचाप।।
करें निरन्तर आपका, गुण कीर्तन गुणगान।
खूब बढ़ाई आपने, जिनशासन की शान।।
गुरु पुष्कर-देवेन्द्र सह, गुरु गणेश के साथ।
मिलना हुआ 'गज' 'मान' से, मानो हुआ प्रभात।।
संथारा कर मान ने, पूर्ण किया विश्राम।
पुनः देव गुरु धर्म में, कभी न होगी शाम।।
श्रद्धा सुमनाञ्जलि करूँ, अर्पित ओ मुनि मान।
नमन संयमी सन्त को, पायें उत्तम स्थान।।
'जिनेन्द्र' शासन धन्य है, धन्य सन्त निर्ग्रन्थ।
मान मुनि मन जीत कर, चले मुक्ति के पन्थ।।

आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. के दीक्षा शताब्दी वर्ष में व्याख्यान माला का आयोजन

आचार्यश्री के दीक्षा शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा वर्ष पर्यन्त भारत वर्ष के ग्राम-नगरों में व्याख्यान माला का आयोजन किया जा रहा है। इसके तहत् **23 फरवरी, 2020** को प्रथम व्याख्यान माला का आयोजन सुबोध पब्लिक स्कूल, दुर्लभजी हॉस्पिटल के पास, रामबाग सर्किल, जयपुर में किया जा रहा है।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

ISSN 2249-2011

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 16126 से 16138 तक कुल 13 सदस्य बने

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

100000/- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री चंचलमलजी बच्छावत की ओर से सप्रेम भेंट।

50000/- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मन्त्री श्री अशोक कुमारजी सेठ एच.यू.एफ. की ओर से सप्रेम भेंट।

30000/- श्री सुगनचन्द प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट, अजमेर एवं श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्रकुमारजी रांका के परिवारजनों की ओर से बाल जिनवाणी पुरस्कार 2020 के उपलक्ष्य में।

25000/- श्री महावीरचन्दजी बाफना, जोधपुर की ओर से बाल स्तम्भ पुस्कार 2019 के उपलक्ष्य में।

11000/- श्री प्रतापसिंहजी-श्रीमती सरोजजी लोढ़ा, जयपुर की ओर सप्रेम भेंट।

5100/- श्री उम्मेदचन्दजी, लालचन्दजी, नमोकारजी, मोहनलालजी, धनराजजी जैन सर्राफ (चोरू वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताश्री रामदयालजी सर्राफ का 3 जनवरी, 2020 को स्वर्गगमन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

5100/- वीरभ्राता श्री दिलीपजी, राजेशजी बाफना, चेन्नई, पूज्य पिताश्री सुश्रावक श्री पुखराजजी बाफना का 05 नवम्बर, 2019 को स्वर्गगमन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

5100/- श्री उगमराजजी, ऋषभजी मेहता, जोधपुर, पूजनीया मातुश्री श्रीमती शान्तिदेवीजी धर्मसहायिका स्व. श्री सम्पतराजजी मेहता का 07 जनवरी, 2020 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

3100/- श्री दिलीपराजजी, सुभाषचन्दजी, राजेन्द्रकुमारजी रांका (भोपालगढ़ वाले), भड़गाँव, पूजनीया मातुश्री श्रीमती सायरबाईजी धर्मसहायिका स्व. श्री जवाहरलालजी रांका का 27 दिसम्बर, 2020 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

2100/- श्रीमती कमलादेवीजी, नवरतनजी, अनिलजी, नीलमजी, नरेशजी भूरट (कुचेरा वाले), जलगाँव, श्री डूंगरचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री बालचन्दजी भूरट का 15 दिसम्बर, 2019 को स्वर्गगमन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

2100/- श्री प्रसन्नचन्दजी सिंघवी, जोधपुर, श्रीमती कमलाजी सिंघवी का 17 जनवरी, 2020 को समाधिमरण हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

2100/- हंसराजजी प्रदीप कुमारजी चौपड़ा, गोटन-नागौर, स्व. श्रीमती उमरावदेवीजी-चम्पालालजी के सुपौत्र एवं श्रीमती पूनमदेवीजी-हंसराजजी चौपड़ा के सुपुत्र श्री प्रदीपजी चौपड़ा के सीए बनने के उपलक्ष्य में।

1500/- श्रीमती ज्ञानदेवीजी सुखलेचा, जयपुर की ओर से सप्रेम।

1101/- श्री हनुमानप्रसादजी, रजतकुमारजी जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर, श्री लालचन्दजी जैन (जरखोदा वाले) की पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री हनुमान प्रसादजी जैन (पत्रकार), चौथमलजी (साडी वाले), सौरभजी, गौरवजी जैन, सवाईमाधोपुर श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सवाईमाधोपुर के पूर्व अध्यक्ष स्व. श्री मोतीलालजी बोहरा की धर्मपत्नी श्रीमती रामप्यारीजी जैन का 21 दिसम्बर 2019 को स्वर्गगमन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री सागरमलजी, पवन कुमारजी जैन, पचाला, चि. धीरजजी जैन के विवाहोत्सव के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री जम्बूकुमारजी जैन (आलनपुर वाले), सवाईमाधोपुर, पूजनीया मातुश्री की पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री केसरलालजी, राकेश कुमारजी, मुकेश कुमारजी, लोकेश कुमारजी जैन, सवाईमाधोपुर, श्रीमती चमेलीदेवीजी जैन की पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री योगेन्द्र कुमारजी, धर्मचन्दजी, जिनेन्द्रजी दिनेशजी के पूज्य पिताश्री की पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री लाडली प्रसादजी, मुकेश कुमारजी जैन, सूरवाल की ओर से सप्रेम।

1100/- श्रीमती अंजूजी, मनोजजी कोठारी, जयपुर की ओर से सप्रेम।

1100/- श्री मोहनलालजी, सोहनलालजी, महेन्द्रजी जैन, चौथ का बरवाड़ा-सवाईमाधोपुर पूज्या माताश्री पानादेवीजी जैन का 14 दिसम्बर, 2019 को स्वर्गगमन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री रमेशचन्दजी, कमलेशजी कुमारजी जैन, आलनपुर-सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताश्री प्रभुलालजी जैन अध्यापक (सिंगोर वाले) का 11 जनवरी, 2020 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री अनिलजी, हिमांशुजी मेहता, मानसरोवर-जयपुर, पूज्य पिताश्री सन्तोषजी मेहता (हरमाड़ा वाले) का 8 जनवरी, 2020 को स्वर्गगमन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्रीमती सरिताजी-मनीषजी मेहता, जोधपुर, सुपुत्र शुभांग मेहता के सी.ए. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री देवेन्द्रनाथजी-श्रीमती कमलाजी मोदी, श्रीलोकेन्द्रनाथजी-श्रीमती ऋतुजी मोदी, जोधपुर, सुश्री लोरीजी (31 जनवरी, 2020) एवं सुश्री आर्विजी मोदी (27 जनवरी, 2020) के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री अर्जुनराजजी-श्रीमती सुशीलाजी मेहता, जोधपुर, दोहित्र श्री विनय लुणावत सुपुत्र श्री शैलेन्द्रजी-श्रीमती रीनाजी लुणावत के सी.ए. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के शुभ प्रसंग पर।

1100/- श्री उच्छबराजजी मेहता, जोधपुर, श्री उच्छबराजजी एवं प्रतिभाजी मेहता के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री उत्तमचन्दजी, संगीताजी, सावनजी, शैलीजी चौपड़ा, जोधपुर, सन्तसेवी सुश्रावक श्री दलीचन्दजी चौपड़ा का 20 जनवरी, 2020 को संथारा पूर्वक समाधिमरण हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री जिनेन्द्र कुमारजी, मननजी जैन, चौथ का बरवाड़ा, श्री बजरंग लालजी जैन का 10 जनवरी, 2020 को स्वर्गगमन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

आगामी पर्व तिथि

फाल्गुन कृष्णा 8, रविवार	**16.02.2020**	**अष्टमी**
फाल्गुन कृष्णा 14, शनिवार	**22.02.2020**	**चतुर्दशी**
फाल्गुन कृष्णा अमावस, रविवार	**23.02.2020**	**पक्खी**
फाल्गुन शुक्ला 8, मंगलवार	**03.03.2020**	**अष्टमी**
फाल्गुन शुक्ला 14, रविवार	**08.03.2020**	**चतुर्दशी**
फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा, सोमवार	**09.03.2020**	**फाल्गुनी चौमासी पर्व (चातुर्मासिक पर्व)**
चैत्र कृष्णा 8, सोमवार	**16.03.2020**	**भगवान आदिनाथ जन्म कल्याणक एवं आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 86वाँ जन्म दिवस।**

लेखकों से निवेदन

जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका नियमित रूप से प्रकाशित हो रही है। यह पत्रिका वृद्धों, प्रौढ़ों, युवकों, महिलाओं, बालकों, शोधार्थियों आदि सबके लिए उपयोगी सामग्री से सज्जित रहती है। इसमें आध्यात्मिक, नैतिक एवं जीवनोपयोगी रचनाएँ रहती हैं, जिनका अनेक पाठक तन्मयता से स्वाध्याय करते हैं। लेखकों से निवेदन है कि वे समय-समय पर अपनी उत्कृष्ट रचनाएँ प्रेषित कर इस पत्रिका को निरन्तर समृद्ध बनाते रहें। यह पत्रिका आपकी अपनी है तथा इसके पाठक जागरूक भी हैं और संख्या में लगभग 15000 हैं। लेख ईमेल editorjinvani@gmail.com पर भेज सकते हैं।

-सम्पादक

ISSN 2249-2011

बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

मेरे बिना कैसे चलेगा

श्रीमती निधि दिनेश लोढ़ा

आज अस्पताल में रहते हुए पूरा एक महीना हो गया है। डॉक्टर आयी, नेहा का चेकअप किया और आज छुट्टी दे दी। नेहा और नीरव दोनों स्कूटर से सब्ज़ी लेने जा रहे थे। सामने से एक ट्रक वाला आया और ज़ोर से टक्कर हो गई।

नीरव को तो कम चोट लगी पर नेहा के चेहरे पर बहुत बड़ा कट लग गया, बत्तीस टाँके आए और नाक की हड्डी में फ्रैक्चर हो गया। आगे के दाँत टूट गए और इस तरह से पट्टियाँ बाँधी गई कि वह बोल नहीं सकती थी, उसे हर बात इशारों में करनी पड़ती।

नेहा अस्पताल में भी इसी चिन्ता में रहती कि **मेरे बिना कैसे चलेगा।** 'नीरव को खाना बनाना तो दूर बच्चों का टिफ़िन भी ठीक से पैक करना नहीं आता। आस्था और अभिनव अभी बहुत छोटे हैं उनको अच्छे से सम्भालना। नीरव परेशान हो जायेंगे। हाँ, मम्मी-पापा सम्भाल लेंगे, पर आस्था तो कुछ खाती नहीं मम्मी परेशान हो जाएगी। अभिनव को मेरी ड्रेस पकड़े बग़ैर नींद नहीं आती, वह कैसे सोएगा?'

हाँ तीन-चार दिन परेशानी हुई, लेकिन अब सब सामान्य हो गया था। एक महीना हो गया अभिनव नानी के साथ सोने लगा, आस्था नानी से खाना खाने लगी, नीरव रसोई के काफ़ी काम में मदद कर देता।

एक माह बाद नेहा घर आयी, घर साफ़-सथुरा था। डॉक्टरों ने अभी-भी उसे आराम करने को कहा था। उसने सोचा मुझे लगता था कि मेरे बिना तो घर चल ही नहीं सकता। चौबीस घण्टों में से एक घण्टा भी मैं सामायिक कभी नहीं करती थी। फोन बजेगा तो कौन उठाएगा, घण्टी बजेगी तो कौन दरवाज़ा खोलेगा? और सवेरे से शाम तक बस घर के कामकाज में ही लगी रहती।

साधु सन्त हमेशा प्रेरणा देते हैं कि सामायिक, ध्यान के लिए समय निकालो, पर मैंने नहीं निकाला। सचमुच परिस्थितियाँ इंसान को सब सिखा देती हैं। हमें सारे काम की ज़िम्मेदारी स्वयं न लेकर घर के अन्य सदस्यों और बच्चों से भी घर के काम में मदद लेनी चाहिए और यह कदापि न सोचें कि मेरे बिना घर-गृहस्थी चल ही नहीं सकती।

हाँ हम सबका बहुत महत्त्व है, लेकिन चौबीस घण्टों में से एक घण्टा स्वयं के लिए निकालने का प्रण अवश्य लें। अक्सर छोटे बच्चों की माताएँ समय नहीं निकाल पाती, पर कोशिश करें तो जल्दी उठकर या कभी-भी एक सामायिक जितना समय निकाल सकती हैं।

-बी 2402, इण्डिया बुल्स ब्लू, डॉ. ईमोस्स रोड़, वर्ली नाका, मुम्बई-400018 (महाराष्ट्र) 9820305305

धर्म करने से....

प्राणिमित्र नितेश नागोता जैन

- कर्मों की निर्जरा होती है।
- मन मस्तिष्क का सन्तुलन बना रहता हैं।
- आत्मिक नियन्त्रण बढ़ता है।
- स्वयं का विकास होता हैं।
- जिनाज्ञा का पालन होता हैं।
- आत्म शान्ति के साथ-साथ आत्म लक्ष्य की प्राप्ति होती हैं।
- समभावों में बढ़ोतरी होती है।
- सद्गुणों का विकास होता है।
- वर्तमान और भविष्य सफल बनता है।
- श्रद्धा, समझ, दृढ़ता में विस्तार होता है।
- समय का सदुपयोग होता है।
- अनुशासित रहने का अभ्यास होता है।
- जिनवाणी से नजदीकी बढ़ती है।
- गुणग्राहकता में विस्तार होता है।
- दृष्टिकोण व्यापक बनता है।
- सम्यक् पुरुषार्थ का मार्ग प्रशस्त होता है।
- समय-शक्ति-बुद्धि का सदुपयोग होता है।
- धर्म करने से कुछ भी हानि नहीं, लाभ ही लाभ होता हैं। इसीलिए गुरुजन फरमाते हैं कि..

धर्म करो मेरे धर्म प्रेमियों, धर्म किया भव-भव तिरसी।
धर्म करता चढ़े जो रसायन, तू तीर्थंकर बन जासी।।
आत्मिक उन्नति के लिए, करना है धर्म साधना।
ध्याता को ध्येय बनाती है, सम्यक् आराधना।।
बातों से नहीं, कुछ करने से बदलेगी जीवन की दिशा-दशा।
आदर्श जीवन-निर्माण के लिए बढ़ानी हैं नित्य धर्म साधना।।

-कर सलाहकार, जैन बोर्डिंग एरिया, भवानीमण्डी (राज) 9413101489

पच्चीसवें बोले चारित्र पाँच

1. सामायिक चारित्र, 2. छेदोपस्थापनीय चारित्र, 3. परिहार-विशुद्धि चारित्र, 4. सूक्ष्मसम्पराय चारित्र और 5. यथाख्यात चारित्र।

चारित्र-आत्मा का विभाव से स्वभाव की ओर गति करना 'चारित्र' हैं। जिसके द्वारा मोक्ष प्राप्त किया जा सके उसे 'चारित्र' कहते हैं। सभी पाप वृत्तियों के त्याग को भी 'चारित्र' कहते हैं। तात्पर्य यह है कि पाप व सावद्य प्रवृत्ति का त्याग कर मोक्ष हेतु संयम में जो शुभ या शुद्ध प्रवृत्ति की जाती है, उसी का नाम चारित्र है। चारित्र मोहनीय कर्म के क्षय, उपशम या क्षयोपशम से होने वाले विरति रूप परिणाम को 'चारित्र' कहते हैं।

चारित्र के पाँच भेद इस प्रकार हैं

1. सामायिक चारित्र-सामायिक शब्द सम् + आय + इक, से बना है। जिसका अर्थ है-राग-द्वेष रहित आय अर्थात् ज्ञान, दर्शन, चारित्र का आना और मोक्षरूप फल का प्राप्त होना। आत्म स्वभाव में, समभाव में स्थिर होना सामायिक है। राग-द्वेष रहित आत्मा के क्रियानुष्ठान को 'सामायिक चारित्र' कहते हैं। सर्व-सावद्य व्यापार का त्याग करना एवं निरवद्य व्यापार का सेवन करना 'सामायिक चारित्र' है। संयम ग्रहण करने पर साधक को सर्वप्रथम सामायिक चारित्र ही ग्रहण कराया जाता है। सामायिक चारित्र के दो भेद हैं-

(क) इत्वरिक-अल्प समय के लिए सामायिक चारित्र ग्रहण करना इत्वरिक सामायिक चारित्र है। पहले और अन्तिम तीर्थङ्कर के शासन काल में यह चारित्र होता है। इसका काल जघन्य सात दिन, मध्यम 4 महीने व उत्कृष्ट 6 माह होता है।

(ख) यावत्कथिक-यावज्जीवन की सामायिक को यावत्कथिक सामायिक चारित्र कहते हैं। अर्थात् जीवन पर्यन्त के लिए सामायिक चारित्र ग्रहण करना। यह चारित्र भरत-ऐरवत क्षेत्र में मध्य के 22 तीर्थङ्करों के शासन काल तथा महाविदेह क्षेत्र में पाया जाता है।

2. छेदोपस्थापनीय चारित्र-महाव्रतों में कोई दोष लगने पर अथवा बड़ी दीक्षा दिलाने पर पुन: महाव्रतों में आरोपित करना 'छेदोपस्थापनीय चारित्र' है। इसमें पूर्व की दीक्षा पर्याय का छेदन कर पुन:

महाव्रतों में उपस्थापन किया जाता है। यह चारित्र प्रथम और अन्तिम तीर्थङ्कर के शासन काल में होता है। इसके भी दो भेद हैं–

(अ) सातिचार–मूल गुणों का घात होने पर, अत्यधिक दोष लगने पर प्रायश्चित्त स्वरूप दीक्षा पर्याय में कमी करना अथवा नवीन दीक्षा देना (पुरानी दीक्षा पर्याय का छेदन करके) 'सातिचार छेदोपस्थापनीय चारित्र' कहलाता है।

(ब) निरतिचार–छोटी दीक्षा वालों को जघन्य सात दिन, मध्यम 4 माह, उत्कृष्ट 6 माह बाद बड़ी दीक्षा देना 'निरतिचार छेदोपस्थापनीय चारित्र' है। पूर्व तीर्थङ्कर के शासनवर्ती साधु-साध्वी को भी वर्तमान तीर्थङ्कर के शासन में आने पर उन्हें इस छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरोपित किया जाता है।

3. परिहारविशुद्धि चारित्र–यह चारित्र कर्मो का विशेष रूप से परिहार करने, अलग हटाने तथा आत्मा को शुद्ध बनाने की प्रक्रिया विशेष है। नौ मुनि इस चारित्र की एक साथ आराधना करते हैं। चार साधु छः मास तक तप करते हैं। चार साधु उनकी सेवा करते हैं तथा एक वाचनाचार्य होता है, जिसे आठों साधु वन्दना करते हैं। प्रथम छः माह बाद सेवा करने वाले 4 साधु तप करते हैं तथा तप करने वाले सेवा करते हैं, किन्तु वाचनाचार्य वही रहता है। फिर 12 माह बाद वाचनाचार्य 6 माह तक तप करता है। शेष आठ में से सात उनकी सेवा करते हैं। तथा एक वाचनाचार्य बनता हैं। इस प्रकार कुल 18 माह तक यह क्रम चलता है।

तप करने वाले गर्मी में-जघन्य उपवास, मध्यम बेला व उत्कृष्ट तेला, सर्दी में-जघन्य बेला, मध्यम तेला, उत्कृष्ट चौला तथा चातुर्मास में-जघन्य तेला, मध्यम चौला, उत्कृष्ट पचौला (पाँच उपवास) कर पारणा आयम्बिल से करते हैं। वाचनाचार्य व वैयावृत्य करने वाले नित्य भोजी भी हो सकते हैं। किन्तु इनका भोजन भी आयम्बिल युक्त होता है।

जो साधु जघन्य नौ पूर्व की तीसरी आचार वत्थु के ज्ञाता हो, कम से कम 20 वर्ष की दीक्षा पर्याय हो तथा आयु 29 वर्ष से कम न हो, वे ही इस चारित्र का पालन कर सकते हैं। यह चारित्र तीर्थङ्कर प्रभु के पास अथवा जिसने छेदोपस्थापनीय चारित्र की आराधना कर रखी है, उनके सान्निध्य में अंगीकार किया जा सकता है।

4. सूक्ष्म सम्पराय चारित्र–जिन अणगारों में बादर कषाय का उदय बिल्कुल भी नहीं रहता तथा सूक्ष्म कषाय में भी मात्र संज्वलन लोभ कषाय का ही उदय शेष बचता हो, उन महापुरुषों के चारित्र को 'सूक्ष्म संपराय चारित्र' कहते हैं। इस चारित्र के धारक दो श्रेणि वाले होते हैं। 1. उपशम श्रेणि वाले और 2. क्षपक श्रेणि वाले। यदि उपशम श्रेणि वाले हैं तो वे दशवें से ग्यारहवें गुणस्थान में जाते हैं तथा क्षपक श्रेणि वाले दसवें से सीधे बारहवें गुणस्थान में जाते हैं।

5. यथाख्यात चारित्र–राग-द्वेष, कषाय, मोह आदि के उदय से पूर्णतः मुक्त होकर तीर्थङ्कर भगवन्तों द्वारा जो शुद्ध चारित्र का स्वरूप प्रतिपादित किया गया है, उसे उसी रूप में आराधन करना, पालना 'यथाख्यात चारित्र' कहलाता है। इस चारित्र के प्रमुख दो भेद इस प्रकार हैं–

(क) उपशान्तकषाय वीतरागी–जिन्होंने सम्पूर्ण मोहनीय सर्वथा कर्म का उपशम कर दिया है, तथा किसी भी प्रकार के मोह का उदय नहीं है ऐसे ग्यारहवें गुणस्थानवर्ती साधु 'उपशान्त कषाय वीतरागी' कहलाते हैं।

(ख) क्षीणकषाय वीतरागी–जिन्होंने मोहनीय कर्म का सम्पूर्ण क्षय कर दिया है ऐसे बारहवें, तेरहवें और चौदहवें गुणस्थानवर्ती साधु 'क्षीणकषाय वीतरागी' कहलाते हैं।

भरत क्षेत्र में वर्तमान समय में सामायिक व छेदोपस्थापनीय ये दो चारित्र ही पाये जाते हैं। शेष तीन नहीं पाये जाते।

प्र. सच्चा श्रावक किसे कहते हैं?

उत्तर–सच्चे श्रावक के लक्षण निम्नानुसार है–

(1) देव, गुरु एवं धर्म के प्रति श्रद्धा।

(2) सप्त कुव्यसनों का त्याग।

(3) बारह व्रतों का पालन।

(4) छह आवश्यक का दैनिक उपयोग,

(5) दान, शील, तप और भावना का पालन।

(6) व्यसनमुक्त एवं शाकाहारी जीवन।

10 Characteristices of positive people

Sh. Shrikant Gupta

Those who have tried to improve themselves as well as their knowledge, know very well, how life is easier to live as they exercise positives thinking. But not many people know how to train themselves to let positive thinking dominate their minds. So let us first find out some characteristics of positive thinking people, then we can start to follow suit.

1. *They see problems as challenges.*
   This in contrast to the way some people see problems as ordeals too great to bear as to make their lives most miserable.
2. *They enjoy their lives.*
   Positive thinking makes people light heartedly accept whatever conditions their lives are in, but it doesn't necessarily mean they stop trying to better their lives.
3. *They always open their minds to welcome ideas and suggestions.*
   By doing so, they have the chance to get something new that might enable the betterment of many things in life.
4. *They immediately expel any engative thought as soon as in crosses their minds.*
   Keeping any negative thought longer many as well be waking up a sleeping tiger. It actually in indifferent but potential to bring about troubles.
5. *They count their blessing.*
   They don't complain about not having or getting what they want.
6. *They don't listen to gossips.*
   There's no doubt that gossips are closely related to negative thought so positive thinkers never let themselves come into listening to aimless and meaningless talks.
7. *They don't make excuses but act straightaway.*
   You likely heard how the abbreviation of NATO is jokingly said to represent ; No Action Talk Only. Clearly positive thinkers are not its followers.
8. *They apply positive way of speaking.*
   They use sentences with optimistic tone, like : "this problem will surely be solves soon" and "you are quite talented,no doubt"
9. *They carry positive boday language.*
   Namely : smiling face, steady strides, expressive gestures, convincing nods etc.
10. *They care about their self image.*
    They take care of their good appearances, outwardly and inwardly as well.

ISSN 2249-2011

बाल-स्तम्भ

अमरत्व की खोज में थावच्चापुत्र

मुनिश्री राजेन्द्रकुमार

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 फरवरी, 2020 तक **जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.)** के पते पर प्रेषित करें। **उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें।** श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

हर्म्य के वातायन में बैठा हुआ श्रेष्ठिपुत्र थावच्चा खुले आकाश में निहार रहा था। उसका अबोध मानस जगत् की विचित्रता से बिल्कुल अनभिज्ञ था। यह रंग-बिरंगी दुनिया उसके लिए सुख स्वप्न और नया-नया सा अनुभव देने वाली थी। अभी तक उसने इस स्वप्निल संसार में कल्पना की पंखों पर ही बड़ी-बड़ी उड़ानें भरी थी। यथार्थता और वास्तविकता क्या है, न कभी उसने जाना और न ही उसे समझा। उसकी बाल-सुलभ क्रीड़ाएँ और भोली-भाली आकृति सत्य को जानने-परखने के लिए लालायित थी तो अर्धस्खलित और तोतली भाषा सत्य की पिपासु थी। प्रकृति के वातावरण को देखता हुआ कभी वह नीले आकाश की नीलिमा को देखने में अनुरक्त हो जाता तो कभी मथुरा के विशाल जनपथ को देखने के लिए मचल उठता। गगनचुम्बी अट्टालिकाएँ और उनको मण्डित करने वाली सहस्रांशु की सुनहली किरणें, बड़ी-बड़ी पुण्यशालाएँ, सज्जित चौड़े-चौड़े बाजार और उनमें बिकने वाली नानाविध वस्तुएँ तथा राजपथ से गुजरने वाले राहगीर थावच्चा के नयनों को कौतूहल से भर रहे थे। प्रकृति के इस सहज दर्शन से उसका अन्तर्मानस बरबस झंकृत हो उठा, सौम्य वदन पर प्रफुल्लता खिल उठी और मानो कोई उसे स्वर्गीय आनन्द मिल गया। पर कुमार इस आनन्द से अधिक समय तक तृप्त नहीं रह सका। सहसा उसका मानस कर्णयुगल में प्रतिध्वनित होने वाले शब्दों में उलझ गया। उलझना स्वाभाविक भी था। कुमार ने उन शब्दों को जीवन में प्रथम बार ही सुना और प्रथम बार ही अनुभव किया था। वे शब्द न जाने कितने श्रुतिपुटसुखद, मन को बहलाने वाले, माधुर्यरस से परिपूर्ण, सुरीले कण्ठों से गेयमान और अमृतरस को बिखेरने वाले थे। बालक की हृद्तन्त्री सहसा उन शब्दों से झंकृत हो उठी। अन्तःकरण जिज्ञासा से भर गया। वह अबोधमना समझ नहीं सका कि आखिर यह है क्या? इन्हें क्यों गाया जा रहा है? कुमार समाधान पाने के लिए महल से नीचे उतरा और माँ से लिपटते हुए पूछा- ''माँ! आज ये गीत किसके घर गाए जा रहे हैं, क्यों गाए जा रहे हैं? मैंने तो कभी इन्हें सुना ही नहीं।'' माँ ने थावच्चा पुत्र को सहलाते हुए कहा-''वत्स! तू अभी तक अज्ञ है, जानता नहीं; सुने भी तो कैसे सुने, यही तो तेरा अवसर आया है। देख, बेटे! आज अपने पड़ोसी के पुत्ररत्न का जन्म हुआ है। उसकी खुशी में ही सुहागिन रमणियाँ इन सुमधुर गीतों को गा रही हैं।'फ

'तो फिर माँ! मेरे जन्म के समय भी ऐसे गीत गाए गए होंगे?' ''बेटे! तुम्हारी तो बात ही क्या? न जाने इन गीतों से कितने अधिक मधुर और चित्त को लुभाने वाले गीत गाए गए थे। मेरे लाडले के लिए कितने उत्सव किए गए थे और कितने व्यक्तियों को तेरी खुशी में प्रीतिभोज दिया गया था। पुत्र! सभी के जन्म के समय कुछ-न-कुछ ऐसा किया ही जाता है।'' कुमार की अन्तर्जिज्ञासा

माँ के ममतामय वचनों को पाकर समाहित हो गई और पुनः वह मंगल गीतों की मंगल धुन में तल्लीन बन गया।

कुछ समय बीता। सहसा एक उल्कापात हुआ। सुकोमल कमलवन आकस्मिक तुषारापात से दग्ध हो गया। मंगलमय वातावरण में अमंगल का स्वर गूञ्ज उठा। सहसा वह नवजात शिशु सदा-सदा के लिए कालकवलित हो गया। माँ की भरी-भरी गोद पुत्र के अभाव में सूनी-सूनी सी हो गई। भविष्य के लिए सुन्दर-सुन्दर संजोई हुई कल्पनाओं का महल एक साथ ढह गया। चारों ओर हाहाकार। कुटुम्बियों का करुण विलाप। मृदुल अन्तःकरण को संतप्त करने वाला मानसिक संताप। कुमार थावच्चा का मानस हृदयद्रावक और मर्मभेदी शब्दों से बिंधा जा रहा था। उन कर्णकटुक शब्दों से उसका मानस टूक-टूक हो रहा था। चित्त में विचित्र प्रकार की घुटन तथा उत्पीड़न का अनुभव हो रहा था। इस आकस्मिक परिवर्तन के रहस्य को वह नहीं समझ सका। समझे भी तो कैसे? आखिर था तो अबोध, अनभिज्ञ और दुनिया के वातावरण से कोसों दूर। पुनः वह दौड़ा-दौड़ा माँ के पास आया और सहमते स्वर में आश्चर्य बिखेरता हुआ बोला-माँ! अभी-अभी कुछ समय पूर्व मैंने जिन गीतों को सुना था, वे कहाँ चले गए? असमय में ऐसे असुहावने गीत! मन करता है कि इन्हें सुनूँ ही नहीं। क्या माँ! इनको गाने वाला कोई दूसरा है?

पुत्र को वत्सलता से चूमते हुए माँ ने कहा- वत्स! ये गीत नहीं, अपितु रुदन के स्वर हैं। जीवन की लीला बड़ी विचित्र है। देवयोग से जिस शिशु का अभी-अभी कुछ समय पूर्व जन्म हुआ था, उसी को इस क्रूर मृत्यु ने उठा लिया है। पुत्र! गाने वाला कोई दूसरा नहीं है। जिस पुत्र की खुशी में जो कौटुम्बिकजन इतना अधिक आनन्दोत्सव मना रहे थे, वे ही अब उसके शोक में विलाप कर रहे हैं।

शिशु बोला-ओह! अभी जन्मा और अभी मर गया।

'बेटे! इसमें किसी का वश नहीं चलता। जिसका संयोग होता है, निश्चित ही एक दिन उसका वियोग भी होता है।'

'तो क्या माँ! मैं भी मरूँगा?'

'पुत्र! अनिवार्यता को टाला नहीं जा सकता, फिर इसमें तू और मैं बचेंगे ही कहाँ? बेटा! जन्म और मरण जीवन के दो शाश्वत बिन्दु हैं। एक आदि बिन्दु है तो दूसरा अन्तिम बिन्दु। संसार में परिभ्रमण करने वाला प्रत्येक प्राणी इन दोनों बिन्दुओं का स्पर्श करता है। उसका सारा जीवन इन्हीं दो तटों के बीच प्रवाहित रहता है, फिर इससे छुटकारा पाना कैसे संभव हो सकता है?

पुत्र का मन मृत्यु के भय से उद्विग्न हो गया। वह कातरदृष्टि से माँ की ओर निहारता हुआ अकुलाहट का अनुभव कर रहा था। उसने मन ही मन सोचा- क्या सचमुच मुझे भी मरना पड़ेगा? क्या वास्तव में यह सत्य है? क्या यह संसार ऐसा दारुण है, जहाँ कोई भी सुख नहीं? क्या यह जीवन चिरकाल तक जन्म-मरण और जरा से परिक्लान्त होता रहेगा? क्या इस दुःख से उबरने का कोई उपाय भी है या यूँ ही इस संसार में परिभ्रमण करता रहूँगा? नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। मुझे कोई न कोई उपाय ढूँढना ही होगा। माँ का कथन बार-बार उसके कोमल हृदय को झकझोर रहा था और मन की टीस अपाय में से उपाय खोजने का प्रयत्न कर रही थी। अन्ततः निरुपाय सत्यजिज्ञासु बालक ने समाधान की भाषा में माँ से पुनः पूछ ही लिया-'माँ! यह संसार की परम्परा क्या सबके लिए समान है? क्या कोई अपवाद भी है? वत्स! सबके लिए एक ही नियम है और एक ही परम्परा है। कोई भी उससे वञ्चित नहीं है। यदि कोई अपवाद है तो वे हैं भगवान अरिष्टनेमि। उन्होंने जन्म-मृत्यु की परम्परा को विच्छिन्न कर दिया है। वे वीतराग, सर्वज्ञ और महाश्रमण हैं। वे ही दुःख मिटाने में सक्षम हैं। उनकी शरण लेने वाला सब दुःखों से त्राण पा सकता है। उनकी शरण लेने वाला जातिपथ के परिभ्रमण से मुक्त हो सकता है और उनकी शरण लेने वाला जन्म-मरण के चक्रव्यूह को भेदकर अपने आपको वीतराग की परम्परा में अवस्थित कर सकता है।

एकाएक थावच्चा पुत्र माँ के मुख से समाधान

पाकर पुलकित हो उठा। उसका सुप्त मानव अमरत्व के उपाय को जानकर प्रबोधित हो उठा। अब उसकी अन्तश्चेतना आशा की नई किरण से भविष्य की सुखद कल्पनाओं में तैर रही थी। वह महामना भगवान अरिष्टनेमि की शरण पाने को अधीर, उत्कण्ठित और प्रतीक्षारत था। एक दिन वह भी स्वर्णिम अवसर आया जब कुमार थावच्चा अर्हत् अरिष्टनेमि के समवसरण में चला गया। कुमार से महाश्रमण बन गया और त्याग तपोबल से अपने-आपको भावित कर साधना के उस सर्वोच्च शिखर तक पहुँच गया, जहाँ जाने पर न कोई रोग होता है और न कोई शोक, न कोई बड़ा होता है और न कोई छोटा, न जन्म होता है और न मृत्यु। वह सिद्ध-बुद्ध और मुक्त हो गया। - *'शान्तसुधारस' पुस्तक से साभार*

प्र. 1. थावच्चा पुत्र के कौतूहल के क्या कारण थे?

प्र. 2. थावच्चा पुत्र के अन्त:करण में कौन-सी जिज्ञासा उत्पन्न हुई?

प्र. 3. ''जिसका संयोग होता है निश्चित ही एक दिन उसका वियोग भी होता है।'' कहानी के सन्दर्भ में पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

प्र. 4. शब्दार्थ लिखिए-अट्टालिकाएँ, कौटुम्बिकजन, हृदयद्रावक, अनभिज्ञ, प्रबोधित।

प्र. 5. प्रस्तुत कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

प्र. 6. थावच्चा पुत्र ने अपनी समस्या का क्या समाधान पाया?

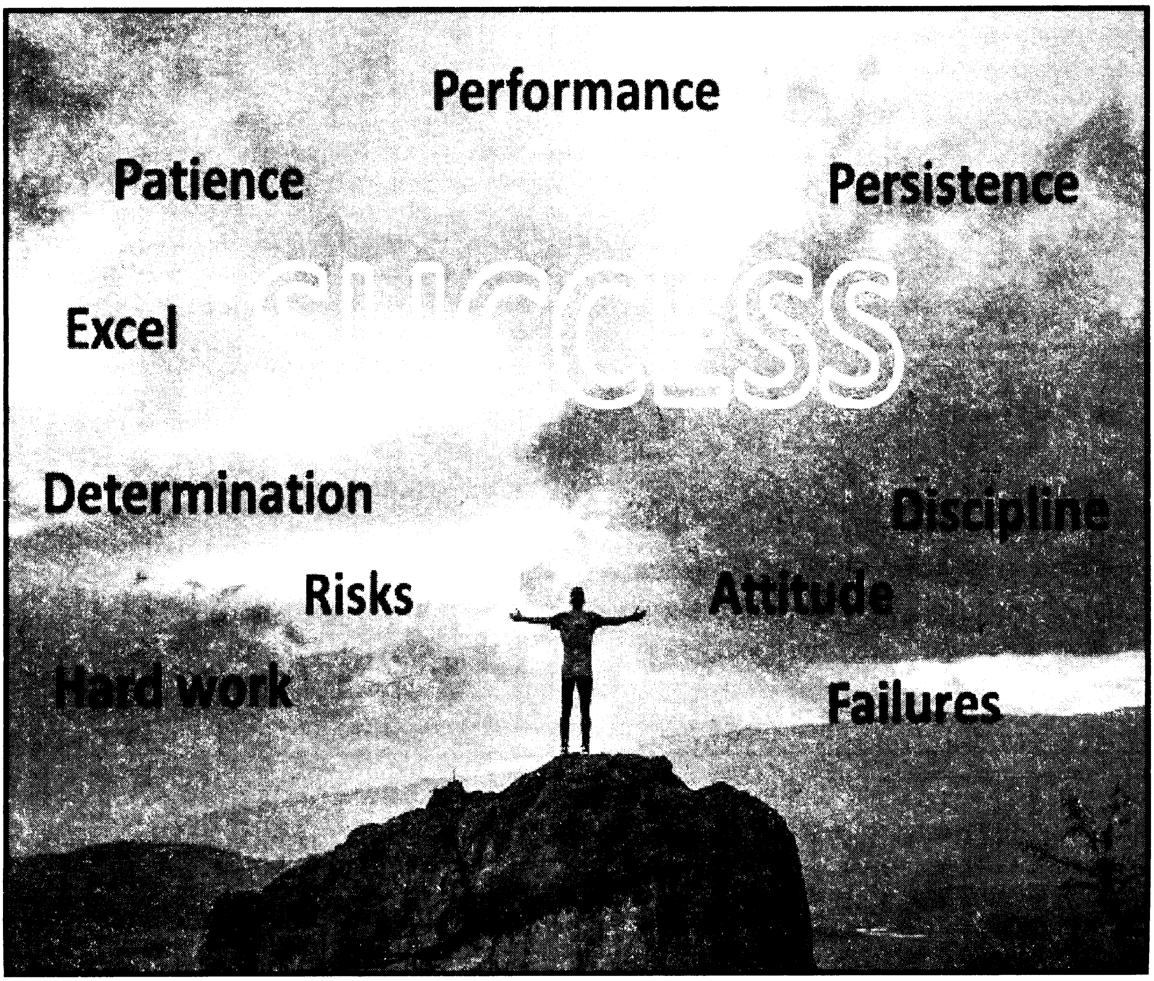

बाल-स्तम्भ [दिसम्बर-2019] का परिणाम

जिनवाणी के दिसम्बर-2019 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'आदर्श प्रधानाध्यापक' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	सुदर्शन जैन-चौथ का बरवाड़ा, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	24
द्वितीय पुरस्कार-300/-	अंशुल कचोलिया-बेंगलूरू (कर्नाटक)	23.5
तृतीय पुरस्कार- 200/-	चेतन कुमार जैन-अलीगढ़-रामपुरा (राजस्थान)	23
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	अरिन चोरड़िया,-जयपुर (राजस्थान)	22.5
	हिमांशु जैन-आवर, झालावाड़ (राजस्थान)	22.5
	दीपांशु जैन-जयपुर (राजस्थान)	22.5
	मनीष जैन-बजरिया, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	22
	सुजल जैन-आदर्शनगर, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	22

बाल-जिनवाणी जनवरी, 2020 के अंक से प्रश्न

प्र. 1. 'निकृष्ट कर्म' कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

प्र. 2. आप अपने जन्मदिवस को कैसे विशेष बना सकते हैं?

प्र. 3. अहंकार को आत्मगुणों का घातक क्यों कहा है?

प्र. 4. स्वविवेक से एक धार्मिक पहाड़ा तैयार कीजिए।

प्र. 5. मजदूर हमारे जीवन को कैसे खुशहाल बनाते हैं?

प्र. 6. What is life? Explain.

प्र. 7. भंग किसे कहते हैं? अंक 22 के भंग लिखिए।

प्र. 8. What message is given through Namaskāra Mantra?

प्र. 9. सच्चा जैन श्रावक किसे कहा गया है और क्यों?

प्र. 10. दिये गये शब्दों से हिन्दी भाषा के अनुसार प्रत्यय अलग कीजिए-सामायिक, जरूरतमन्द, सांसारिक, दीक्षित।

बाल-जिनवाणी [नवम्बर-2019] का परिणाम

जिनवाणी के नवम्बर-2019 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	सौम्य जैन-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	38
द्वितीय पुरस्कार-400/-	अभिषेक पारलेचा-जोधपुर (राजस्थान)	37.5
तृतीय पुरस्कार- 300/-	सुहानी सुराणा-अजमेर (राजस्थान)	37
सान्त्वना पुरस्कार (3)- 200/-	नमिता जैन-मसूदा, अजमेर (राजस्थान)	36.5
	कुणाल भरगतिया-जयपुर (राजस्थान)	36.5
	विशाल सिंघवी-जोधपुर (राजस्थान)	36

बाल पाठक ध्यान दें

प्रतियोगिताओं में स्थान प्राप्त करने वालों को पुरस्कार राशि अब उनके बैंक खाते में भेजी जाएगी। जिन बच्चों का बैंक खाता नहीं है, वे अपने माता या पिता के बैंक खाता नं. भेज सकते हैं। अतः अब आप अपने उत्तर पत्रों में नाम व पते के साथ खाताधारक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस.सी. कोड जरूर लिखें।

-सम्पादक

(पृष्ठ 41 का शेषांश)

किया, आपका लोभ गया। आपके मन में विनय भाव आया तो अहंकार चला गया। क्षमा आई क्रोध गया। सरलता आई तो मायाचार गया। फल बाद में नहीं तुरन्त मिलता है।'' (मान व्याख्यान माला से साभार) आपने अपने साधना-काल में जीवन के सूत्र जीये तथा जन-मानस को भी बड़े ही सरल एवं सहज रूप से दिये। पात्रता हमें दिखानी है क्योंकि उन्होंने तो अपने जीवन में जीकर हमें दिखा दिया, अब हमारी बारी है उसे अनुभव करने की।

यदि साधक सच्ची सामायिक की साधना कर लेगा तो कम सुख को प्राप्त कर लेगा और यही सन्देश उनका पूरा समर्पित जीवन हमें दे रहा है। आपको यह ध्यान रहे कि उन्होंने कदाचित् ऐसा अपने गुरु के प्रति अपनी श्रद्धा स्वरूप ही किया होगा, क्योंकि उनके गुरु पूज्य भगवन्त आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का जीवन 'सामायिक-स्वाध्याय' की जीवन्त प्रेरणा कर रहा है। उन्होंने अपने शान्त, प्रसन्न, प्रभावकारी, मृदु एवं सरल जीवन द्वारा हम सभी को दिखा दिया कि सच्ची सामायिक से यह सब प्राप्त किया जा सकता है।

हम सभी उनके सन्देश को समझें, जीवन-निर्माण करें तथा आचार्यप्रवर की दीक्षा शती में जैसा कि पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का संकेत है पूर्ण शुद्ध, सामायिक एवं प्रतिक्रमण की साधना आराधना द्वारा प्रभु महावीर के सच्चे अनुयायी बनें। उपाध्याय भगवन्त को यही सच्ची श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें।

-अध्यक्ष, अ.भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

मोक्ष मार्ग का भाता

स्वयं के लिए चाहोगे साता, खोलोगे दुःख का खाता,
अन्यों लिए चाहोगे साता, पाओगे मोक्षमार्ग का भाता।

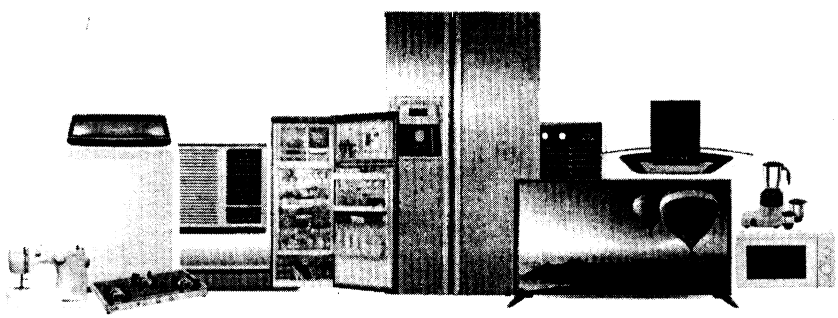

VIRAAT The Digital Hub
Electronics Retail Chain Store

& POOJA MARKETING
Wholesaler of Electronics Home Appliances.

OUR BRANCHES

HOSHANGABAD ROAD
Surendra Land Mark, Block B, Bhopal

KOH-E-FIZA
A-9, Main Road, Bhopal

SEHORE
163, Khajanchi Line

Tel No. 0755-429901 Mob : 9826024431, 9039911108

घेवर चन्द प्रेम चन्द नाहर एवं समस्त नाहर परिवार भोपाल

अहंकार के वृक्ष पर
विनाश के फल लगतें हैं।

ओसवाल मेट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

विवाहोत्सुक युवा/युवती
तथा पुनर्विवाह उत्सुक उम्मीद्वारों की
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी
यहाँ उपलब्ध है।

ओसवाल मित्र मंडल मेट्रीमोनियल सेंटर

४७, रत्नज्योत इंडस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

फोन : **022 2628 7187**

ई-मेल : **oswalmatrimony@gmail.com**

सुबह १०.३० से सायं ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)

जय गुरु हस्ती ||GURUDEV|| जय गुरु हीरा–मान

गुरु हस्ती के दो फरमान
सामायिक स्वाध्याय महान

गुरु हीरा का यह सन्देश
व्यसन मुक्त हो देश विदेश

UDAY GROUP

UDAY INDUSTRIES CHENNAI PVT. LTD.

IMPORT & EXPORT AND DEALERS OF IRON & STEEL
LONG & FLAT PRODUCTS

UDAY CONSULTS LLP

OVERSEAS AND DOMESTIC MANPOWER RECRUITMENT
AND
FACILITY MANAGEMENT

CONNECTING BRIGHT TALENT WITH THE RIGHT COMPANY

STEEL | LOGISTICS | MANPOWER

WITH BEST COMPLIMENTS from:
G R SURANA & RAJESH SURANA
No.10&11, Jawaharlal Nehru Road,
Koyambedu, Chennai - 600 107.
Mobile No: 9940566666, Contact No: 044-24797675
Website: www.udaygroup.net
Mail Id: industries@udaygroup.net

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

वीतराग देव, निर्ग्रन्थ गुरु एवं दयामय धर्म के प्रति श्रद्धा रखने वाले सभी स्वधर्मी है फिर चाहे वे गरीब हों या अमीर, उनकी सहायता करना धर्म की आराधना है।

- आचार्य हीरा

BAGHMAR TOWER
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

 # 218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla, Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhmal Sampathraj Rajan Abhishek, Rohith, Saurabh, Akhilesh, Jiyansh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

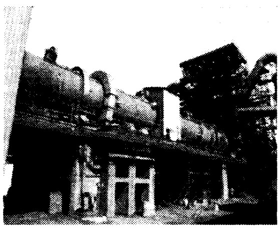
DRI Plant

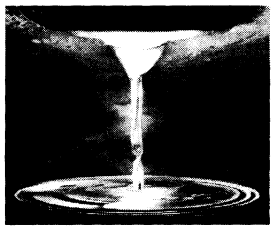
Electric Arc Furnace

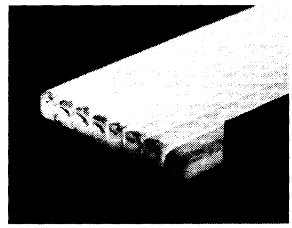
Billets

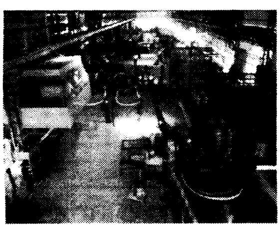
Rolling Mill

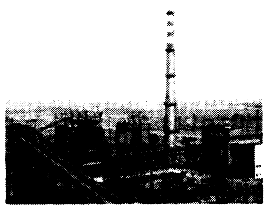
Captive Power Plant

Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नम: ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिश: वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

गजेन्द्र निधि

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम......

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. **We Have Launched Membership Plans For Donors.**

We Have Launched Membership Plans For Donors

MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR)

SILVER MEMBER	GOLD MEMBER	PLATINUM MEMBER
RS.50000	RS.75000	RS.100000

DIAMOND MEMBER	KOHINOOR MEMBER
RS.200000	RS.500000

Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/c Details is as follows - Bank Name & Address - AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund IFSC Code - UTIB0000168

A/c No. 168010100120722 PAN No. - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनाये रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया,ऐसे संघनिष्ठ,श्रेष्ठीवर्यों एवं अर्थ सहयोग एकत्रित करने करने वालों के नाम की सूची –

KOHINOOR MEMBER (RS.500000)

श्रीमान् मोफतराज सा मुणोत, मुम्बई।
श्रीमान् राजीव सा नीता जी डागा, ह्यूस्टन।
युवारत्न श्री हरीश सा कवाड़, चैन्नई।

SILVER MEMBER (RS.50000)

श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई।
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई।
श्रीमति गुप्त सहयोगी, चैन्नई।
श्रीमान महावीर सोहनलालजी बोथरा,जलगांव (भोपालगढ़)
श्रीमान सोहनराज जी बाघमार, कोयम्बटूर।

PLATINUM MEMBER (RS.100000)

श्रीमान् धूलीचंद बाघमार एण्ड संस,चैन्नई।
श्रीमान् दलीचंद सा सुरेश सा कवाड़, पूनामल्लई।
श्रीमान् राजेश सा विमल सा पवन सा बोहरा, चैन्नई।
श्रीमान् प्रेम सा कवाड़,चैन्नई।
श्रीमान् अम्बालाल सा बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई।
श्रीमान् सम्पतराज सा राजकंवर जी भंडारी, ट्रिपलीकेन-चैन्नई।

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें– M.Harish Kavad - No.5,Car Street,Poonamallee,CHENNAI-56

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें– मनीष जैन, चैन्नई (+91 95430 68382)

‘छोटा सा चिन्तन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का’

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

।। जैनं जयति शासनम्।।

With Best Compliments from:

Dharamchand Paraschand Exports
Paras Chand Hirawat
CC 3011-3012, Bandra Kurla Complex, Bandra (E),
Mumbai-400 098 (MH)
Tel. : +91 22 4018 5000
Email : dpe90@hotmail.com

KANTIL AL SHANTILAL RAJENDRA LUNKER
PACHPADRA-PALI-ERODE
Dhruvi Mill India
'Sanskar', 177-B, Adarsh Nagar, Pali-306401 (Raj.)
Mobile : 094141-22757
135, N.M.S. Compound, ERODE-638001 (T.N.)
Tel. : 3205500 (O), Mobile : 093600-25001

Basant Jain & Associates, C.A.
BKJ & Associates, C.A.
BKJ Consulting Pvt. Ltd.,
Megha Properties Pvt. Ltd.
Ambition Properties Pvt.Ltd.
बसंत के जैन
अध्यक्षः श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट
601, Dalamal Chambers, New Marine Lines,
Mumbai - 400020 (MH)
Ph. : 022-22018793, 22018794 (o), 022-28810702

NARENDRA HIRAWAT & CO.
N.H. Studios **Launches** **N.H. Jewells**
A-1502, Floor-15th, Plot-FP616(PT), Naman Midtown, Senapati Bapat Marg,
Near Indiabulls, Elphinstone (W), Mumbai-400013 (MH)
Web. www.nhstudioz.tv, Tel. : 022-24370713

JVS
PURITY

JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :

NUTRITION FOODS

BREAKFAST CEREALS

FORTIFIED RICE KERNELS

WHOLE & BLENDED SPICES

VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

Special Foods for undernourished Children
Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes

With Best Wishes :

JVS Foods Pvt. Ltd.

G-220, Sitapura Ind. Area,
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)
Tel.: 0141-2770294
Email-jvsfoods@yahoo.com
Website-www.jvsfoods.com
FSSAI LIC. No. 10012013000138

CERTIFIED ISO 22000 CERTIFIED

Food Safety System Certification 22000

KALPA-TARU

WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T FORCE YOU TO CHOOSE. BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

022 3064 3065

ARTIST'S IMPRESSION

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT
IMMENSA
THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office**:101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | Tel: +91 22 3064 5000 | Fax: +91 22 3064 3131 | **Email**: sales@kalpataru.com | **Website**: www.kalpataru.com

In association with HDFC PROPERTY FUND

This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

(आ. स. 6700)
श्री मन्त्री महोदय
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, **कोबा–382007,**
जिला–गाँधीनगर (गुजरात)

If undelivered, Please return to

Samyaggyan Pracharak Mandal
Above Shop No. 182,
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन